टपरी to Tranquility

तरुन Sharma

A Journey Through Childhood, Chaos,
चाय, *Celestlight & the Call of the Mountains*

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Tarun Sharma 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-197-2

Cover design: Yash Singhal
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: September 2025

From the Author's Pen

Dear Reader,

Welcome to **"टपरी to Tranquility",** a journey etched in memory, brewed in emotion, and stirred with the aroma of **"चाय"** (Tea) and change. This is not merely a compilation of stories; it is a tapestry woven from the threads of nostalgia, chaos, companionship, and quietude. It is about the essence of life captured in fleeting moments, sometimes hilarious, sometimes tender, sometime emotional, always true.

The word **"टपरी"** in this title is deliberate and dear, symbolic of countless cups of **"चाय"** (Tea) shared under humble tin roofs of **"टपरी"** in Himachal Pradesh, where laughter echoed, ideas bloomed, and friendships deepened. From those modest beginnings to the serene peaks of self-reflection, this book traces a heartfelt passage, from noise to stillness, from growing up to growing within.

The seed for this book was sown in me about 6 years ago, getting inspired from **Mr. Lalit Sharma's** posts on Facebook, 3 years my senior at **Kendriya Vidyalaya, JNU, New Delhi**. His thoughtful reflections lit the spark that would become these pages. Some of the pieces you'll read were inspired, some in major part & some in minor part, by his original musings, which I have respectfully adapted with gratitude.

The thought of bringing this book to life was sparked by **Mr. Amit Kasaria, Lt. Col. Ashwani Bhardwaj, and Mr. Sanjeev Dogra**, my cherished childhood buddies, along with a few other near and dear ones who believed that these words deserved to find their way to paper. To my surprise and delight, **Mr. Amit Kasaria**, a Producer and Director in the Bollywood film industry, recently handpicked the best of my write-ups that I had shared with him over the past six years. These selections have come together to form this book. To all of them, I offer my sincerest thanks.

These write-ups, fragments of my life, thoughts, and humour, are deeply personal, yet I believe they will resonate with those who grew up in the vibrant decades of the **1960s, 1970s, or 1980s**. If you have ever smiled at an old radio jingle, chased a kite on a dusty terrace, or shared a secret with a childhood friend, then you will find yourself somewhere in these pages. I've followed a principle I call **"Contextual Clarity through Conceptual Similarity"**, crafting each piece to evoke shared memories through the lens of lived experiences.

This collection is a blend, some anecdotes are light-hearted and laugh-out-loud hilarious, while others are emotionally stirring and soulfully silent. It is a humble attempt to bottle time, to revisit not just what we did, but how we felt.

Although life has given me enough stories to fill volumes, **Mr. Amit Kasaria** have chosen only the most poignant, meaningful, and cherished ones for this book. Whether this turns out to be my only published work or the first of many, this book holds my heart.

I extend my heartfelt gratitude to all the precious souls who have walked beside me on this journey, my **Mummy & Papa, Naniji & Nanaji, my wife & children, my sister, my late younger brother**, **my extended family i.e. my close-knit relatives, friends, and well-wishers**. Each of you has added colour and character to the mosaic of my life. This book is as much yours as it is mine.

With warmth, humility, and endless gratitude,

तरुन Sharma

क्या & Where

परिवार & Family 1

भाई & Friends 43

शरारतें & Childhood 58

घुमक्कड़ी & Trekking 84

सहानुभूति & Society 122

पहाड़ & Tea 129

हिमाचल & Food 156

दिल & Poetry 175

अतिरिक्त & Extras 184

परिवार & Family

मेरे बचपन के वो सुनहरे Weekend नानाजी और नानीजी के साथ!

मैं जब छोटा था, तब मेरे नानाजी और नानीजी Sawhney Sugar Mills के स्टाफ Quarters में रहते थे, जो कनॉट प्लेस (Connaught Place) में ही थे, Bank of Baroda बिलडिंग के पीछे...जी हाँ, वही CP जहाँ आजकल लोग फोटोशूट करवाते हैं, वहां मैनें सुनहरे और यादगार Weekend बिताए ही नहीं, भरपूर जिये हैं, 1978 तक। 😎

मेरे KV NCERT Primary स्कूल के Weekend Holiday जैसे ही शुरू होते, नानाजी बड़े प्यार से मुझे NCERT कैम्पस से लेने आते CP अपने घर ले जाने के लिए। फिर शुरू होती मेरी सबसे प्यारी और रोमांचक Journey, 2 दिनों की। 🤩

मुझे तब क्या पता था कि ये छोटे-छोटे पल मेरी जिंदगी में इतनी बड़ी जगह बना लेंगें, जिन्हें मैं एक वक्त याद करके Nostalgic महसूस करूंगा, जैसे ज़िंदगी के इस Phase में। 🤔

Saturday और Sunday की सुबह, जब मेरी उम्र के बाकी बच्चे मजे से सो सो रहे होते थे, मैं नींद में आँखें मलते हुए 04:30 पर नानाजी और

नानीजी के साथ Shiv Mandir की ओर निकल पड़ता था, जो CP में बाबा खड़गसिंह मार्ग पर है, हनुमानजी मंदिर के साथ, लेकिन वहाँ की शांति और आध्यात्मिकता ऐसी थी कि लगता जैसे किसी और ही दुनिया में आ गए हों, जो अब महसूस होता है। 🕉

और सच कहूं तो 4:30 AM पर मंदिर जाना मेरे लिए कोई Task नहीं, एक Adventure जैसा होता था। मैं आधा सोता हुआ ही मंदिर पहुँचता था, लेकिन जैसे ही शिवलिंग 🔱 पर जल चढ़ता और घंटियाँ बजतीं, नींद हवा हो जाती 😅।

शिव मंदिर के प्रांगण के अंदर ही एक खास जगह थी, कन्नड़ नवग्रह मंदिर। वहाँ हर ग्रह की मूर्तियाँ थीं। नानाजी शनिदेव की मूर्ति पर थोड़ा-थोड़ा तेल चढ़ाते थे और मुझसे भी चढ़वाते थे, और मुझे भी बोलते "मोनू बेटा, शनिदेव को नाराज़ नहीं करना चाहिए" 😄।

इसके बाद हमारी अगली मंज़िल होती थी Hanuman Mandir, जहाँ मंगलवार को लाइनें लगती थीं, लेकिन हम शनिवार और रविवार को जाते थे, "Smart Move by Nanaji!" वहाँ की बूंदी का प्रसाद अब भी याद आता है और हनुमान चालीसा की गूंज आज भी कानों में बजती है। 🚩 बचपन में मैं इतना सीधा-सादा था... कि हनुमान मंदिर के प्रांगण में सो रहे एक भोले से कुत्ते की पूँछ पकड़ कर 20-25 मीटर तक खींच ले गया😄! शायद मैं उसे भी दर्शन करवाने ले जा रहा था...कौन जाने! पर बेचारे कुत्ते की नींद टूटी, तो वो बिलकुल मेरी तरह "एकदम झल्ला गया", और फिर क्या, सीधा काट खाया🐕!

नतीजा? 14 इंजेक्शन पेट में! हाँ, पूरे 14 💉! तब समझ में आया, कुत्ते की नींद और भगवान की भक्ति, दोनों में Disturbance ठीक नहीं! 😂 मंदिर दर्शन के बाद हम निकलते थे पंचकुइयां रोड की ओर, जहाँ नानीजी के Cousin भाईजी की टिक्की चाट और कुल्फी की मशहूर पक्की दुकान थी, जहां हम दूध लेने जाते थे🍦।

अब यहाँ असली मज़ा आता था, दूध तो नानाजी का काम था, मेरे लिए असली चीज़ थी “Kulfi Faluda” 🍦, जो शनिवार नहीं तो रविवार शाम वहीं खिलाते थे नानाजी। जी हाँ, हर मौसम में आज भी Dryfruits वाली कुल्फी, फालूदे के साथ, उपर से गुलाब जल और केवड़े का छिड़काव, एकदम स्वर्ग का स्वाद देती है😋। और दुकान पर बैठकर नानाजी और नानीजी के भाईजी की बातें सुनते रहना🤔 । नानीजी के भाईजी की कुल्फी-फलूदा के स्टाल राष्ट्रपति भवन की और बड़ी सरकारी पार्टियों में लगाए जाते थे 1970s में, इतनी स्वादिष्ट और मशूहर थी उनकी कुल्फी-फलूदा 😎!

मैं सोचता था, “ये 'फालूदा' क्या होता है?” और जब जवान हुए तो उसका उत्तर खुद से ही मिला, “कुल्फी-फालूदा वो, जिसे खाकर सीधा फायदा हो, स्वाद भरी मिठास का, ठंडक का और यादें का”😋!

नानाजी और नानीजी के साथ बिताए इन Weekends ने मुझे बचपन से ही एक गहरी Spirituality और Faith की ओर मोड़ा। मैं भगवान को डर की नहीं, प्यार और मित्र की नज़रों से देखने लगा। मंदिरों की वो

शांति, वो भक्ति का माहौल, और नानाजी व नानीजी की आरती की आवाज़, सबने मुझे एक धार्मिक इंसान बनने की नींव दी🕉️🔱🚩। अब जब मैं पीछे देखता हूँ, तो महसूस होता है कि नानाजी व नानीजी ने न सिर्फ मुझे मंदिर जाना सिखाया, बल्कि धार्मिकता को जीना भी सिखाया। और हाँ, 4:30 AM वाली अलार्म से अब भी डर लगता है😅, लेकिन तब वो सबसे खूबसूरत सवेरा हुआ करता था। 😍

नानाजी की वजह से Connaught Place में मैंने उस वक्त वो सब देखा और जिया, जो शायद उस वक्त ही नहीं, आज भी बहुतों के लिए सपना हो🤔। मेरे लिए इस सब Luxuries और सपने समान बचपन देने के रचयिता थे मेरे नानाजी और नानीजी। 🙏🏻💐 ❤️

एक यादगार घूंट - बचपन से अब तक! ☕🍓😋

जब बात Cold Coffee की आती है, तो मेरे लिए Depaul's की Cold Coffee सिर्फ एक Drink नहीं, बल्कि एक Nostalgic Emotion है! और Keventers का Strawberry Shake...भाईसाहब, वो तो जैसे बचपन की मिठास को बोतल में भरकर दिया गया हो😋!

कभी-कभी लगता है कि वो Shake और Coffee नहीं, टाइम मशीन हैं⏳, जो एक Sip में नानाजी के जमाने में ले जाती हैं। वो घड़ी की सुइयों की टिक-टिक के बिना बिताए गए दिन, जब वक्त जैसे CP की सड़कों

पर ठहर जाया करता था। हाथ में Keventers की बोतल हो, और सामने Central Park की रौनक हो...बस, फिर और कुछ चाहिए ही नहीं था🕰️🥛!

ये सिलसिला तब शुरू हुआ जब मेरे नानाजी Connaught Place में रहते थे 1978 तक। हर Saturday और Sunday के लिए उनका मेरे को NCERT से ले जाना, मतलब CP की सैर, फिर Depaul's से ठंडी-ठंडी Cold Coffee और Keventers का Fruity, Pink Strawberry Shake का इंतज़ार, एक ऐसा रिवाज़ जो आज तक टूटा नहीं है।

Depaul's की Cold Coffee का स्वाद ऐसा है जैसे पुराने ज़माने की ईमानदारी, सीधा दिल में उतर जाता है। कोई Fancy Sprinkle, कोई Over-the-Top Foam नहीं, बस Pure, Classic, Creamy Coffee जो कहती है: "High End Cafés, Take a Back Seat"☕🙌!

आजकल जब कहीं भी नई जगह Cold Coffee ट्राय करता हूँ, तो अनजाने में उसे Depaul's से Compare कर ही बैठता हूँ😅। पर सच कहूँ तो, Depaul's की बात ही कुछ और है, वो सिर्फ Coffee नहीं, वो एक Comfort Zone है, जहाँ हर घूंट पुराने किस्से और अपनी जड़ों से मिलवाता है📖💭।

और, Keventers का Strawberry Shake...उसका रंग, उसकी खुशबू, और उसका स्वाद, जैसे बचपन की गुलाबी यादें हो, जो हर Sip के साथ

वापस ज़िंदा हो जाती हैं। क्या आजकल के ये Starbucks, Cafe Coffee Day, क्या Fancy Shake Parlours, कोई मुकाबला नहीं🍓💖!

अगर आप कभी CP के पुराने Central Park में, एक हाथ में Depaul's की Cold Coffee और दूसरे में Keventers का Strawberry Shake लेकर नहीं बैठे, तो जनाब, ज़िंदगी की सबसे सस्ती Luxury आपसे छूट गई है🌞।

आज भी जब वो बोतलें हाथ में आती हैं, तो दिल कह उठता है, "कुछ चीज़ें कभी नहीं बदलतीं...और अच्छी बात है कि नहीं बदलतीं!"

जब नानाजी Connaught Place में रहते थे, तभी से चल रही ये कहानी, Depaul's की Cold Coffee और Keventers के Strawberry Shake के हर घूंट में छिपी हैं ढेरों यादें पुरानी। ☕🍓❤️

कनॉट प्लेस के Regal और Odeon सिनेमा - नानाजी के साथ वो फिल्मी बचपन! 🎞️🍿

कनॉट प्लेस...बोलें तो दिल्ली का दिल ❤️! और उस दिल के बीचों-बीच धड़कते थे दो शानदार सिनेमा हॉल, Regal और Odeon सिनेमा! कनॉट प्लेस की आन, बान, शान हुआ करते थे Regal और Odeon सिनेमा,

जैसे आजकल के PVR और INOX! लेकिन हमारे लिए ये सिर्फ सिनेमा नहीं थे, ये तो Childhood Luxury थे...और वो भी On a Budget! 😂

इन दोनों सिनेमाघरों के मालिक नानाजी की कंपनी वाले ही थे। और, यहीं आकर कहानी होती है फिल्म से भी ज्यादा दिलचस्प, क्योंकि मेरे नानाजी, अपनी कंपनी वालों के Parliament Street वाले ऑफिस में काम करते थे 1978 तक! अब सोचिए, जब नानाजी वहीं काम करते थे, तो उनके नाती के लिए Regal और Odeon कोई आम थिएटर थोड़ी थे 🤔! वो तो हमारी Private Screening Hall जैसे थे 😎...बस Popcorn Complementary नहीं मिलता था, वो खुद खरीदना पड़ता था😜।

नानाजी की नौकरी की वजह से नानाजी महज़ थोड़ा सा Entertainment Tax अपनी Salary से कटवाते थे (जो शायद आज के समय में एक समोसे के बराबर हो!😅), और मुझे ले जाते थे इन बड़े-बड़े Cinema Halls में। वहाँ जाकर लगता था जैसे हम कोई VIP हों😎, और फिल्में देखने का तरीका ही कुछ और था। First Class सीटें, ऊपर बालकनी का नज़ारा, ठंडी हवा...वाह😄! और वहां देखीं थीं वो फिल्में, जिन्हें आज भी याद करके दिल झूम उठता है...शोले - "ये हाथ हमको दे दे ठाकुर!", धरमवीर - जब धर्मेंद्र घोड़े पर उड़ते थे, और हम कुर्सी पर!, दीवार - "मेरे पास माँ है!", अमर अकबर एंथनी - तीनों भाइयों का जलवा!, चुपके चुपके - देसी इंग्लिश में कॉमेडी का मास्टरपीस! बाकी की Regal और Odeon में देखी हुई फिल्में याद नहीं हैं! 😂😆🤣

लगता था जैसे कोई त्योहार हो, नानाजी का हाथ पकड़ के Regal के गोल दरवाज़े से अंदर जाना, Odeon की बालकनी में बैठना, और Interval में ठंडी Fanta या Coca Cola पीना🥤, मात्र 10 -15 पैसे में, एक सस्ते और सुंदर Royal Treatment जैसा अनुभव होता था 😎।
4 से 7 साल की उम्र के बीच, जैसे हर बच्चा होता है, वैसे ही मैं भी था। Movies की समझ कम थी, पर फिल्मों का Craze 100% था🤩! शायद कहानी आधी भी नहीं समझ आती थी, लेकिन उस बड़े पर्दे के सामने बैठकर देखने का मज़ा ही कुछ और था...जैसे किसी VIP Lounge में बैठे हों! 😅

बस इतना याद है कि सीट पर बैठते ही लगता था जैसे कोई Spaceship में बैठ गए हों, Lights off, Screen on, और फिर शुरू होती थी हमारी उड़ान🚀🎬! कभी डर के मारे नानाजी का हाथ कस के पकड़ लेता था, तो कभी Excitement में सीट पर खड़ा होकर ताली भी बजा देता था! 😊

उस वक्त हर घर में TV होना कोई आम बात नहीं थी। और हम तो LDC के बेटे थे, TV हमारे घर आया 1983 में। नानाजी की नौकरी शानदार थी, पर महंगी चीज़ों से रिश्ता दूर का था 🤪। पर उससे पहले जो असली रंगीन दुनिया थी, वो तो Regal और Odeon Cinemas में ही मिलती थी! जहाँ बाहर टिकट खिड़की पर लंबी लाइन होती थी, वहाँ मैं नानाजी के साथ सीधे एंट्री लेता था, बिल्कुल किसी "Backstage Pass" वाले स्टार की तरह! 😎🎟

नानाजी की वजह से मैंने वो सब देखा जो शायद बहुतों के लिए एक सपना था। जहाँ आजकल बच्चों को iPad पकड़ा देते हैं, वहाँ नानाजी ने मुझे सीट पर बिठा कर Silver Screen दिखाया, वो भी प्यार से, जितनी बार मैं जिद करता था, जिद्दी बहुत था मैं, अपनी जिद्द मनाने के लिए सड़क पर लेट जाने वाला Type 🤣। उनकी जेब में शायद बहुत पैसे नहीं होते थे, लेकिन उनके पास एक खजाना था, "प्यार, जुड़ाव और मेरे को खुश रखने का हुनर"। 💖

अब सोचता हूँ, Regal और Odeon में फिल्म देखना Luxury नहीं, Pure Magic था। एक बच्चे के लिए जिसके घर TV भी 1983 में आया, वो सिनेमा हॉल एक सपना थे, और नानाजी उस सपने के रचयिता। ❤️🎞️

Wenger's की वो यादें...बचपन की!

NCERT में हम थे LDC के बेटे, तो Wenger's अपनी औकात के बाहर था। बचपन में Wenger's का नाम सुनते ही लगता था जैसे कोई Royal Darbar हो, जहाँ सिर्फ अमीर लोग, High Society वाले लोग जा सकते हैं। मेरे जैसे, जो कि LDC का बेटा हो, बाहर से Glass से ही Cake और Pastry देखकर खुश हो जाते थे, जैसे कोई Museum देख रहे हों! 😄

महादेव जी का जादू मेरी ज़िंदगी में बचपन से ही चल रहा है। मेरे नानाजी उस वक़्त के एक High Class & Prestigeous प्राइवेट ऑफिस के

पार्लियामेंट स्ट्रीट वाले आफिस में Accounts Department में थे और उन्हें कंपनी की तरफ से BOB Building के पीछे फ्लैट मिला हुआ था। नानाजी शनिवार को NCERT Campus से अपने को ले जाते थे और सोमवार सुबह स्कूल शुरू होने से पहले छोड़ देते थे। Connaught Place में नानाजी के पड़ोसी थे Wenger's के मैनेजर, इसलिए Wenger's के ज़ायकों का भरपूर आनंद लिया है 1973 से 1978 तक 😎। फिर नानाजी रिटायर होकर हिमाचल प्रदेश अपने गाँव मुबारिकपुर शिफ्ट हो गए थे।

नानाजी के उन पड़ोसी अंकल की वजह से हम भी Wenger's के अंदर जा सकते थे, Chocolete Pastry, Butter Puff Pastry, Swiss Roll, Veg. Patties, Legendary Shrewsbury Biscuits आदि, सब फ्री में खाया, लगता था जैसे स्वर्ग, औकात से बाहर जो था।

वो समय भी अलग था, अंकल अपने ही दोहते की तरह Treat और प्यार करते थे, 5 साल कभी लगा ही नहीं कि वो नानाजी के पड़ोसी हैं।

आज भी कभी Wenger's जाता हूँ, या किसी से Wenger's के बारे में सुनता हूँ, तो एक मधुमुस्कान होंठों पर आ ही जाती है, क्योंकि वो Wenger's की यादें भी उन Pastries की तरह हैं, मीठी, नरम और कभी कभी थोड़ी Crispy। ❤️

मेरे स्वर्गीय पापा...मेरे हीरो! 🙏👨‍👦

मेरे पापा का बचपन कुछ ऐसा था जिसे सुनकर आज भी आंखें नम हो जाती हैं। 😢

जब वो सिर्फ़ 8 साल के थे, तब दादाजी दुनिया छोड़ गए...और जब 13 के थे, तो दादीजी भी चल बसीं। एक छोटा सा पहाड़ी गांव, सेहरी, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, वही पापा की जड़ों का ठिकाना है। लेकिन सपने तो पहाड़ों से भी ऊँचे थे 🌄। उन्होंने अपने भाईयों की मदद से पढ़ाई की एक बहुत ही नामी स्कूल से, 1918 में बना ब्रिटिश काल का स्कूल, गरली में, जो अब "गरली-प्रागपुर" World Heritage Villages के नाम से मशहूर है।

पापा का टैलेंट 🎤✍️ - पापा न सिर्फ़ "शुभाग सेहरों" अच्छे लेखक थे, बल्कि बढ़िया गायक भी थे। वो "शुभाग सेहरा" लिखा करते थे, जो खासकर कांगड़ा, हमीरपुर और ऊना जिलों के विवाहों में दूल्हे की ओर से पढ़ा जाता था। आज भी मेरे पास उनका एक लैमिनेटेड "शुभाग सेहरा" रखा है, जिसे देखकर मन गर्व से भर जाता है। 😊
बड़े भाइयों में से दो चाहते थे कि पापा गांव में रहकर परिवार की खेती और पशुओं को संभालें। लेकिन पापा की एक बहन, जी हां, मेरी प्यारी बुआजी ❤️, उन्होंने अपना एक झुमका बेचकर पापा को दिल्ली भेजा 🙏🏻।

पापा का दिल्ली का संघर्ष - 1964 में पापा दिल्ली आए...जेब में पैसे नहीं थे, लेकिन हौसलों की कोई कमी नहीं थी। पहाड़ी और मेहनती आदमी थे।

दिल्ली आकर पापा ने टाइपिंग सीखी, 45-50 WPM की स्पीड! साथ ही दिन में सरोजिनी नगर के एक बड़े Garments Showroom में Counter Salesman का काम किया। Lunch नेताजी नगर वाले भाई के घर होता था, Dinner सरोजिनी नगर वाले बड़े भाई के यहां। और रहना? एक छोटे से कमरे में, R.K. Puram में, अपने बाथू गांव (चिंतपूर्णी जी के पास) वाले हिमाचली दोस्त के साथ, बोलें तो जगदीश अंकल।

जगदीश अंकल ही थे जिन्होंने पापा को NCERT में LDC की नौकरी दिलवाई 🙏🏻💐। और हां...यही जगदीश अंकल पापा को पंचकुइयाँ रोड की टिक्की-कुल्फी की मशहूर दुकान पर टिक्की-कुल्फी खिलाने ले जाया करते थे 😋, जो कि मेरी नानीजी के Cousin भाईजी की दुकान थी। वहीं एक दिन मेरे नानीजी के Cousin भाईजी ने जगदीश अंकल से कहा, एक हिमाचली लड़की (मेरी मम्मी जी) के लिए एक अच्छा लड़का ढूंढ रहे हैं।

पापा से विचार विमर्श करके और बहुत सोच समझकर जगदीश अंकल ने मेरे पापा का नाम Suggest किया उन्हें, बस फिर क्या था, कुंडलियां मिलाई गईं, और 7 मई 1968 को मम्मी-पापा की शादी हुई ❤️। अपने विवाह का "शुभाग सेहरा" भी पापा ने खुद लिखा, जो किसी और ने विवाह समारोह में पढ़ा था। 😌

पापा शतरंज के खिलाड़ी नहीं थे, रेसकोर्स के खिलाड़ी थे 🎲🐎 - पापा को दिल्ली रेसकोर्स का बड़ा शौक था, दो बार जाते हफ्ते में, और हमेशा जीतते थे, Calculation का महारथ इतना कि जिस घोड़े पर दांव लगाना, वही जितता था 😎। लेकिन 1973 आते आते मम्मी जी ने वो आदत छुड़वा ही दी...प्यार की जीत हुई। 😄❤️

मेरे जन्म के बाद भी पापा का Struggle और मेहनत 😣 - जब मैं सिर्फ़ 1 महीने का था, मई 1971, पापा ने NCERT में टाइप 1/1 के दो कमरों में से एक कमरा और Bathroom, Toilet और Kitchen किराए पर ले लिया, जो कि Ground Floor पर था 🏠। वही घर बाद में पापा को Allot हो गया और हम 1990 तक वहीं रहे 😊।

पापा ने सिर्फ़ तनख्वाह पर निर्भर नहीं रहे, ईमानदारी के कीड़े ने उन्हें भी शायद बचपन में ही काट लिया था 😆। 1973-1975 तक ऑफिस के बाद रेहड़ी पर छोले-भटूरे और छोले-चावल बेचे, Qutab Hotel बस स्टैंड पर, रात 9 बजे तक 🍽️। फिर किसी तरह पापा के Efforts से मम्मी के नाम पर फल-सब्ज़ी की दुकान Allot हुई NCERT में 🥕🍎।

सब का धन्यवाद🙏💐 - मेरे दोनों ताऊजी, जिन्होंने अपने-अपने ढंग से पापा का मार्गदर्शन किया और दिल्ली आने पर पापा का जब तक ध्यान रख सकते थे रखा। मेरी प्यारी बुआजी, जिनकी कुर्बानी ने पापा के जीवन में सबकुछ बदल दिया। और, पापा के दोस्त बाथू वाले जगदीश अंकल, जिनकी वजह से ही पापा को नौकरी भी मिली और मम्मी जी भी! ❤️

पापा, आप और मम्मी ने मुझे जो बचपन दिया, वो हमारे "Lowest Half of Middle Class" स्टेटस से कहीं ऊपर का था। इतना Luxurious Childhood देने के लिए...इतना संघर्ष करके हँसते हुए सब कुछ सम्भालने के लिए, मैं उनका दिल से Thankful हूँ 🙏🏻💐।

पापा...आप नहीं होते तो मैं क्या होता**?** आपका बेटा हूं**,** लेकिन आप मेरे लिए Role Model, Poet, Singer, Struggler, Winner, सब कुछ हैं 😎। आपका "शुभाग सेहरा" सिर्फ़ विवाहों का हिस्सा नहीं था...वो तो आपकी ज़िन्दगी की कविता थी**,** जज़्बातों में डूबी**,** मेहनत से सजी**,** प्यार से लिपटी।

हर मोड़ पर आपके फौलादी इरादों ने रास्ता दिखाया**,** और आपकी मुस्कान ने हर ठोकर को आसान बनाया। ✨💖

Love you, Papa, Always.

🙇

मम्मी और पापा के संघर्षों को नमन! ❤️🙏

मेरा मानना है कि ज़िन्दगी की असल दौलत वही होती है जो माँ-बाप की मेहनत और दुआओं से मिलती है।

NCERT कैंपस में मेरी मम्मी के नाम दुकान अलॉट करवाई पापा ने 1975 में, क्योंकि पापा की खुद की सरकारी नौकरी थी तो उनके नाम अलॉट नहीं हो सकती थी। अलॉट हुई सिर्फ सब्जियों और फलों का कम करने के लिए क्योंकि बाकी रोजमर्रा की जरूरत के सामान और काम की दुकाने अलॉट हो चुकी थीं।

सुनने में शायद यह बात आम लगे, लेकिन इस दुकान के पीछे छुपी कहानी में मेहनत है, पसीना है, त्याग है, Emotions हैं...और पापा और मम्मी का वो निस्वार्थ प्यार है जो सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने बच्चों को एक अच्छा, बेहतर और Luxurious Future देने के लिए था।

मेरे पापा, जो उस वक़्त एक LDC थे, उनकी सैलरी इतनी नहीं थी कि हम बच्चों को LDC की सैलरी के स्तर से उपर की सुविधाएं दे सकें, जिसकी पापा और मम्मी बहुत चाह रखते थे। इसीलिए 1972 से 1975 तक पापा ने ऑफिस से छुट्टी के बाद कुतुब होटल के बस स्टैंड पर छोले-भटूरे और छोले-चावल बेचना शुरू किया, Handcart पर और Extra Income के लिए मम्मी भी कुछेक महिलाओं के स्वेटर बुनती थी और सूट सिलती थी।

पापा सुबह 3:45 पर उठते थे, सब्ज़ी मंडी जाते थे, 6:45 पर लौटकर फिर सब्ज़ियाँ धोकर दुकान सजाते थे...फिर ऑफिस, फिर दोपहर का खाना, फिर दोबारा ऑफिस...और शाम को घर से कपड़े बदलकर और चाय पीकर वापस दुकान।

और मम्मी? वो भी Superwoman थीं, सुबह 4:30 बजे उठकर पूजा पाठ करना, फिर सबके कपड़े धोना, नाश्ता बनाना, हमें स्कूल के लिए तैयार करना...और उसके बाद 8:45 से 1:15 तक दुकान संभालना, फिर 4:00 से 6:00 तक फिर दुकान, और फिर रात का खाना, बच्चों की पढ़ाई, कोई छुट्टी नहीं, कोई शिकायत नहीं। सिर्फ़ मुस्कुराहट, और ढेर सारा प्यार। ❤️ ये Routine था दोनों का, साल के 365 दिन, चाहे बारिश हो या लू, या फिर कंपकंपाती सर्दियाँ।

1985 में जब मैं 9वीं कक्षा में था, पापा को ज़बरदस्त Viral Fever हो गया। पहली बार मैं मंडी से सब्ज़ियाँ लाया सुबह 3:45 पर उठकर, दुकान सजाई, गल्ला सम्भाला...और फिर धीरे-धीरे ये सब मेरी ज़िंदगी का हिस्सा बन गया। लेकिन मैंने कभी पढ़ाई में कमी नहीं आने दी। स्कूल की Attendance भी कम नहीं होने दी। 📚💪

INA मार्केट की वो पहली डोसा पार्टी आज भी याद है 🤩, मम्मी अपने साथ INA के Super Bazaar ले गईं थी समान उठाने में उनकी मदद करने के लिए। उससे पहले वो अकेली बस से हर महीनें का राशन खुद उठाकर घर लाती थीं, कपड़े धोने वाला नौलखा साबुन तो Sadar Bazar से लाती थीं, बिना किसी को थकावट की शिकायत किए 😢।

आजकल Weekends का मतलब होता है, Multiplex, Malls में Shopping, Cafés, Getaways…लेकिन मम्मी पापा के लिए Weekends का कोई अलग वजूद नहीं था। Movies? हाँ…देखी हैं उन्होंने, लेकिन कब? जब मैंने बहुत ज़िद की हो किसी फिल्म को लेकर…तब उनमें से कोई एक मेरे साथ जाता था 😊।

Weekend Outing? वो तो उनके शब्दकोश में ही नहीं था…उनके Weekend Outings होती थीं, किसी की शादी में जाना, जब हों या किसी रिश्तेदार के घर उनसे मिलने जाना। इसके लिए दुकान या तो एक घंटा पहले बंद होती थी, या एक घंटा देर से खुलती थी शाम को।

जब कभी वो हमें Market ले जाते थे, उन्हें Market नहीं चाहिए होती थी, उन्हें एक Extra घंटा चाहिए था हमें हँसते हुए और खुश देखने के लिए 😊। उन्हें Restaurant नहीं चाहिए था, उन्हें बस ये सुकून चाहिए था कि हम तो खुश हुए न 😊।

Super Bazaar के साथ INA Market Outing भी हमारे लिए किसी Foreign Trip से कम नहीं थी। जब पहली बार मम्मी ने वहां मुझे Dosa खिलाया Pasricha's Dosa Junction से, आज मुझे अहसास होता है कि मम्मी का भी हमें "Treat" देने का मन होता होगा…बस जुबां से कहती नहीं होंगीं 🤔। शायद उनकी असली Movie थी, हमारा स्कूल में अच्छा Perform करना।

Class 10th में जब मेरे एक दोस्त ने पहली बार Adidas Shoes पहने और बताया कि वो उसके भाईया Korea से लाए हैं है...तो मुझे पहली बार इस Brand के बारे में पता चला। 10th के End में मैंने पापा मम्मी से ज़िद की, Adidas जैसे जूते मुझे भी चाहिए...बड़ी मुश्किल से माने 😊 और ले गया मैं मम्मी को Mohan Singh Place, Connaught Place, जहां नेपाल से Smuggled हुए International Brand के कपड़े और Shoes मिलते थे, एकदम Original और खालिस। उस जमाने में Mohan Singh Place के Basement, Ground & First Floor हमारे लिए Luxury Brands के Mall थे।

मम्मी ने ₹300 के Adidas Shoes के साथ मेरे ज़िद करने पर एक ₹200 की Levi's की जींस भी दिलवा दी 😍। अपने खर्चे काटकर ही दिलाए होंगे...बिना एक शब्द कहे 😢। आज जब Branded Stores, AC Malls मेरी Reach में हैं, तो दिल में हमेशा एक दर्द, एक क़र्ज़ और एक कसमसाहट रहती है कि उन चीजों की असली कीमत पैसों से नहीं, माँ-बाप के पसीने से चुकाई गई थी। 😢💔

मेरा ये लेख अधूरा है इस बात को बिना बताए 👉🏻...एक महिला घर को बर्बाद भी कर सकती है और संवार भी सकती है...हमारे परिवार पर ये बात एकदम सटीक बैठती है, खासकर मेरी मम्मी पर। उन्होंने सिर्फ़ एक घर नहीं बनाया, उन्होंने एक परिवार को जोड़े रखा...वो भी हर हाल में। 🏡❤️

मेरे नानाजी और नानाजी ने मम्मी को बचपन से ही एक "Better Than Good" ज़िंदगी दी थी, Connaught Place में शानदार परवरिश, Bangla Sahib Gurudwara के Girls School से पढ़ाई, जहाँ मम्मी ने सिर्फ़ पढ़ाई ही नहीं की, Republic Day परेड में स्कूल के बाकी Selected बच्चों के साथ हिस्सा लिया...NCC, गिद्दा, Cultural Dances में भी भाग लिया...Sapru House में Annual Day पर कई Activities में Perform किया 💃।

लेकिन जब विवाह के बाद मम्मी पापा के साथ आईं, तो उन्होंने बिना किसी शिकायत के, हर चीज़ में Adjust किया। ना कोई ताना, ना कभी ये कहा कि "मैंने इससे बेहतर देखा है" बल्कि उन्होंने पापा के हर कदम पर उनका साथ दिया, कंधे से कंधा मिलाकर 💪👫। दुकान हो या बच्चों की पढ़ाई, सर्दियों की रात हो या गर्मियों की धूप, मम्मी ने पापा के साथ हर मोड़ पर एक Warrior की तरह साथ निभाया 🛡️❤️। और ये साथ तब तक निभाया...जब तक नवंबर 2011 में पापा इस दुनिया को अलविदा नहीं कह गए 😭।

NCERT में हमारा परिवार Lowest Socio-Economic स्तर वाला था। लेकिन फिर भी KV (Kendriya Vidyalaya) में मेरे जो दोस्त थे, वो सब मेरे से काफी अच्छे घरों से थे, Type 2 और Type 3 वाले Quarters में रहते थे। अब मैं था भी थोड़ा Extrovert, दोस्त बनाने में Fast, दिल से साफ़ और बिना किसी Filter के Friendly💖। शायद यही कारण था कि या तो मेरे ये दोस्त Magnet थे और मैं Iron, या फिर मैं Magnet था और वो लोग Iron 🧲😄। मतलब Connection तो Solid था।

अब सुनो मेरी तीन Humiliations, जो मैनें 12-13 साल की छोटी सी उम्र तक झेली हैं...हर Wednesday और Friday को Chitrahaar और Sunday को "आप और हम", "The Old Fox" और रात में हिंदी Movie, ये सब मैं एक दोस्त के घर देखा करता था उनके TV पर, जो मेरा Classmate भी था, वो दोस्त Type 3 Quarter में रहता था। लेकिन वहां मुझे Carpet पर सीधा बैठने नहीं दिया जाता था, मेरे बैठने के लिए पहले Carpet पर अख़बार बिछाया जाता था जिसपर मैं बैठता था, ताकि Carpet गंदा न हो जाए 😶। वो दोस्त सोफे पर बैठता था और मुझे कभी वो कुछ भी Serve नहीं किया गया, जो मेरे दोस्त और Classmate को Serve किया जाता था उसके Parents द्वारा, पीने को पानी ज़रूर मिल जाता था और मैं बस TV देखना और अख़बार पर बैठना Enjoy करता रहता😅। फिर जब थोड़ा बड़ा हुआ मैं, और, ये सब थोड़ा खराब लगने लगा, तब एक दिन मैनें 1983 में मम्मी को ये सब बता दिया और पापा को भी ये सब पता चला। फिर क्या था! अगले ही दिन पापा ₹3400 का UPTRON Black & White TV (वो भी Shutter और चार टांगों वाला 😎) खरीद लाए घर पे! उस दिन लगा, Papa is my real hero💪❤️।

अब एक और दिल तोड़ने वाली बात सुनो...एक दिन मैं Type 2-3 वाले दोस्तों के साथ मस्ती से खेल रहा था, तभी एक "High Headed Uncle Ji", जो खुद Sector Officer थे (और मेरे पापा तो बस LDC थे), उन्होंने आके सबको डांटा, बोले, "तुम लोग इसके साथ क्यों खेलते हो? ये तो Type 1 Quarter में रहता है, Lower Class से है। इसको बोलो कि अपने Type 1 के बच्चों के साथ खेले"😠। मतलब सीधा Insult, On my Face, और, मुझे भी बोले, "तू यहां क्यों आता है खेलने? Type 1

वालों के साथ खेल!" दिल तो जैसे 💔 टुकड़े-टुकड़े हो गया...पर मेरे वो दोस्त...उन्होंने उन Uncle जी की बात को एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया😎✌️। बोले, "हम सब साथ में ही खेलेंगे!" और हम खेलने लगे जैसे कुछ हुआ ही न हो। घर आकर जब ये सब मैंने अपनी मम्मी को बताया, तो मैं रो पड़ा 😢। मेरी मम्मी ने मुझे प्यार से समझाया "बेटा, दुनिया में ऐसे लोग बहुत मिलेंगे, पर तू बस मस्त रह, खुश रह।"

अब तीसरा Incident...हमारे घर जब फ्रिज नहीं था, मैं पापा के एक जानकार जो कि UDC थे, उनके घर से बर्फ़ लेने जाता था जुलाई और अगस्त में, मई और जून हिमाचल में ननिहाल मे कटते थे। एक बार बर्फ़ लेने गया पापा के उन्हीं जानकार के घर, बर्फ़ तो दे दी, पर उन्होंने मुँह बना लिया और बड़बड़ाए भी कि रोजाना का धंधा बना लिया है 😳, हो सकता है उस दिन अंकल आंटी में लड़ाई हुई हो इसलिए अंकल का Mood खराब था 🤣...पर अपने को खल गई...घर लौटकर मैंने बस इतना कहा "पापा, मैं अगली बार से नहीं जाऊंगा उनके यहां बर्फ़ लेने" और सब बता दिया पापा और मम्मी को। अगली दिन पापा ने GPF से पैसे निकालकर फ्रिज ख़रीद लिया। उस दिन मेरी आँखों में खुशी से आँसू थे...और आज भी हैं 😢।

बचपन में जो चीज़ें हमारे दिल पर लग जाती हैं, वही हमें Strong भी बनाती हैं, और, जो हम सहते हैं, वो हमारी Life की कहानी को खास बनाता है❤️।

पापा-मम्मी के बलिदान को कोई शब्द पूरा बयाँ नहीं कर सकते। हमारे लिए उन्होंने वो सब किया जो आज भी बहुत से लोग सोचते ही रह जाते हैं। आज मेरे लिए Luxury सिर्फ़ Branded चीज़ें नहीं हैं, Luxury है, वो ममता जो माँ के हाथ की रोटी में है, वो इज़्ज़त जो पापा के झुके हुए कंधों में थी...और वो आत्म-सम्मान, जो पापा-मम्मी के हर संघर्ष में झलकता था। उनके संघर्षों को मैं कभी Repay नहीं कर सकता...लेकिन उनके उस हर आँसू, उस हर पसीने की बूँद को हमेशा अपने दिल में सहेजकर रखूंगा।

पापा और मम्मी मेरे Superheroes हैं, एकदम Real🦸‍♂️🦸‍♀️💖! वो हमारे सपनों को पूरा करते-करते, अपने सपने कब और कहां छोड़ आए, उन्हें भी नहीं पता चला 😢❤️।

एक आख़िरी बात...आज जब मैं Air Conditioned ऑफिस में बैठकर Google Calendar पे अपने Weekend Plans बना रहा होता हूँ, तब कोई कहीं सड़क किनारे Handcart पर छोले-भटूरे, छोले-चावल परोस रहा होता है...किसी और के पापा। पापा और मम्मी ने हमें यह दिन दिखाने के लिए अपना हर दिन मिटा दिया। आज अगर हमारे पास Branded कपड़े, अच्छी नौकरी, आरामदायक ज़िंदगी है, तो वो किसी इंस्टाग्राम Influencer के टिप्स नहीं...बल्कि मम्मी के फटे हाथों और पापा के थके कदमों की देन है, जिन्होंने कभी Weekend नहीं देखा...लेकिन हर दिन को हमें बेहतर बनाने में लगा दिया। 👣🌸

पापा-मम्मी के साथ बिताया गया हर एक पल, उस Luxury से कहीं ऊपर है जो पैसों से खरीदी जाती है। उनका त्याग, उनका प्यार, उनका हर दिन, मेरे जीवन की सबसे कीमती विरासत है, जो जब समझदार हुए तो एहसास हुआ। पापा-मम्मी ने हमारी ज़िंदगी को वो सब दिया, जो उनके पास नहीं था...और बदले में कुछ भी माँगा नहीं, सिवाय हमारी मुस्कुराहट के। उनके संघर्ष, उनके प्रेम और उनकी निस्वार्थ तपस्या, मेरी प्रेरणा भी है और मेरी पहचान भी 🕊️🙏💖। मम्मी, सिर्फ़ एक माँ नहीं हैं, वो हमारे घर की रूह हैं। पापा के साथ उनकी जोड़ी सिर्फ़ विवाह नहीं, एक सच्ची "Partnership" थी...For Life ❤️।

Love you पापा & मम्मी... Forever, Till Eternity.
🙏🏻💐▯💖🌸

"विवाह - A Divine Handloom of Two Imperfect Soulmates, Woven by Time, Love & Faith, Thread by Thread...!" 🧵💑✨

मेरे लिए विवाह क्या है?

विवाह का अर्थ केवल दो लोगों के साथ रहने से नहीं है, बल्कि यह दो आत्माओं का ऐसा Divine मिलन है जो Imperfect होते हुए भी एक Perfect Journey पर निकलते हैं, जहाँ हर दिन एक नया Thread

जोड़ता है इस Handloom जैसे रिश्ते को। एक Successful विवाह जल्दबाज़ी से नहीं बनता, It's not a Factory Product, it's Handwoven with Patience, Acceptance, Compromise and Unconditional Love, Thread by Thread। और अगर विवाह के पहले दिन ही दोनों Perfect हो जाएँ, तो आगे की ज़िन्दगी में साथ मिलकर Grow करने का क्या मक़सद रहेगा? हमेशा याद रखें, Imperfections are the Silent Heroes of Togetherness! Perfection Ego लाता है, और Ego Separation लाता है। आज रिश्ते Feminism और Self-obsession में उलझते जा रहे हैं। किसी भी भारतीय भाषा में, विभाजन या Separation के लिए कोई शब्द नहीं है, जैसे अंग्रेज़ी में Divorce और उर्दू में तलाक़, जब दो Soulmates और उनके परिवार विवाह के माध्यम से एक हो जाते हैं। विवाह के इस अटूट बंधन को पवित्र और Indivisible माना जाता है। और, साथ ही Sanatan Dharma की महानता इसी में है कि वो नारी को "नारायणी" मानता है, "नारी तू नारायणी"🙏।

"My Goddess Lakshmi on Earth - My Soulmate" 🙏👑

जैसे मेरे लिए मेरे माता-पिता इस धरती पर उसी स्थान पर हैं जिस स्थान पर ब्रह्मांड में भगवान शिवजी और माता पार्वती जी हैं, वैसे ही मेरी पत्नी, मेरी Soulmate, इस धरती पर वही स्थान रखती हैं जो माँ लक्ष्मी का होता है ऊपर ब्रह्मांड में। हमारे विवाह की नींव 25 दिसंबर 1998 को रखी गई, जब मैंने श्वेता को Propose किया। और जब सितम्बर 1999 में उसने कहा, "मैं तुमसे तभी विवाह करूंगी जब मेरे माता-पिता सहमति देंगे, किसी भी ऐसे तरीक़े से नहीं जो उनके सम्मान को ठेस पहुंचाए"।

उस एक बात ने मेरी Respect, Admiration और Trust को Next Level तक पहुँचा दिया। मैंने उसी पल सोच लिया, जो लड़की अपने माता-पिता की इज्ज़त को इतना मानती है, वो मेरे और मेरे परिवार की इज्ज़त की भी उतनी ही रक्षा करेगी। और ऐसा ही हुआ भी।

फिर फरवरी 2000 में, हम विवाह के पवित्र बंधन में बंधे और Shweta Jain बनीं Shweta Sharma। मैं मानता हूँ, हमारी Jodi में Imperfections मेरे अंदर ज़्यादा हैं (अब तो Official Declaration हो गया है😅)। लेकिन फिर भी, श्वेता ने, एक Pampered Daughter, जो BARC और NPC जैसी संस्था के Gazetted Officer की लाडली बेटी थी, हमारी Lower Middle Class Family में जिस Grace, Humility और Warmth से खुद को ढाला, वो आज के ज़माने में किसी Miracle से कम नहीं है💥। इसमें Credit सिर्फ श्वेता को नहीं, बल्कि उसके Mummy & Papa को भी जाता है जिन्होंने उसे ऐसे संस्कार और Values दिए कि उसने हमारे रिश्ते को एक असली Handloom की तरह Lovingly बुना, Thread by Thread, Emotion by Emotion, Fight by Fight😂 & Love by Love🧵💖।

"Our Filmy & Freezing Honeymoon - Sponsored by Mahadev Ji" 🎥❄

अब बात Honeymoon की, यानी वो कहानी जो हर Newlywed Couple के लिए एक Memory होती है, पर हमारे लिए वो एक Film Script बन गया था, Without Script, Without Camera, but with Divine Direction by Mahadev Ji himself 🎬😂। Dalhousie की

बर्फ़, Chamba की Ravi River का जादू, फिर वो Khajjiar का अनुभव, और आख़िर में पालमपुर के चाय बागान...OMG, सब कुछ Next Level👌।

पहले हम गए Dalhousie, Snow Covered Hills & Streets, Cozy Vibes, और वो Photos जो आज भी Heart Warm कर देते हैं। फिर Chamba गए, जहाँ दो दिन तक Himachal Tourism के एक Open Café में हमने Ravi River की शांत बहती धारा को घंटों निहारा, जैसे कोई संगीत बज रहा हो।

फिर आया Masterstroke...Khajjiar🌨। Early Morning, हमने एक संकरी सी रोड पकड़ कर पहुँचे Khajjiar, जो उस दिन पूरा सफेद चादर ओढ़े था, 2-3 फीट बर्फ से ढका मैदान, और चारों तरफ Deodar और Pine के ऊँचे हरे पेड़। और सबसे ज़्यादा चौंकाने वाली बात, उस दिन Khajjiar में सिर्फ हम दो ही Tourist थे🤯। Mahashivratri का दिन था, और स्थानीय होटल स्टाफ अपने-अपने गांवों में पूजा करने चले गए। उन्होंने हमें पूरे होटल की चाबी देकर कहा, "अब Khajjiar आपका है"😂। भाई साहब, ऐसा लग रहा था जैसे कोई 90s की फिल्म चल रही हो, Saatwan Aasmaan 2.0 Starring Tarun & Shweta😎😎! हम थे, बर्फ थी, जंगल थे, और शायद कहीं दूर Leopards और Bears भी, लेकिन डर नहीं था, Excitement था। हमने खुद अपना खाना बनाया, Explore किया हर कोना Khajjiar का, Clicked Memories, Made & Enjoyed 6-7 Cups of कड़क चाय, और बर्फ में वो Filmy Moments जी लिए जो लोग सिर्फ Screen पर देख पाते हैं। रात को

"Minus" 10 डिग्री तापमान में दो Sweaters, दो Quilts और दो Blankets के नीचे सोना पड़ा, और फिर भी Romantic Warmth बनी रही😜🔥।

उस दिन और रात हम Literally King & Queen👑 of Khajjiar थे, बिना किसी प्रजा के😂, लेकिन पूरी Nature हमारी Audience थी😳। Local Himachali staff अगली सुबह वापस आया और हमें Divine Breakfast और कड़क चाय दी, जिसका स्वाद हम आज भी Miss करते हैं😋।

फिर हम Palampur गए, Tea Garden Hill Station of Himachal Pradesh, Surrounded by Deodar & Pine Trees and Tea Gardens, Dhauladhars, Neugal Khadd और Saurabh Van Vihar। वहाँ भी हर पल साथ बिताया गया और 25 दिनों बाद हम Delhi वापस आए, With a Heart full of Stories & Memories।
Dalhousie से Palampur...Panchpula Waterfall, Gandhi & Subhash Chowk, Laxmi Narayan Temple of Chamba, Ravi River, Snow Covered Khajjair, Tea Gardens, Dhauladhars, Neugal Khadd, हर Memory उस Honeymoon की एक Poetry जैसी है।

"25 Years of Love More, Hate Less" 🥰
अब 25 साल हो चुके हैं इस Beautiful Imperfect Journey को। और मैं बड़े गर्व से कहता हूँ, चाहे बात हो रही हो या नहीं हो रही हो, श्वेता ने

एक भी दिन ऐसा नहीं होने दिया जब मुझे सुबह, दोपहर या रात का खाना न मिला हो। Yes, Fights भी हुई, लेकिन हमेशा एक बात रही, "Respect Never Left, Care Never Vanished & Commitment Never Wavered।

मैं बार-बार दिल से धन्यवाद करता हूँ श्वेता के माता-पिता का, जिन्होंने ऐसी समर्पित और Balanced बेटी को जन्म दिया, पाला और विवाह के बाद भी सही मार्गदर्शन दिया, जो आज भी हमारे Handloom जैसे रिश्ते में हर Thread को Lovingly जोड़ रही हैं।

"Final Words - To My नारायणी" 🌹
श्वेता, तुम मेरी Wife ही नहीं, मेरी Vibes हो। तुम मेरी Life की लक्ष्मी ही नहीं, मेरी Laughter भी हो। तुम Imperfections में वो Artistry हो, जो इस Imperfect Artist को Perfect Feel कराती हो। और, हमारे मिलन और विवाह के बाद से अगर आज मैं कुछ हूँ, तो उसमें तुम्हारा भी बहुत बड़ा हाथ है, और शायद कुछ कड़क चाय का भी! ☕❤️

🌟 एक Papa की दिल से बात, अपने बेटे और बेटी के नाम 🌟

Dear Ayam & Mouli,

एक दिन तुम बड़े हो जाओगे...और शायद किसी दिन ये पंक्तियाँ पढ़ते हुए अपने बचपन की Memories में खो जाओगे, जब मैं तुम्हारे लिए दुनिया का सबसे मज़बूत, सबसे Loud और सबसे Emotional इंसान हुआ करता था😄। पर आज, मैं तुम्हें एक ऐसे दिल से लिख रहा हूँ, जिसमें अनुभव हैं, पछतावे हैं, और बहुत-बहुत सारा प्यार है, सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे लिए❤️।

Mike + The Mechanics का एक Song है "The Living Years", जिसमें एक बेटे की आवाज़ है, जो अपने पिता से अनकही बातें कहने का पछतावा करता है, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी होती है। वह पिता अब इस दुनिया में नहीं है...बिल्कुल वैसे ही जैसे मेरे पिता, तुम्हारे दादू...अब सिर्फ मेरी यादों में हैं। "I miss my father, I regret disrespecting him, But he won't come back from heaven"। इस एक लाइन में सब कुछ है जो मैं महसूस करता हूँ...और नहीं चाहता कि तुम कभी ऐसा महसूस करो, Future में, पछतावे में।

Like your Dadu loved me, I love you...तुम दोनों मेरे Pride हो। जैसे तुम्हारे दादू ने मुझे दिल से चाहा, वैसे ही मैं तुम्हें हर साँस, हर Heartbeat से चाहता हूँ। मैं एक बहुत Mature और समझदार पिता नहीं रहा हमेशा...कभी-कभी Overreact कर जाता हूँ, कभी-कभी

ज़रूरत से ज़्यादा Emotional हो जाता हूँ, पर जो भी करता हूँ, तुम्हारे लिए करता हूँ, Out of Concern, Not Control🧡।

कभी-कभी ज़िन्दगी बहुत Fast हो जाती है, और हमें लगता है कि जो बातें आज नहीं हुईं, वो कल हो जाएँगी। पर कभी-कभी कल आता ही नहीं...इसलिए, हमेशा "Living Years" में बातें कर लेना, जब तक मैं इस दुनिया में हूँ...अपने Emotions को Hold मत करना, Communication is the Key...Express करो, चाहे वो Love हो, चाहे Confusion हो। क्योंकि Silence कई बार Lifelong Regret में बदल जाता है।

मैं एक बहुत Important बात कहना चाहता हूँ, तुम्हारी मम्मी सिर्फ इस परिवार की रीढ़ नहीं हैं, वो हमारी "Direct और Indirect Strength" हैं। उनकी मुस्कान में हमारे घर की रौशनी है, और उनके दर्द में हमारा भविष्य बसा है। उन्होंने जो कुछ भी Sacrifice किया है, तुम्हारे लिए, मेरे लिए, वो किताबों में नहीं, दिलों में लिखा जाना चाहिए📖💖।

कभी भूलना मत, अगर तुम्हारी Nani न होतीं, तो तुम्हारी Mummy न होतीं, और अगर Mummy न होतीं...तो तुम दोनों न होते। इसलिए जब भी साँस लो, एक Gratitude का एहसास होना चाहिए, अपनी मम्मी के लिए, अपनी Nana & Nani के लिए...हर Heartbeat के साथ Thankful होना सीखो। It's not just DNA...It's the Love, the Struggle and the Sacrifices of generations that live inside you🙏।

मैं मानता हूँ, मैं हमेशा इस दुनिया में नहीं रहूँगा। एक दिन मेरी आवाज़ धीमी हो जाएगी, मेरी मौजूदगी कम हो जाएगी, शायद इस दुनिया से भी...पर तुम्हारी मम्मी की मौजूदगी हमेशा एक Shield की तरह बनी रहेगी। She is the Spine of your Emotional Compass। जब कभी Confused रहो, तो Mummy की आँखों में देखना, वहाँ Clarity मिलेगी 💫।

एक दिन तुम भी माता-पिता बनोगे...तब समझोगे कि बच्चे पालना सिर्फ स्कूल, कपड़े और खाना देना नहीं होता, बच्चे पालना एक Lifelong Commitment है...Sleepless Nights, Worries for no Reason, & Endless Unconditional Love। तब शायद मेरी बातें तुम्हें और गहराई से समझ आएँगी। और उस दिन, मुझे Silently धन्यवाद देना मत भूलना😌।

कभी भी मुझे Judge मत करना...मैंने Parenting की कोई Course नहीं किया था, ना कोई Manual मिला था मुझे। मैंने जो किया, दिल से किया, हो सकता है कहीं Underdone हो गया हो। पर एक बात हमेशा याद रखना, Intentions मेरे हमेशा Pure रहे। मैं तुम्हें मजबूर करने नहीं, संवारने की कोशिश करता रहा हूँ...और करूँगा, जब तक साँसे चलती हैं।

रिश्तों में Imperfections होना Normal है, बस Ego नहीं होनी चाहिए। मैंने अगर कभी तुम्हें Hurt किया हो, Knowingly or Unknowingly, तो I seek your Forgiveness। और अगर कभी तुमने मेरी बात नहीं

मानी, गलत Decisions लिए, तो I Forgive you with a Full Heart I क्योंकि प्यार का मतलब ये नहीं कि गलती न हो, प्यार का मतलब है, गलती होने पर भी एक-दूसरे को खोने से डरना💞।
अगर कभी ऐसा दिन आएगा जब मैं इस धरती पर न रहूँ, तो मेरी एक Wish है...तुम दोनों अपनी मम्मी को वो Respect, Care और Support देना, जो मैं शायद हमेशा पूरी तरह नहीं दे पाया। उसके बिना तुम कुछ नहीं...और मेरे बिना तुम अधूरे नहीं...क्योंकि तुम्हारी Strength तुम्हारी मम्मी है I And remember, I will always live inside you, in your decisions, your dreams, and your laughter🕊️ I

With all my love❤️,
Your Papa, Who's not perfect, But perfectly yours💞

💥 ज़िंदगी को मुस्कराकर जीना - मेरी तरफ़ से अयम और मौली के नाम 💥

मेरे प्यारे अयम और मौली,

तुम दोनों मेरी ज़िंदगी की सबसे खूबसूरत वजह हो। जब भी मैं तुम्हारी आँखों में देखता हूँ, मुझे अपना अतीत भी दिखता है और तुम्हारा सुनहरा भविष्य भी। मैं चाहता हूँ कि जो बातें मैंने देर से समझीं, वो तुम जल्दी

समझ लो, ताकि तुम्हारा हर दिन, हर साँस, और हर मुस्कान ज़िंदगी को सच में जिए, किसी बोझ की तरह नहीं ढोए। आज मैं तुम्हें एक Simple, लेकिन बहुत Meaningful Message देना चाहता हूँ, एक गाने के ज़रिए जो मुझे बहुत पसंद है और मेरे सोचने का तरीका भी वही है। ये गाना है "**Apna Har Din Aise Jio**" from फिल्म Golmaal 3 से।

पहली बार सुनने में ये गाना सिर्फ़ मस्ती वाला लग सकता है, लेकिन जब ध्यान से सुनो, तो इसमें पूरी ज़िंदगी का फलसफा छिपा है। इस गाने की एक लाइन है…"**Apna Har Din Aise Jiyo, Jaise Ki Aakhri Ho**", इसका मतलब ये नहीं कि डरकर जियो कि शायद आज आख़िरी दिन है (ईश्वर वो दिन कभी ना लाए), बल्कि इसका मतलब ये है कि हर दिन को इतना भर दो Positivity, Energy और Goodness से कि कल अगर आए ना आए, तो भी अफ़सोस न हो। मैं खुद अपने जीवन में हमेशा उसी रास्ते पर चला हूँ, जहाँ ख़ुशी थी, सच्चाई थी और ज़िंदादिली थी, फिर चाहे उसका Result कुछ भी निकला हो।

बहुत लोग कहते हैं कि Practical बनो, Safe रहो, इसकी तरह बनो, उसकी तरह बनो, पर मैंने वो रास्ता चुना जो मेरे दिल ने कहा। और यही मैं तुम दोनों को भी कहना चाहता हूँ, खुद की सुनो, अपने अंदर की आवाज़ पर भरोसा करो, और सबसे ज़्यादा खुद से प्यार करो।

आज की दुनिया बहुत तेज़ है, हर कोई दौड़ में है, Comparison & Competition में है, और Race लगी हुई है, बिना असली Goal का रास्ता जाने। लेकिन अयम और मौली, अगर हम अपनी Originality खो देते हैं, तो कुछ भी पाने का मतलब नहीं रह जाता। तुम्हारी सबसे बड़ी ताक़त है तुम्हारा असली Positive Charachter, तुम्हारी मासूम सोच,

तुम्हारा भोलापन, तुम्हारी ज़िद, और हाँ, तुम्हारा वो प्यारा सा दिल जो बिना शर्त प्यार करता है। उस दिल को कभी मत बदलने देना। जब भी Confused हो जाओ, बस एक बात याद रखना, जो चीज़ तुम्हें अंदर से Tranquility दे, वही सही है। और जो चीज़ बस बाहर दिखने के लिए हो, लेकिन अंदर Emptyness दे, उसे छोड़ दो।

मैंने ज़िंदगी में ये समझा है कि असली खुशियाँ Material Things को खरीदकर नहीं आतीं। असली खुशियाँ आती हैं जब तुम किसी की मदद करते हो, किसी का दिन अच्छा बना देते हो, मम्मी को बिना बोले गले लगा लेते हो, या पापा को देखकर मुस्कुरा देते हो। Material चीज़ें कुछ पल के लिए Excitement देती हैं, लेकिन जब तुम किसी और की ज़िंदगी को थोड़ा Better & Happy बना देते हो, तब जो Feeling आती है, वो सबसे Real Happiness होती है।

इसीलिए अयम और मौली, अपने अंदर के उस मासूम इंसान को ज़िंदा रखना जो बिना Selfish हुए सोच सकता है, जो देने में खुशी महसूस करता है। हम सबको अपने जीवन की Philosophy बनानी चाहिए, एक ऐसा Framework, जिससे हम हर दिन का Decision ले सकें। क्या ये चीज़ मुझे सुकून देगी? क्या इससे मैं कुछ अच्छा कर पाऊँगा? क्या ये मेरा Real Self है? ऐसे छोटे-छोटे सवाल ज़िंदगी के बड़े फ़ैसलों को आसान बना देते हैं। दुनिया के Success Formulas को Blindly Follow करने की ज़रूरत नहीं है। तुम्हारा Success तुम्हारे अपने Terms पर Define होना चाहिए, जैसे कि तुम कितने खुश हो, कितने

Authentic हो, और कितने Connected हो अपने Loved Ones से, And most importantly with yourself।

मैं जानता हूँ कि ज़िंदगी हमेशा Easy नहीं होगी। Ups और Downs आएँगे। लेकिन जैसे Golmaal के Characters हर मुश्किल को हँसकर Handle करते हैं, वैसे ही तुम्हें भी हर Moment को Heart से लेना है। ज़िंदगी कोई Exam नहीं है, ये एक मज़ेदार, रंगीन, हँसती-गाती Journey है। हर दिन नया है, हर दिन एक Canvas है, जो चाहे Paint करो, लेकिन वो Paint तुम्हारे अपने रंगों से होना चाहिए, दूसरों की Expectations से नहीं।

Marks, Degrees, Salary, ये सब Milestones हैं, Goals नहीं। तुम्हारी असली मंज़िल है...Peace, Growth & Happiness, so, Enjoy that journey too, हर छोटे Step की भी कदर करना सीखो। जब तुम खुद को दूसरों से Compare करना छोड़ोगे, तब तुम सच में Grow करोगे। तुम्हारा नाम Ayam और Mouli है, मतलब हर एक में कुछ खास है, जो किसी और में नहीं। ये बातें तुम जब भी पढ़ोगे, ये तुम्हें याद दिलाएँगी कि Eternal Happiness Choose करना एक Perfect Decision होता है। मैं ये सब इसलिए नहीं कह रहा क्योंकि मैं Perfect हूँ। मैं भी इंसान हूँ, गलतियाँ की हैं, कुछ बातें Late समझीं, कुछ Decisions गलत लिए। लेकिन एक बात कभी नहीं छोड़ी, ख़ुश रहना और खुशियाँ बाँटना। यही मेरा सबसे बड़ा धन है, और यही मैं तुम्हें देना चाहता हूँ। तुम चाहे जहाँ भी जाओ, जिस भी राह पर चलो, बस इतना ध्यान रखना कि तुम्हारा दिल और तुम्हारी आत्मा तुम्हारे साथ है कि नहीं। और जब कभी भी तुम

Confused हो, या ग़लत राह पर चलने का मन हो, तो ये गाना दोबारा सुन लेना, और ये Note दोबारा पढ़ लेना। याद रखना, तुम्हारा पापा तुम्हारा Supporter है, हमेशा रहेगा। तुम्हारे Decisions में, तुम्हारी Growth में, तुम्हारी तकलीफ़ों में, और तुम्हारी ख़ुशियों में, मैं हमेशा तुम्हारे साथ खड़ा रहूँगा।

Golmaal 3 का ये गाना सिर्फ़ Fun नहीं है, वो एक Life Formula है, from my point of view!

"**Apna Har Din Aise Jiyo, Jaise Ki Aakhri Ho**...", मतलब, हर दिन को इतना अच्छा बना दो कि अगर वो आख़िरी भी हो (ईश्वर वो दिन कभी ना लाए), तो भी दिल कहे, "वाह यार, क्या ज़िंदगी थी!" 🌈😇

With all my love❤️,

Your Papa, Who's not perfect, But perfectly yours👨‍👧💖

🌟 प्यारे अयम और मौली - मेरी शान, मेरा गर्व 🌟

मेरे प्यारे बच्चों,

ये Note सिर्फ़ एक Note नहीं...ये पापा का दिल है, जो तुम्हें कुछ ऐसी बातें सिखाना चाहता है, जो ज़िंदगी भर तुम्हें हर दिन Better बनने के लिए Inspire करेंगी❤️।

पापा और मम्मी ने जो कुछ सीखा, वो ज़रूरी नहीं कि हमने हमेशा सही वक़्त पर सीखा हो...पर अब जब तुम दोनों के Professional Career की शुरुआत हो चुकी है या आगे होगी, तो मैं चाहता हूँ कि तुम वो बातें आज ही समझ लो, जो काश हम तुम्हारी उम्र में समझ पाते। ये कोई "Lecture" नहीं है...ये एक प्यार भरी सीख है, जो तुम्हारे अंदर के Superhero और Superwoman को जगा सकती है। बस थोड़ी सा Hardwork, थोड़ा सा Concentration, और ढेर सारा Compassion चाहिए💪❤️।

🙏 1. ईश्वर पर भरोसा रखो:

जैसे उन्होंने हमारे जीवन को संभाला है, वैसे ही वो तुम्हारा भी रास्ता दिखाएँगे। हमारी ईश्वर के प्रति श्रद्धा में एक शक्ति है, जिससे हम हर मुश्किल को पार कर सकते हैं।

👨‍👩‍👧‍👦 2. असली खजाना क्या है?

Family, अच्छे Friends, तुम्हारा Dharma और Health, ये चार चीजें Life की सबसे कीमती दौलत हैं। इनको कभी नज़रअंदाज़ मत करना...पैसे से सब कुछ नहीं खरीदा जा सकता।

💰 3. अमीर वो नहीं जो ज़्यादा कमाए:

बल्कि वो है जो कम में भी खुश रहे। जितना कमाओ, ज़्यादा से ज़्यादा 60% खर्च करो Including All Monthly Expenses, EMIs & Savings on Insurances/Mutual Funds, यही सच्ची Financial Freedom है।

😌 4. सबको खुश करना ज़रूरी नहीं:

हर किसी को आप पसंद नहीं आ सकते, और ये बिल्कुल ठीक है। जब तक तुम खुद को Respect देते हो, तुम सही हो।

✨ 5. तुम्हारा किरदार > तुम्हारी कामयाबी:

तुम क्या हो Deep Inside, ये कहीं ज़्यादा मायने रखता है, Instead तुमने क्या कमाया।

🎯 6. Excellence, Not Perfection:

Perfect बनने की दौड़ में मत भागो...बस Best देने की आदत डालो। रोज़ थोड़ा Better बनने की कोशिश करो।

😂 7. खुश रहो, खुश रखो, ज़िन्दगी हर पल जियो:

ज़िंदगी बहुत छोटी है, Fun और Laughter को उसमें से निकालना सबसे बड़ी गलती होती है। खुश रहो, और दूसरों को भी खुश रखो।

🏠 8. घर के अंदर जीत ज़रूरी है:

बाहर कितना भी सफल हो जाओ, अगर घर में शांति नहीं है, तो सब व्यर्थ है।

🚀 9. Risk लेने से मत डरो:

Professionally, जहाँ Risk है, वहीं Growth होती है। थोड़ा Discomfort, थोड़ा Hard Work, तुम्हें बड़े मुक़ाम तक ले जाएगा।

💖 10. Kind बनो, Famous बनने के चक्कर में मत पड़ो:

दुनिया Kindness को हमेशा याद रखती है। Kindness & Hardwork leads to Success and Success leads to getting Famous.

🥇 11. अपनी Definition of Success खुद बनाओ:

दूसरों की Expectations पर नहीं, अपने मन की शांति और सच्चाई पर जीवन जियो।

🙏 12. गलतियाँ स्वीकार करना सीखो:

"Sorry" बोलना कमजोरी नहीं, It demonstrates Authenticity and Vulnerability।

🌿 13. मेहनत में Humility जोड़ दो:

तो वो मेहनत सोने जैसी चमकेगी।

📚 14. रोज़ 4-5 Pages पढ़ो of A Good Book, हफ़्ते में 1 बार Inspiring Podcast सुनो, और अपने Thoughts लिखो:

Mind Gym भी ज़रूरी है, जैसे Body Gym है।

👍 15. तारीफ़ करना सीखो, Criticize कम करो:

Positive Energy फैलाओ, Negative Energy मत बनो।

📜 16. छोटे-छोटे कामों में भरोसेमंद बनो:

जो छोटी बातों में Sincere होता है, वही बड़ा बनता है।

🤝 17. अपने शब्द पर कायम रहो:

किसी भी कीमत पर, तुम्हारा Promise ही तुम्हारी पहचान है। वो वादा, जो तुमने खुद से किया हो या किसी और से, वही असली कसौटी है तुम्हारे किरदार की। क्योंकि हालात बदल सकते हैं, रास्ते मुड़ सकते हैं, लेकिन जो अपने शब्द पर अडिग रहता है, वही भरोसे के काबिल होता है। वादा निभाना मुश्किल हो सकता है, लेकिन यही तुम्हें भीड़ से अलग बनाता है।

✈️ 18. Travel करो - नए अनुभव लो:

ज़िंदगी सिर्फ़ किताबों में नहीं, दुनिया घूमकर भी सीखी जाती है। Create memories that will endure beyond your lifetime, like I have।

🏃‍♂️🏋️ 19. Health सबसे बड़ा Asset है:

Sport खेलो, Walk पर जाओ, Gym करो, जो भी पसंद हो, लेकिन रोज़ कुछ करो।

🔥 20. Struggles में ही असली ताकत छुपी होती है:

हर Challenge तुम्हें मज़बूत बनाता है। Defeat में भी Win ढूँढना सीखो।

🧘22. Mind, Body & Soul को रोज़ Nourish करो:

कोई भी दिन ऐसा न जाए जब तुमने खुद के लिए कुछ ना किया हो। Strengthen your spirit, and exercise your body every day।

👫 23. दोस्त सोच-समझकर चुनो:

वो दोस्त रखो जो तुम्हें उठाते हैं, नीचे नहीं गिराते। Surround yourself with those who uplift, challenge, and hold you accountable। अगर तुमने इन बातों को अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बना लिया, तो मैं यकीन से कह सकता हूँ कि तुम्हारी ज़िंदगी सिर्फ़ "Successful" नहीं, बल्कि "Meaningful" होगी❤️।

एक उड़ते हुए गुब्बारे पर लिखा था...

"वो जो बाहर है, वह नहीं...जो अंदर है, वही आपको ऊपर ले जाता है!" 🎈

With all my love❤️,

Your Papa, Who's not perfect, But perfectly yours👨‍👧‍👦💖

(***Content Credit: DGP***)

भाई & Friends

💛 Shammi Bhai & Anupam Chaudhary - मेरे वो भाई, जिनसे खून का नहीं, रूह का रिश्ता है 💛

ज़िंदगी में कुछ रिश्ते मिलते हैं, जिन्हें हम बनाते नहीं, बल्कि ऊपरवाला खुद बनाकर हमारे सामने रख देता है, जैसे कह रहा हो, “जा बेटा, ये हैं तेरी तक़दीर के सबसे अनमोल रत्न…इनके साथ जी, हँस, सीख और संभल”। मुझे ये तोहफ़ा मिला दो इंसानों के रूप में, Shammi Bhai और Anupam Chaudhary। इन दोनों ने मुझे सिखाया कि "रिश्ते खून से नहीं, धड़कन से बनते हैं।" वो दोस्ती जो धीरे-धीरे भाईचारे में बदली, और फिर एक ऐसी Emotional Foundation बन गई, जिस पर मेरी Personality भी टिकी हुई है।

🎂 January 5, 1988 – A Date with Destiny 🎂

5 जनवरी 1988, Anupam Chaudhary का जन्मदिन, मुझे उस समय ये नहीं पता था, लेकिन क़िस्मत ने मेरी दोस्ती की कहानी उसी दिन शुरू कर दी थी। KV JNU की 11th Class में पढ़ाई करते वक्त, मैं और Jiten Sil अक्सर Chhappan Bhog, Autobindo Place Market में जाकर Samosa और Cold Drink के बहाने पूरी दुनिया की बातें किया करते

थे, कभी Exams का डर, कभी Cricket का Craze, और कभी वो लड़कियाँ, जो हमें Notice भी नहीं करती थीं😅।

और एक दिन Anupam आया, Confident, Charismatic, और एकदम Movie के Lead Actor की तरह Entry मारता हुआ। “Hi Guys, I’m Anupam Chaudhary. What about you two?” कभी-कभी लगता है उस एक Line ने मेरी ज़िंदगी का Entire Emotional Graph बदल दिया। Jiten ने थोड़ी हेराफेरी करते हुए झूठ बोला, “We’re from Air Force Bal Bharati School.” अब भई, जब दोस्त ने झूठ बोल दिया, तो मेरा Loyalty वाला Processor Activate हो गया, मैंने भी हाँ में हाँ मिला दी। एक झूठ ने हमारी दोस्ती का Gate खोल दिया, और सच मानो, उस झूठ का मैं हमेशा आभारी रहूंगा😄। 20 मिनट की वो पहली बातचीत इतनी Naturally अच्छी लगी, कि लगा ये इंसान किसी और ही League का है। उसमें Openness थी, एक अलग Magnetic Confidence, ना Attitude, ना Show-off, बस एक साफ़ दिल वाला बंदा।

🏙 Nirula’s Chanakyapuri – Where Friendships Were Brewed with Hot Chocolate Fudge 🧁

क़रीब 10-15 दिन बाद, एक सुबह School के 1st Period के बाद अचानक दिल किया, चलो Nirula’s, Chanakyapuri चलते हैं Anupam को ढूँढने। तब न तो मोबाइल था, न कोई WhatsApp Group, लेकिन दिल में एक Certainty थी कि Anupam वहाँ मिलेगा। Nirula’s उस जमाने में हमारे जैसे Teenagers के लिए Disneyland से

कम नहीं था। Pizza, Burger, Grilled Sandwich और Legendary Hot Chocolate Fudge & All American Banana Split, और Stylish & Hepp College Crowd का हंगामा। वहाँ जाने के लिए न Courage चाहिए था, न Permission, बस थोड़ी सी Daring और बहुत सारी Curiosity। जब मैंने Nirula's में Anupam के बारे में पूछा, तो Teenagers ऐसे React कर रहे थे जैसे मैंने किसी Celebrity का नाम लिया हो। "Anupam? Arrey woh toh yahaan daily aata hai...Bahut bindass banda hai...!" And truly**,** वो वहाँ का राजा था, Charisma और Confidence ka Raja! वहीं पर पहली बार मैंने देखा कि Anupam को सिर्फ लोग जानते नहीं थे, वो उन्हें Connect भी करता था, बेझिझक, बिना Ego के। वहीं मेरी मुलाक़ात हुई Shammi Bhai से, दो साल बड़े, पर Vibes में अपने जैसे, Positive। उनकी Personality एकदम Grounded, वो Seniority वाला Calmness और Subtle Intelligence, जैसे 80s के किसी Movie में Mature Elder Brother का Role निभाने वाला Hero।

🎩 Shammi Bhai – The Gentleman Rockstar 💥

Shammi Bhai में वो बात थी जो Rare होती है, वो Maturity और Patience, जो Age से नहीं, Life के Understanding से आती है। उनका Residence था Nauroji Nagar में, एक सरकारी कॉलोनी, पर उनके दिल का Size किसी Embassy से बड़ा था। उनकी Mummy Government of India में Job करती थीं, और अकेले पूरे घर को Manage करती थीं, एक सशक्त महिला, जिनका संघर्ष और शालीनता

हम सबके लिए Learning थी। Shammi Bhai वो इंसान थे जो भीड़ में भी पहचान में आते थे, Fancy Hairstyle, Branded Jeans, Copper Bracelet with Buddist Mantra, पर एक Calm Dignity। वो दोस्त नहीं, एक Emotional Mentor थे, और उनके साथ की हर बातचीत एक Mini Counselling Session लगती थी😄।

🎒 Middle-Class Boys with World-Class Souls 💖

हम तीनों अलग-अलग कॉलोनियों से थे, NCERT Campus, SDA, और Nauroji Nagar, पर दिल की ज़मीन एक थी। Middle-class Upbringing की वो ईमानदारी, वो जिद, और वो छोटा सा सपना देखने वाला साहस, सब एक जैसा। हमारे पास ना Walkman था, ना Casio की Digital Watches, पर अपने सपनों की एक छोटी सी डायरी ज़रूर थी। हम Emotional Baggage शेयर करते थे, हम Branded Shoes भी पहनते थे एक दूसरे के, पर Character भी Polished था।

🏡 घरों से दिलों का रिश्ता - SDA, Nauroji Nagar और NCERT Campus की तिकड़ी 🏘️

Anupam के घर जाना मतलब Free-thinking Conversations का Adda। उनके पापा, जो DDA में Horticulture Director के पद से रिटायर हुए, बेहद Humble और Kind। उनके घर की दीवारों से भी Positivity झलकती थी। Shammi Bhai का घर, एक Warm, Humble और Disciplined, Middle Class जगह। उनकी Mummy से Interaction में वो अपनापन था कि लगता था जैसे मैं उनका ही बेटा हूं।

जब Anupam और Shammi Bhai पहली बार मेरे घर आए, और मेरी मम्मी से मिले, तो उनकी चिंता Genuine थी, उन्होंने मेरी Naughty Reputation को Serious लिया😅। मेरे पापा की Simplicity और मम्मी की Straightforwardness ने उन्हें Impress किया, और वहीं से हमारी दोस्ती एक Level ऊपर चली गई, दोस्ती से भाईचारे तक।

⛰️ Mubarikpur Diaries – Naniji, Parathe aur Himachal Wali हवा 🌄

June 1988, मेरे Maternal Village Mubarikpur (Himachal Pradesh) की Trip की Planning हुई। Shammi Bhai और Anupam ने हाँ कर दी, और हम निकल पड़े। Naniji के हाथों से बनाए परांठे, उनकी मुस्कान, और वो पहाड़ी हवा जिसमें जिंदगी थोड़ी Slow और थोड़ी Soulful लगती थी। हम McLeod Ganj भी गए, बाजार, Namgyal Monestry, Bhagsu Falls घूमे। 3 साल लगातार हम ये Trips करते रहे, और हर Trip के साथ हमारा भाईचारा और गहराता गया।

🎟️ "Human Rights Now" Concert - Zindagi ka Rock Anthem 🎤

30 September 1988, "Human Rights Now" Concert, Jawaharlal Nehru Stadium featuring Bruce Springsteen, Peter Gabriel, Tracy Chapman & Rock Machine। हम तीन भाई, इस Iconic Event के हिस्सा थे। भीड़ का जोश, Rock Music की गूंज,

और हमारा Youthfulness, वो एक Dream Night थी। हम तीनों VIP नहीं थे, पर Vibes में सबसे Rich थे।

💼 **Lessons of a Lifetime – जो किताबें नहीं सिखा सकीं, Shammi Bhai & Anupam ने सिखाया** 📚

Shammi Bhai से सीखा:
- संभलकर रहना
- गहराई से सोचना
- किसी को छोटा न समझना

Anupam से सीखा:
- लोगों से Connect करना
- Bold होकर बात करना
- खुद को किसी भी Class में Confident रखना

इन दोनों से मिला:
- Emotional Balance
- Life की Understanding
- और एक ऐसा Comfort Zone जहां Judgment नहीं होता, बस अपनापन होता है।

🧡 **1988 to Forever - ये रिश्ते Calendar के पन्नों से नहीं मिटते** 📅

जैसे-जैसे वक़्त बीता, Career शुरू हुए, Priorities बदली, लेकिन हमारी Bonding आज भी वैसी ही है। हम अब शायद रोज़ नहीं मिलते, पर जब भी बात होती है, लगता है सब कुछ वहीं से शुरू हो रहा है, जहां छोड़ा था। Anupam अब भी वही है, Openness से भरा हुआ। Shammi Bhai अब भी वही हैं, Thoughtfulness और Dignity का प्रतीक।

🌹 **एक अंतहीन Thanks – जो सिर्फ शब्दों का मोहताज नहीं है** 🙏
Dear Shammi Bhai, आप मेरे बड़े भाई से भी बढ़कर हैं। आपने मेरी गलतियों को समझा, मेरी बेवकूफियों को माफ किया, और मुझे बिना बोले Guide किया।

Dear Anupam, तेरी Energy, तेरी Friendship और तेरा दिल, इनसे मैं खुद को आज भी Enrich करता हूं। तू मेरा वो भाई है, जो Crowd में भी "Real" है।

और आप दोनों के परिवारों को, आपने मुझे जितना अपनाया, उसके लिए सिर्फ धन्यवाद काफी नहीं। आपके घर मेरे लिए Second Home हैं।

🎁 **The Greatest Gift I Ever Got – Shammi Bhai & Anupam** 💝
मैं आज जो भी हूं, थोड़ा Confident, थोड़ा Sensible, थोड़ा Grounded, वो आप दोनों की वजह से हूं। मैंने बेशक ₹10 की Mithai खाई, ₹15 का Movie Ticket लिया etc. etc. etc., पर Anupam और Shammi Bhai की दोस्ती, वो Priceless रही।

Anupam और Shammi Bhai...आपका वो भाई...जो कभी ये रिश्ता नहीं भूलेगा...
तरून शर्मा 🙇

"तीन श्रीकृष्ण, एक सुदामा और दिल से लिखी गई दोस्ती की कहानी" ❤️👫✨

ज़िंदगी में कुछ रिश्ते ऐसे होते हैं, जो खून के नहीं होते, मगर दिल के इतने करीब होते हैं कि उनसे मिलने के बाद लगता है, ईश्वर खुद उन

रिश्तों को बनाकर कह रहे हों, "बच्चा, जा मौज ले, तेरी ज़िंदगी के रास्तों पर फ़ूल बिछा दिए हैं।"

मैं एक LDC का बेटा था, पापा का प्रमोशन UDC के तौर पर 1980s के आख़िर में हुआ। मेरे तीन मित्र थे स्कूल के दिनों से, तीनों का Socio-Economic Status हमारे परिवार से कई गुना ऊँचा था। अब क्यों ऐसा हुआ कि ये तीनों मेरे परम मित्र बने, ये तो ऊपर वाला ही जानता है 🙏🏼, लेकिन ये जरूर कहूंगा कि इन दोस्तों और उनके परिवारों ने कभी मुझे यह महसूस नहीं होने दिया कि मैं "कम" हूँ, "छोटा" हूँ 😊।

जब सपनों का दायरा बस उतना था जितना NCERT Campus की चारदीवारी, इन तीनों ने मुझे बड़े सपने देखने सिखाए। ये तीनों, Kamal Gulabani, Jiten Sil और Rishi Malhotra, मेरी ज़िंदगी में आए तीन फरिश्तों की तरह। पर असली जादू तब हुआ जब मुझे सिर्फ ये दोस्त नहीं मिले, उनके परिवार भी मिले, जिनसे मुझे भी बिना शर्त का प्यार मिला।

🌹 **Kamal Gulabani - लाजपत नगर का Super Star**

5th Class से दोस्ती, और भाई ने कभी एहसास नहीं होने दिया कि मैं "कम" हूँ। Kamal के पापा का देहांत बहुत कम उम्र में हो गया था, लेकिन उसकी मम्मी और बड़े भाई-बहनों ने जो परिवार बनाया, वो सिर्फ परिवार नहीं, संस्कारों की यूनिवर्सिटी था। Kamal की मम्मी जी 👩‍👦, एक ऐसी महिला जिनकी आंखों में दुख था, लेकिन चेहरे पर मुस्कान कभी कम नहीं हुई। उन्होंने Kamal को भी यही सिखाया, Status से नहीं

Character से पहचान बनाओ। बड़े भाईया Sanjay Gulabani👨‍👦, हमेशा Supportive और Protective। उन दिनों में जब मैं Lajpat Nagar जाता था, वो मुझे ऐसे Welcome करते थे जैसे मैं उनका अपना छोटा भाई हूँ। एक बार Kamal से बड़े भईया ने हमें Venky College का Annual Day Function पर Invite किया, Vishwa Yuvak Kendra, Chanakaya Puri में, और, मैं Literally Star Struck हो गया था। वो Glamour, वो Crowd...और मैं, एक Clerk का बेटा, मगर भईया Sanjay और Kamal ने मुझे "अलग" महसूस नहीं कराया। Kamal का परिवार मेरे लिए एक Lesson था, पैसा हो या न हो, दिल बड़ा होना चाहिए। □

🏛 Jiten Sil - Hauz Khas का Rock Star

4th Class से दोस्त, और Delhi के हाई-प्रोफाइल इलाके Hauz Khas में रहता था। वहाँ की गली भी मुझे Paris लगती थी उस ज़माने में 😄। 👨‍✈️ Jiten के Dad, Air Commodore थे IAF में। सेना के अफसरों की तरह हो सकता है सख्त हों ऑफिस में, पर घर में एकदम Friendly। Delhi Gymkhana Club में Thursdays को जब Jiten मुझे भी ले जाता था, तो उसका Confidence देखकर मैं भी Confident हो जाता था। वो कहता था, "Don't behave like a guest, You're one like me here." उसकी मम्मी जी, Mother's International School में Teacher, पर हो सकता है जितनी Strict स्कूल में थीं, उतनी ही ममता से भरी घर पर। उनके घर पर खाना खाते वक़्त मुझे कभी Hesitation नहीं हुई, क्योंकि वो आंटी जी के हाथ से ही परोसा हुआ खाना होता था। 👬 उसके भाईया, एक भाईया Chennai में और दूसरे "Network" नाम की उस जमाने

की बड़ी Company में Senior Position पर। जब Jiten के भाईया USA से MBA करके लौटे और मेरे लिए भी University of Tulsa की Sweatshirts और Caps लाए, वो सिर्फ एक Gift नहीं था, वो था मेरे Dreams को Validate करने वाला Gesture। Jiten के परिवार से मैंने सीखा कि सपने देखो, और उन्हें सच करने के लिए खुद को तैयार करो।

🏠 Rishi Malhotra - NCERT Director's Bungalow का Prince

1984 से Friend, पढ़ता था Modern School, Barakhamba Road में और रहता था NCERT Director's Bungalow में अपने परिवार के साथ। लेकिन रुकिए...वो "Director's Son" वाला Ego उसमें एक Gram भी नहीं था! 👨 Rishi के पापा, Prof. Prayelal Malhotra, NCERT के Director, पर इतने Down to Earth कि मुझे हमेशा "बेटा" कहकर बुलाते थे। Rishi के साथ साथ, उनका मेरे लिए भी UK से क्रिकेट बैट लाना, उनके Lawn में क्रिकेट खेलना और Diwali पर पटाखे जलाना, मेरे लिए किसी Award से कम नहीं था। 👩 Rishi की मम्मी जी, Modern School के Primary Branch की Principal। इतनी Warm कि जब भी मैं उनके घर जाता, वो मुझे Rishi के जैसे ही Treat करती थीं। किसी को फर्क नहीं पड़ता था कि मेरे पापा कौन हैं, मैं कौन हूँ। 👩‍🎓 Rishi की दीदी, History की प्रोफेसर CVS में और Graceful, जैसे मेरी ही दीदी हों। Rishi के साथ मैंने पहली बार Stevie Wonder का Part Time Lover गाना सुना, VCR पर English Movies देखीं, और JLN Stadium में India vs Pakistan का वो Legendary 1987

Cricket World Cup Opening Ceremony का मैच Live देखा। और जब वो 1988 में Singapore से मेरे लिए Levi's Jeans, Benetton Shirt और Reebok Shoes लाए, तो खुद से कहा, "भाई, तू सुदामा है और सामने खड़ा दोस्त तेरा श्रीकृष्ण!"

🙌 श्रीकृष्ण-सुदामा वाली दोस्ती, सिर्फ कहानियों में नहीं होती। श्रीकृष्ण और सुदामा की कहानी मुझे सिर्फ इसलिए नहीं याद रहती क्योंकि उन्होंने एक गरीब दोस्त की मदद की थी, बल्कि इसलिए, क्योंकि श्रीकृष्ण ने कभी सुदामा को "गरीब" नहीं समझा और मेरे इन तीनों मित्रों ने मुझे बिना शर्त और शर्म के अपना Chuddy-Buddy Friend समझा, मैं शर्मा जो था 🤣।

ये तीनों दोस्त और उनके परिवार मेरे लिए सिर्फ अच्छे लोग नहीं थे, ये थे मेरी Life Transformation का Platform।

मैं थोड़ा बड़ा हुआ और कुछ समझ आई, तो जाना कि सच्चा रिश्ता वो होता है जहाँ Status Matter नहीं करता, जहाँ दोस्ती में कोई Comparison नहीं होता, जहाँ दिल से दिल जुड़ते हैं। और, मेरी किस्मत थी कि मुझे तीन-तीन श्रीकृष्ण मिले, और उनके साथ पूरी-पूरी Royal Families भी। 😇👑

🧡 Kamal, Jiten, Rishi के लिए "Thank you" कहना बहुत छोटा है। उन्होंने मुझे सिर उठाकर Confidently चलना सिखाया, सपने देखने की हिम्मत दी, और वो दुनिया दिखाई जहाँ पहुंचना पहले सिर्फ सपना था।

इन सबने मुझे अपनाया, सजाया और सिखाया और इस सफर का हर कदम मैं आज भी अपनी रूह में महसूस करता हूं। आज जो भी हूं, इन मित्रों और उनके परिवार का "बहुत ज्यादा" नहीं, तो "बहुत" तो योगदान है।

आज भी सपना सा लगता है कि कैसे एक LDC का बेटा भी Director Bungalow में क्रिकेट खेल सकता है, फिल्में देख सकता है और पटाखे जला सकता है, कैसे एक ₹8 की Hot Chocolate Fudge ज़िंदगी भर याद रह सकती है (Credit: Kamal Gulabani) और कैसे सुदामा को श्रीकृष्ण सिर्फ Mythology में नहीं, Delhi की गलियों में भी मिल जाते हैं।

Kamal, Jiten और Rishi का एक सच्चा, Grateful और भावुक दोस्त... तरून शर्मा...जो कभी ये सब नहीं भूलेगा 😊❤️।

"NCERT Campus: वो Colony नहीं, एक जीती-जागती कविता थी"! 🏡✨

मेरे प्यारे यारों, 💌

कभी-कभी ज़िन्दगी की तेज़ रफ्तार में जब अचानक दिल कहता है, "बस, अब थोड़ा रुक जा", तो आंखें बंद करते ही सबसे पहला जो दृश्य उभर

कर सामने आता है, वो है NCERT Colony की वो सुनहरी दुनिया🌆🏘️।

NCERT Colony कोई Real Estate Project नहीं थी, वो एक जीती-जागती Time Machine थी, जहाँ हर गली, हर कोना, हर सीढ़ी हमारे बचपन के किस्सों से भरा पड़ा है, वो तो हमारी पहली दुनिया थी, जहाँ हम बड़े नहीं हुए थे, हम बनाए गए थे।। वो शामें...जब घड़ी में पाँच बजते ही स्कूल बैग को दीवार से दे मारा जाता था🎒➡️🧱, और फिर हम मैदान की ओर दौड़ पड़ते थे जैसे कोई Olympic Final खेलने जा रहे हों🏃🔥। याद है वो समय? जब "शाम हो गई, चलो खेलने", सिर्फ एक Call नहीं, एक आत्मा की पुकार हुआ करती थी📢🌆। और, उस मैदान की मिट्टी, वो किसी FIFA ग्राउंड से कम नहीं थी, कसम से। कभी बैट बॉल, कभी छुपन-छुपाई, और कभी बेमतलब बस दौड़ लगाना, बस इतना पता होता था कि ये पल हमारे हैं, और इन पलों की कोई कीमत नहीं, बस यादें बनानी हैं🏏🎲👣।

NCERT Caampus की हर सड़क पर हमारी आवाज़ गूंजती थी, कभी हँसी बनकर, कभी लड़ाई की चीख, तो कभी गप्पों की गूंज😄📣। और अब? वही सड़के चुप हैं...जैसे वो भी हमें बुला रही हों, "आओ फिर से खेलो, फिर से शोर मचाओ🏡🌙। हर गली, हर पेड़, हर नुक्कड़...हमारी कहानियों का हिस्सा था 🌳🏡।

छत पर पतंगबाज़ी एक युद्ध हुआ करता था🪁⚔️, जहां मांझे की धार और 'बो काटा' की चीखें पूरे मोहल्ले में तैरती थीं। पीछे से मम्मी की डांट

भी आती थी “गिर जाओगे! नीचे उतरो!” मगर हमारी टोली अडिग रहती थी, क्योंकि डोर के उस पार दोस्ती बंधी थी, और वो ज्यादा कीमती थी✨❤️। फिर वो स्कूल की यूनिफॉर्म से निकल कर जब धीरे-धीरे हम Teenage की टेढ़ी गलियों में कदम रखते थे...तो भी वो कॉलोनी ही हमारी छांव थी🌳👣। पहला Crush, पहला झूठ, पहली हार, पहली जीत, सब कुछ उसी ज़मीन पर दर्ज हुआ।

NCERT Campus सिर्फ चारदीवारी नहीं थी, वो हमारी पहली दुनिया थी, जहां सपने देखे भी जाते थे, और पूरा मोहल्ला उन्हें पूरा करने के लिए ताली भी बजाता था👏🌠। अब जब WhatsApp ग्रुप में “Miss Those Days” लिखते हैं...तो वो एक लाइन नहीं, एक टीस होती है, जो उन गलियों से निकल कर दिल में चुभ जाती है□📲।

NCERT Campus के नुक्कड़ की वो बेंच...जहाँ पहली बार दोस्ती की कसम खाई थी, और आइसक्रीम बाँटी थी🍦🤝, अब वहाँ सिर्फ धूल है...और हम, कहीं दूर, बहुत दूर...काश, फिर एक शाम मिलें...ना कोई Mobile Phone हो, ना कोई Meeting की जल्दी...बस हम हों, वही पुराने यार, वही Chit Chatting, वही खिलखिलाती हँसी, और ऊपर वही पुराना आसमान, गवाह हमारे बचपन का 🌌🧒।

NCERT Campus अब कोई भौगोलिक जगह नहीं रही, वो अब दिल में बसा एक Living World है, जहाँ हर ईंट पर एक दोस्त की याद है, हर खिड़की से झाँकता है बचपन, और हर दरवाज़े के पीछे आज भी एक “चल मैदान में” की आवाज़ आती है...□🏃। यारों, वक्त कितना भी बदल

जाए...पर हमारा NCERT Campus, हमारा बचपन, और हमारी यारी, ये तिकड़ी अमर है 🔱। और कभी-कभी, यही तीन चीजें इंसान को याद दिलाती हैं कि ज़िंदगी सिर्फ़ आगे नहीं बढ़ती...कभी-कभी पीछे जाकर फिर से जीना भी ज़रूरी होता है।

शरारतें & Childhood

"शरारतों का सम्राट और मम्मी की मार का गोल्ड मेडलिस्ट - मेरा बचपन का Real WWE!" 🥇😆

बचपन से मैं था एक Next Level का शरारती तत्व😂, जैसे 'शरारती बच्चों में भगवान', और Login कर लिया हो इस धरती पर। बचपन से ही मेरी शरारतें ऐसी थीं कि शैतान भी मुझे देखकर कहे, "भाई तू ही जी ले इस धरती पे, मैं तो चलूं वापस नर्क!" 😈

मम्मी तो जैसे दिन की शुरुआत पूजा से नहीं, मेरी सुताई से करती थीं...और शाम को आरती की जगह मेरा मुंह लाल करके ही सुकून मिलता था उन्हें। बचपन में जब मुझे नहला-धुला कर मम्मी Bed से बांध देती थीं, हाँ, Literally, रस्सी से एक पाँव से Bed में बांध देती थीं🛏️, ताकि मैं बाहर जाकर मिट्टी में ना खेलूं...लेकिन भाई, मेरी आत्मा तो वहीं बसती थी। थोडा़ चलने लगा तो जैसे ही मम्मी इधर उधर हों, मैं उंगलियों से गांठ खोलता और चुपचाप निकल लेता...बाहर मिट्टी में WWE कर रहा होता था। नतीजा? मिट्टी से कपड़े और मैं फिर से गंदा और वो थप्पड़ों वाला Welcome जो सिर्फ मम्मी के ही पास होता है□।

4-5 साल का हुआ, फिर शुरू हुआ मेरा "Bathroom & Kitchen Window Escape Plan" कंचे खेलने के लिए...पकड़े जाने पर वो पिटाई

होती जो पड़ोस वाली आंटी को मजबूर कर देती थी मुझे बचाने को उस मार से।

एक बार तो Cricket खेलते हुए दोस्त के Thighs पे बैट मारकर Tattoo बना दिया, बिलकुल बैट छापकर, क्यूँकि वो मेरे छोटे भाई को बहुत देर से परेशान कर रहा था, मम्मी ने वो Bat वापस मुझ पर Use किया, चप्पलों के साथ साथ।

फिर एक बार...हद पार कर दी मैंने। 3rd Class में स्कूल जाने का मन नहीं था तो मम्मी ने कूट के भेजा...लेकिन Genius दिमाग ने Plan बना लिया, स्कूल के Gate से पहले ही Sharp Right लिया और School के पीछे जाकर जैसे तैसे पूरा School Time बिताया। स्कूल घर से कोई 60-70 मीटर दूर था...मेरी किस्मत मे उस दिन एक बार और मार लिखी थी, Mendiratta Ma'am पहुंच गईं घर...पहले तो मम्मी ने उतारी मेरी School Dress घर आते ही, फिर मेरी इज्ज़त...घर के अंदर मैं बना उस दिन Racing Horse और मम्मी Jockey...अब मार ही पड़ेगी, पूजा तो की नहीं जाएगी मेरी🤪।

मेरी अपनी वजह से Mummy के गुस्से का Thermostat High रहता था, और पिटाई के बाद गुस्से में मैं छोटे भाई को ज़ोर से चूंटी काट देता, फिर तो पिटाई की Double Shift पक्की😢।

कभी Toothpaste खाकर आधा कर देता था, कभी मम्मी की Lipstick से Bathroom के दरवाजे के पीछे कलाकारी करता, और कभी मिट्टी की अपनी गुल्लक से मम्मी की स्वेटर बनाने वाली सिलाई से पैसे निकाल

लेता। पता तब लगा जब Money Bank भरने का नाम न ले। हर बार कम से लेकर हर Level की भरपूर पिटाई😆। मेरा शरारतें करने से मन नहीं भरता था, और मम्मी का मेरे को पीटने से😂।

गर्मियों की छुट्टियां ननिहाल में बिताने का Excitement अलग ही होता था😍, पर यहां भी शरारतें और मार मेरा पीछा नहीं छोड़ती थी😳। मेरे से 3 साल छोटी Sister वहीं रहती थी, वहां वो शिकायतें करती मेरी और मुझे मार पड़ती😢। एक ऐसे ही 1979 के Summer Holidays में एक सुबह पिटने के बाद मैंने दिमाग में Revenge Mission प्लैन कर लिया😎। दोपहर में सबके सोने का इंतज़ार किया, कैंची✂️ उठाई, बहन की 2 में से 1 चोटी काटी और दूर खेत में गड्ढा खोद कर उसका Funeral कर दिया💐। वापिस दबे पांव अंदर घर में आया और कैंची को जगह पर रखी और सो गया। बहन जगी, रोई, और Mummy ने इस बार Experiment किया पेड़ की पतरी संटी का, कुछ Stripes जैसे Tattoo बना दिए मेरे शरीर पर बिना अतिरिक्त Expense के😆।

कोई दो साल बाद के हिमाचल में Summer Holidays के दौरान, गुस्से में लाल मिर्च का पूरा Spoon भरकर बहन के मुंह में डाल दिया, और कर दिया हाथ से मुंह बंद😳! हस बार तो नानीजी ने भी पिटने से नहीं बचाया, उस दिन तो मम्मी ने मुझे आंखों से Laser निकाल के मारा😵, इस बार मम्मी थीं WWE की Undertaker और मैं Kane🤣।

बताओ, ये कोई इंसाफ की दुनिया है? शैतानियां मेरी, Ideas मेरे, चाचा चौधरी वाला तेज दिमाग मेरा😎...और पिटाई भी मेरी🤔! 1 महीने में

Average मैं 7-8 बार तो पिटता ही था, मतलब साल के 90-100 दिन...Olympic Level की धुलाई हुई है मेरी 17-18 की Age तक। कुल मिलाकर मैं पिटने में और मम्मी मुझे पीटने में, दोनों ही Gold Medalist रहे🥇😆।

हमारे घर झाड़ू की Shelf Life 20 दिन से ज्यादा नहीं होती थी और चप्पल की 3 महीनें🤪, कारण, मैं 'शैतानों का बेताज जिल्ल-ए-ईलाही'👑😎। लोगों के घर झाड़ू🧹 होते थे सफाई करने के लिए, और हमारे घर में ज्यादातर मेरी Spinal Cord सीधी करने के लिए🤪😆। जब कभी चप्पल, झाड़ू छुपा देता था, तो Forever Available बेलन होता था Alternative मम्मी के पास, बतलब पिटाई, सुताई, धुलाई से बचना Impossible😔।

पिटाई के बस 15 Minutes के अंदर मेरा रोना धोना Off😴, और अगली नालायकी सोचने का Mode On🧐। वो पंजाबी में एक कहावत है जिसे मेरे से बेहतर किसी ने नहीं जिया, "दो पेईयां, किधर गेईयां"😆। भारत की मिट्टी का असर ऐसा ही होता है, Body में मजबूती किसी अच्छे से अच्छे TMT सरिये से भी ज्यादा💪🤣।

मम्मी ने हर पिटाई से मुझे बेहतर बनाने की कोशिश की, नहीं तो Aliens मुझे दूसरी दुनिया ले जा चुके होते🤣। आज जब उन पिटाइयों, सुताईयों, धुलाईयों को याद करता हूँ🤔, तो लगता है हर मार में उनकी ममता छुपी थी, हर चप्पल में उनकी Tension थी, और हर झाड़ू में उनका 'तू सुधर जा' वाला प्यार❤️।

हां, भले ही उस वक्त शरीर और हड्डियों में दर्द होता था, लेकिन जब समझदार हुए तो Realize हुआ, वो हर पिटाई, सुताई, धुलाई मेरे Better Version के लिए थी❤️। अगले जन्म में भी अपनी इसी Mummy का पिटाई, सुताई, धुलाई वाला बेटा बनना पसंद करूँगा😊।

😂 एक Backbencher की महागाथा 😂

मेरी दर्दनाक, मेरी भाषा में बोलें तो मस्त कहानी, Class KG से लेकर स्कूल पास करने तक की।

मुझे याद है जब मैं पहली बार स्कूल गया था, क्लास KG में📚। बाक़ी बच्चे रो रहे थे😢, किसी को मम्मी चाहिए थी👩‍👦, किसी को बोतल🍼...और मैं? मैं सिर्फ़ ये सोच रहा था कि क्लास में सबसे अच्छा कौन सा कोना है जहाँ से मैं पूरे क्लास पर राज कर सकूं👑। और तभी मेरा पहला प्यार हुआ Backbench से❤️।

🗣️ भयंकर बातूनी होने का स्वाभाविक टैलेंट:
बचपन से ही मेरा ध्यान पढ़ाई📖 में नहीं, पढ़ाने में था, दूसरे बच्चों को, बातों में उलझाकर🤪। बगल वाला बच्चा अगर पढ़ाई करने की कोशिश करता, तो मैं उसे ज़रूर कोई ऐसी बात करता जैसे, "पता है कल फलां के पालतू तोते ने 'गुड मॉर्निंग' कहा!"🦜

अब बेचारा बच्चा ध्यान कहाँ लगाए🤯? दो चार दिन मे वो भी मेरे रंग में रंग जाता। अपना तो वो था, "खुद तो डूबेंगे, तूझे साथ लेकर डूबेंगे🤣।

रिजल्ट? टीचर की बर्फ़ सी ठंडी निगाहें❄️👩‍🏫, और फिर...

- कुर्सी पर हाथ उपर करके खड़े हो जाओ!🪑🙋‍♀️
- क्लासरूम गेट पर खड़े हो जाओ हाथ उपर करके!🚪😬
- "मुर्गा" बनो टीचर की टेबल के पास!🐔
- या फिर, हाथ आगे करो और Metal Scale से खटाक!📏👏

लेकिन क्या शर्म आई मुझे? बिल्कुल नहीं😌✌️। बल्कि वो समय तो Highlight होता था मेरा, Class का Centre of Attraction🎯! सबकी निगाहें मुझ पर...और मैं अपनी Imaginary रेड कार्पेट पर चल रहा हूं🚶।

👩‍🏫 Savitri Ma'am और "लड़के, तू अब अकेले बैठ" Policy:

क्लास 7th की बात है। Savitri Ma'am ने मेरी शरारतों से परेशान होकर एक क्रांतिकारी फैसला लिया, "इस लड़के को अब लड़कियों की लाइन में, आखिरी बेंच पर अकेले बैठाया जाएगा"🚷🪑।

अब KV JNU वालों को पता होगा, कि क्लासरूम में पहला लाइन वाला कोना, जो गेट के पास होता था, उसमें 3 ही Rows होती थीं। दो Row में 2-2 लड़कियां👧 और तीसरी में मैं, बोलें तो "राजा बाबू", अकेला 😎। अब सोचिए, अकेले बैठा हूं, तो क्या सुधर जाऊंगा? अरे जाने दो, मेरे को हमारे KV JNU के प्रिंसिपल Col. चौहान का डर नहीं सुधार सका😂।

अब मेरे दिमाग में नयी नयी नालायकियों की खोज शुरू हुई🧠🔍...जूते के अंदर एड़ी वाली जगह को रगड़कर अजीब-अजीब आवाज़ें निकालना👟🎶, Class के बच्चों को लगा करता कि कोई अलौकिक शक्ति है👻...Scale को डेस्क पर रखकर ड्रम जैसा बजाना🥁📏, थोड़ी सी Practice के बाद "मेरा नाम जोकर" का Soundtrack बजा देता था🎵...चुपचाप टॉफी निकालकर आगे फेंकना To Distract Others🍬, कभी लड़कियों की टेबल पर, कभी बोर्ड के पास🎯...कागज़ के छोटे गोले बना कर पिचिंग प्रैक्टिस⚾📄, लड़कियों की चोटी के ऊपर Perfect Landing 🎯।

🔁 **Transferable Legacy - Naughty Seat Policy:**

Savitri Ma'am ने शुरूआत करी और आगे की सब Class Teacher Ma'am ने उसे Follow किया...सिर्फ़ मेरे लिए ऐसा सिस्टम बना दिया जैसे मेरी शरारतें कोई Transferable Disease हों😷। क्लास 8th, 9th, 10th...हर साल क्लास बदलती, मगर मेरे लिए वही स्पेशल रूम सर्विस..."इसे पिछले साल की तरह लड़कियों की Row में आखिरी बेंच पर अकेले बिठा दीजिए"👧🙋! कभी-कभी लगता था कि मैं KV JNU की "Girl's Row में Boy's Scholarship" का एकलौता और पहला Candidate हूं🏅🤷।

😎 **मेरी Bollywood Thriller जैसी कहानियां सोचने की Creativity:**

वैसे तो मैं बहुत Rarely स्कूल बंक करता था, सच्ची में, मान भी लो भई😇, लेकिन कभी-कभी Movie का क्रेज़ ऐसा होता था, खासकर

धर्मेंद्र की, कि स्कूल की घंटी नहीं, सिर्फ Sangam, Uphaar या Kamal Cinema की खिड़की की टिकट वाली घंटी सुनाई देती थी🔔🎟️। तो उस दिन भी 8th क्लास में एक जबरदस्त मूवी लगी थी Sangam Cinema में 🎥, धर्मेंद्र की लोफर, जैसा मैं😎🤣। Movie देखने के बाद Feeling आ रही थी, "Bhai, Life Set Hai।" घर पहुंचने के लिए मैं मस्त बैठा था बस नं. 511 में, ड्राइवर की बाईं साइड वाली VIP Front Seat पर😎🚌। RK Puram सेक्टर 3 पर बस रुकी🛑...और, सामने से Road Cross करती दिखीं...कौन? Savitri Ma'am😱, और, क्या टाइमिंग थी यार, दोनों की आँखों से आँखें 👀 मिलीं और पूरी फिल्म की Climax फीलिंग आ गई..."The End KV JNU से"।

अंदर ही अंदर खुद से डायलॉगबाजी..."Tarun बेटा, तू तो गयो...कल तो History लिखी जाएगी तेरे नाम की स्कूल में"😭⚰️। 🧠 Plan Mode On, चाचा चौधरी वाला दिमाग चालू...रात होते-होते मैंने एक Masterplan बना लिया, ऐसा Plan जिसमें Oscar Winning Performance शामिल होनी थी अगले दिन🎭।

सुबह 8:15 बजे जल्दी स्कूल पहुंचा⏰, School Bag रखा क्लास में🎒 और फिर March करता हुआ पहुंचा Principal Room, Col. चौहान जी के पास..."Sir, मुझे आपसे कुछ ज़रूरी बात करनी है"...Voice Modulation = Full Emotional...अब अपनी Story चालू🎥, "Sir, कल मैंने स्कूल बंक किया क्योंकि मैं Savitri Ma'am से डरता हूँ...मैनें English का Homework नहीं किया था😓"...Col. Chauhan थोड़ा Shocked हुए और वही अपनी कड़क आवाज़ में, "कहाँ बिताया पूरा

School Time?"...पहले झूठ का चौका मारा था, अब मारा छक्का..."Sir, JNU के जंगल में चला गया था...स्कूल के पीछे वाले जंगली झाड़ियों वाले जंगल में, अकेला घूमता रहा!"...अब Col. Chauhan ने थोड़ा ज़ोर से टेबल पर रखी घंटी पर मारा, Peon सोहन सिंह हाजिर हुआ तो बोले "Savitri Ma'am को बुलाकर लाओ Staff Room से"📢...और 2-3 मिनट में Savitri Ma'am हाजिर, Full Grace में, पर उन्हें क्या पता था कि Courtroom Drama चालू हो चुका है⚖️👦⚖️...Col. Chauhan का डायलॉग चला एकदम गंभीरता से और गुस्से से..."आप बच्चों को इतना डरा देती हैं कि ये स्कूल ही बंक कर जाते हैं"😠, अगर इसे कोई ज़हरीला सांप काट लेता, या कोई उठाकर भीख मंगवाने ले जाता तो ज़िम्मेदार कौन होता🤔?"...😳अब Savitri Ma'am की आंखों में Guilt वाला क्लोज़अप, "Sorry Sir, Sorry Sir, आगे से ध्यान रखूंगी Sir"🙇‍♀️🙏...और उधर मैं अंदर ही अंदर..."मधुमुस्कान, बच गया साला आज भी Smart Kid" 😏🙌।

जब Movie देखनी हो और पकड़े जाओ, तो Story ऐसी बनाओ, कि Villains भी Sympathy में आ जाएं🎬! और हां, अगर आपमें थोड़ा सा भी 'चाचा चौधरी वाला तेज दिमाग़' है, तो आपका बचना तय समझो, चाहे Scene कितना भी Tight क्यों न हो😁💡। तो ऐसे बचा मैं उस दिन...Sangam Cinema के शो से निकला था हीरो बनकर, और स्कूल में घुसा था वकील बनकर🕶️📚😂।

👮 **Col. चौहान भी नहीं छोड़े:**

एक दिन मैं 9th Class में बड़ी Backbencher Energy में बैठा था, और पीछे से Col. चौहान सर की गरजती आवाज़ आई, "Oye Hero! बाल तेरी कॉलर को छू रहे हैं, क्या तू मॉडलिंग करने आया है स्कूल में"😳? मैं तो वैसे ही बालों को थोड़ी स्टाइल में रखता था...पर सर को क्या पता, ये तो Science Practical के लिए Required "Friction Test" था✌️।

अब Col. Saab ने वो अपना पुराना रिवाज निभाया, जो हर ऐसे बच्चे के साथ निभाते थे, ले गए अपने रूम के यहां, बुलाया सोहन सिंह "लालची" को, जेब से ₹5 का नोट निकाला💵, Peon सोहन सिंह को पकड़ा दिया और आदेश हुआ, "इसको ले जा, सामने Old JNU Campus में उसी नाई की दुकान पर जहां सब को ले जाता है, वहीं से 'कटोरा कट' करवा कर लाओ इसका"😂✂️।

अब यहीं पर मेरा शैतानी दिमाग शरारती मोड में एक्टिव हो गया, चाचा चौधरी की कहानियां पढ़कर वैसा ही तेज हो चुका था🧠⚡ और पता था सोहन सिह लालची है, मैंने तुरंत Peon Bhaiya से कर ली सेटिंग🤝..."देखो भैया, आपके 10 बंडल बीड़ी🚬 के आएंगे ₹2.50 के और 8-10 दिन चल जाएंगे, तो आप ₹2.50 रख लो और ₹2.50 मुझे दे दो...मैं NCERT कॉलोनी में घर के पास वाली दुकान से कटवा लूंगा, पापा के पैसे से" 😎💸। बीड़ीयों के 8-10 के फंड का जुगाड़ दिखते ही सोहन सिंह की हो गई बल्ले-बल्ले💃, और मेरी भी, डील हो गई फाईनल। अगले दिन Bunk और संगम सिनेमा में Morning Show में "सुहाग" और Afternoon Show में देखी "प्यार झुकता नहीं🎞️।

स्कूल में पढ़ाई चाहे जितनी भी की हो, लेकिन "Field-Level Negotiation & Resource Management" मैंने 9th में ही सीख ली थी😎💼। और, Col. चौहान को तीसरे दिन दर्शन दिए "कटोरा कट" कटवारिया सराय वाली नाई की दुकान से करवाकर, पापा के पैसों से🤫✂️। तो मतलब हुआ कि जब जब Backbencher का दिमाग़ चलता है, तब तब ₹5 से दो बंदे खुश और आबाद😊।

😎 गर्व से कहता था और कहता हूं – मैं Backbencher था:

जो लोग कहते हैं कि आगे बैठो तो ध्यान लगता है, उन्हें क्या पता, पीछे बैठकर दुनिया कितनी खूबसूरत लगती है😍🌍...ब्लैकबोर्ड दूर से देखने से ही रोचक लगता है...टीचर की बातें Background Music लगती हैं🎶...और सबसे बड़ी बात, जब कोई नई टीचर आती थी, तो मैं Invisible हो जाता था□🧢।

मेरे जैसे Backbenchers के भी Contributions होता है Class में, जैसे मेरे थे...अब मुझे Col. चौहान ने Oscar नहीं दिया 🏆, तो इसमें उनकी दिमागी नज़र कमज़ोर होने का दोष है, मैनें तो एक मौका दिया था उन्हें🤔🤪!

Backbencher होना शर्म की बात नहीं, ये तो एक कला है, Disturbance की कला🎨, Distraction की विद्या📚 और दिमाग़ी दंगल का Ultimate Combination🤹🧠!

अगर आप भी कभी Backbencher रहे हैं, तो दिल पे हाथ रख कर कहिए..."हम भी वही थे, चुपचाप नहीं, पूरे क्लास के Entertainment Minister"🕺🎤🎬!

In Nutshell, "Backbenchers की जय हो" 👍🏻🙏🏻🤣!

बचपन की 2nd Saturday व Sunday की छुट्टियां और शामें और वो अमर खेलों की यादें! 🏃🪁💭

कोई 8-9 साल की उम्र तक, पूरा साल, Half Yearly और Final Exams के दिनों और गर्मियों की छुट्टियों को छोड़कर, मेरे और मेरे जैसों के अंदर कोई न कोई Game Mode On रहता था सरकारी कालोनियों में, क्रिकेट के साथ साथ। बारिश हो, गर्मी हो, सर्दी हो, स्कूल से आते ही स्कूल बैग पटककर खाना खाकर और कपड़े बदलकर बाहर भागना 😄| हर Season में किसी न किसी गेम का सिलसिला, और हर दिन नया Excitement I

🟡 **कंचे** - Childhood Sniper Skills 😎
जैसे ही कंचे खेलने की जगहों पर कदम रखते, सबसे पहले जेब से चमकते हुए कंचे निकलते थे। उन्हें उँगलियों से इस Finesse के साथ निशाना बनाकर मारते थे, जैसे कोई प्रो Sniper हों 😂😎। और, जब कंचे जीत लेते थे, तो वो खुशी वैसी ही होती थी जैसे किसी ने IPL ट्रॉफी पकड़ा दी हो 🏆😂। मम्मी कई बार बाहर जाते वक्त बाहर से कुंडी

🔒लगाकर घर में बंद कर जाती थीं, मेरे कंचे खेलने की आदत से बहुत परेशान रहती थीं 😆। Type 1/1 Ground Floor पर था, जब तक Quarters की खिड़कियों पर Grill नहीं लगी थी ▯। बचपन में कंचे खेलने का जो नशा था ना मेरे को, वो किसी भी कुंडी से नहीं रुकता था 😤। Kitchen की खिड़की से बाहर झाँकता और अगर दोस्त कंचे खेलते दिख जाते, तो बस फिर क्या, Operation Escape शुरू हो जाता था 😎🕵️।

या बाथरूम, या किचन की खिड़की से...पैर घुमाया...और फिर...स्लाइड होकर बाहर ▯🕴️। थोड़ी मुश्क़िल होती थी, पर असली खिलाड़ी कभी हार नहीं मानता 💪😂। बाहर पहुंचते ही लगता था जैसे James Bond का Mission Complete हो गया हो 😎🎉। और फिर कंचे खेलना शुरू।

जब जल्दी हार जाता था या दूसरे को जल्दी हरा देता था, तो वापिस उसी रास्ते से घर के अंदर, और सोचना, "मम्मी से बच गए आज" 😂 । दो बार पकड़ा भी गया, और तब दोनों बार भरपूर पिटाई भी हुई मम्मी से और दोनों बार मेरे कंचों से भरा 1 किलो वाला डालडा का डिब्बा कहीं दूर फेंक आईं मम्मी 😢😭।
बचपन की वो खिड़कियाँ सिर्फ Escape Route नहीं थीं, वो हमारी आज़ादी की सीढ़ियाँ थीं, सिर्फ़ कंचों के लिए, मस्ती के लिए...और थोड़ी चप्पलें खाने के लिए भी 🤭❤️।

🌀 लट्टू – Desi Beyblade

रंग-बिरंगे Top वाले लट्टू को सफेद रस्सी से घुमा के जब उसे ज़मीन पर छोड़ते थे, तो वो गोल-गोल घूमता और लगता जैसे कह रहा हो, “Catch

me if you can!” जब हममें से कोई उसे हाथ में पकड़ के नचाता था, तो बाकी के सब कहते, “भाई तू तो Pro है” 😎। लेकिन कई बार इतनी ज़ोर से Spin करते कि लट्टू की कील निकल जाती और वो उड़कर किसी की खिड़की पर जा लगता। फिर शुरू होता भागने का Competition। 😂🏃

▯ गिल्ली-डंडा - Desi Version of Cricket

गिल्ली को डंडे से मारना और उसे जितना दूर फेंक सको, उतना ही बड़ा Champion बनने का Feel आता था। कभी-कभी गिल्ली इतनी दूर उड़ती थी कि किसी Aunty Ji की बालकनी में चली जाती और फिर हम सारे बच्चों का Mission बन जाता, “Recover the Gilli” 🎯 और अगर Aunty Ji ने गिल्ली रख ली, तो Game का पूरा Emotion ही चला जाता! 😭

▯ पिट्ठू - Hit, Dodge-Run, Set & Win

पिट्ठू खेलने का अपना ही Thrill था। पत्थरों के टावर को गिराना, और फिर Ball से बचते हुए उसे दोबारा जमाना, Pure Action Scene लगता था। कभी-कभी तो Ball इतनी जोर से लगती थी कि कुछ देर के लिए Game भूल जाते थे और पीठ पकड़ कर बैठ जाते थे 😳। लेकिन अगले ही Moment फिर से Ready! 💪

🔗 Chain Game - Bonding and Betrayal 😜

ये वो Game था जहाँ दोस्ती और चालाकी दोनों साथ-साथ चलते थे। Chain बनाकर जब घिर जाते, तो Doge देकर फिर जो दौड़ना पड़ता था ना बचने के लिए...बिलकुल ऐसा लगता था जैसे कोई Real Life

Temple Run चल रहा हो 😂। और मम्मी की आवाज़ पीछे से, "कब से चिल्ला रही हूँ, घर आ जा" 😤। लेकिन हम तो सुन ही नहीं रहे होते थे...एकदम Lost in the Game।

🪁 पतंगबाज़ी - From Ground to Sky 💥

15 अगस्त की तैयारी जुलाई से ही शुरू हो जाती थी। हर शाम छत पर चढ़ना, पतंग, मांझा, सद्दी, चरखड़ी, और बस "बो काटा" की आवाज़ में मगन रहना। कभी-कभी दो पतंग एकसाथ काट लेते तो Ego Level आसमान तक पहुँच जाता था 😎। और फिर नीचे गली में गिरती पतंग को पकड़ने के लिए Usain Bolt जैसी Speed से दौड़ लगती थी 🏃💨। लेकिन पतंग लाने से पहले अगर मम्मी ने पकड़ लिया तो..."रात के खाने का भी होश है तुझे या सिर्फ पतंग उड़ानी है?", और फिर आता Ultimate Punishment, कल से कोई पतंगबाजी नहीं 😭।

😅 और हर बार आती थी मम्मी की सुपरपावर।

जब हम खेलने में इतनी देर कर देते थे कि देर शाम हो जाती थी, तो मम्मी का गुस्सा Full Form में बाहर आता था..."Homework किया? Uniform तह लगाकर जगह पर रखी? खाना खाया? या सिर्फ ये सब खेलेगा तू?" और फिर...झाड़ू या चप्पल का Graceful Appearance होता था। मम्मी द्वारा फेंककर मारी चप्पल हमारे समय का वो Drone होता था, जिसका निशाना कभी चूकता नहीं था। 😅🦸‍♀️

बड़े हुए तो पता लगा इन एकदम सस्ते खेलों के पीछे छुपे हुए Scientific कारण और मानसिक-शारीरिक विकास के तथ्य...🤔

- **कंचे** - Focus और Eye Hand Coordination 🧠🎯

- **लट्टू** - Balance और Motion 🌀

- **गिल्ली-डंडा** - Reflexes⚡

- **पिट्ठू** - Team Co-ordination & Body Flexibility 🤝
- **Chain** - Speed & Agility 🏃

- **पतंगबाजी** - Wind Science & Spatial Control 🌬️༄

वो शामें और Weekend की छुट्टियां सिर्फ खेल नहीं थीं, वो हमारी ज़िन्दगी की सबसे सुनहरी यादें थीं। कोई Mobile नहीं, कोई Tabs नहीं, कोई Internet नहीं, TV भी हमारे घर 1983 में आया...सिर्फ दोस्त, मिट्टी, पसीना और मस्ती। आज भी कई बार दिल करता है फिर से लट्टू घुमाऊँ, कंचे फेंकूं, और "बो काटा" चिल्लाऊँ। और हाँ...शायद मम्मी की एक हल्की सी डांट भी फिर से सुन लूँ...उस डांट में जो प्यार था, वो अब समझ आता है। ❤️🙂

"UPTRON TV: एक ज़माने का Netflix, Antenna वाला रोमांच और सतरंगी यादों की कथा!" 📺🌈📡

1983 में हमारे घर आया था एक बड़ा ही खास Guest, UPTRON कंपनी का Black & White TV, Shutter और लकड़ी के चार पैर रूपी Stand वाला। 📺🖤

उस ज़माने में वही हमारा Netflix, Prime, aur YouTube था 😎, संडे को 'रामायण', बाद में 'महाभारत', और बुधवार और शुक्रवार को चित्रहार, Live क्रिकेट मैच भी खासकर Australia और New Zealand में होने वाले, बोलें तो Full पैसा वसूल 🎬🎶। खासकर Australia और New Zealand में होने वाले क्रिकेट मैच क्यों, ये एक सीक्रेट है, भई खुद समझ जाओ कि लड़का जवान हो रहा था। 😍🤩

अब मज़े की बात ये है की उसने 15 साल तक एकदम शांत-साधक Life जी, बस एक बार ही बीमार पड़ा, जब ले जाना पड़ा Greater Kailash-2 में UPTRON के Service Centre पर, लगा जैसे Hospital में Admit कराया हो कोई VIP Patient😂🛠️। फिर ठीक होते ही, वापस Full Form में आ गया...और, 1998 तक लगा रहा Entertainment की सेवा में। □

फिर मेरे लिए आया एक नया दौर, तब तक पिताजी LDC से UDC हो चुके थे, और, हमने Upgrade किया Thomson Colour TV पर🎨📺। पर UPTRON भाई को Retire करते हुए मन उदास था...बस Acting ही की थी Emotion दिखाने के लिए 😅।
और हाँ, इस UPTRON के साथ सबसे मस्त Part तो ये था, कुछ महीनों तक हमने उसके उपर लगाई थी Multicolour सतरंगी Manually Fix होने वाली Screen🌈😂। Black & White TV पर भी हमनें Colour TV का फील ले लिया था, Full जुगाड़ू स्टाइल 🛠️🧠! हर Scene लगता था जैसे अमर चित्र कथा ज़िंदा हो गई हो। 😆📚

और हाँ, वो Antenna वाली कहानी कैसे भूल सकते हैं 😅। हर बार जब आंधी तूफ़ान आता था या कोई शरारती पड़ोसी बच्चा Antenna घुमा देता, मुझे घर से बाहर जाकर Antenna घुमाकर Signal Set करना पड़ता था 🌩📡। घर के अंदर से आ रही आवाज को Follow करना पड़ता था पहले पूछकर कि अभी सही है? अभी Clear हुआ? घर की आवाज, थोड़ा और वापिस वहीं, जो बोला समझ नहीं आ रहा, अब यहीं रोक, अब Perfect है 😂🎯। लगता था कि NASA की Satellite Adjust कर रहे हैं 😂🤣।

TV देखने के लिए एक Proper Ritual होता था📅🛋, टाइम से पहले नहाकर बैठो, फिर तौलिया बिछाकर फर्श पर लेटो, और सबकी Favorite जगह फिक्स! उस वक्त TV नहीं, पूरा सिनेमाघर लगता था घर का Drawing Room। कभी 'चित्रहार', कभी 'रामायण', और कभी Charlie Chaplin वाली मस्ती🎶। हफ्ते की Highlight होती थी, जब कोई Movie लगती थी Sunday को...और उस दिन तो जैसे त्योहार का माहौल होता था घर में! 🎉🍿

कभी Antenna घुमाना, कभी सतरंगी Screen लगाना, और एक बार Service Centre की तीर्थ यात्रा, सब कुछ था एक ही TV के साथ 😄। आज भले ही हमारे पास Smart TV, HD Channels और Streaming Apps हों, पर वो UPTRON भाई वाली Simplicity और उसके साथ जुड़ी यादें, Unmatched हैं ❤️📺।

वो TV नहीं, एक पुराण था, हर Episode एक कहानी, हर Glitch एक Adventure। और हर बार जब TV On करते थे, तो लगता था...चलो अब ज़िंदगी फिर से शुरू!" 😄✨

"मैं हूँ शरारतों मे जिल्ल-ए-ईलाही Tarun - Airtel वाले Free Plan का बादशाह!" 😂📞

मेरी सबसे बड़ी ताक़त है, Sense of Humour, शरारतें और नालायकियां सोचना, वो भी सिर्फ़ 1 सेकंड में😂। मतलब जैसे किसी के दिमाग में सीधे सीधे Ideas आते हैं, वैसे ही मेरे दिमाग में शैतानी ख्याल पैदा हो जाते हैं 💭।

बात 2004 की है। मैंने एक पुराने दोस्त को बहुत समय बाद कॉल किया। वो रहता है रोहिणी में और है बनिया...और ऊपर से थोड़ा सा लालची भी😜। जब उसने मेरा फ़ोन उठाया, तो बोला, "Who's that"? बस यही सुनते ही मेरे शरारती दिमाग ने 200 की स्पीड में चालाकी सोचना शुरू कर दिया⚡🤯।

मैंने बोला Voice Modulation = Softness से, "Hello Sir, मैं अंकित मसखरवाल (Surname पर ध्यान दीजिए😆) बोल रहा हूँ Airtel से...क्या मैं आपसे बात कर सकता हूँ अगर आप फ्री हैं" 📞🤔? वो बोला, "हाँ हाँ, बोलो क्या बात है" ? फिर मैंने चालू किया अपना मज़ेदार

Plan😈, मैं बोला, “सर, आपका नंबर Airtel के 10 Lucky Numbers में आया है। आपको मिलने वाला है LIFETIME FREE PACKAGE🔥"! “इसका मतलब सर, जितनी भी Airtel की सेवाएं हैं, Incoming, Outgoing, SMS, MMS, International Roaming, सब कुछ… बिल्कुल फ्री में, आपका ज़िंदगी भर का Bill "0"🤩”!

अब सोचो, सामने वाला अगर थोड़ा भी लालची हो तो उसका चेहरा कैसे चमकेगा? उसने तुरंत कहा, “Wow! चालू कर दो ये Plan मेरे Airtel नंबर पे” । मुझे अंदर से जोर की हँसी आ रही थी लेकिन बाहर से मैं एकदम सीरियस बना रहा😆। मैं बोला, “सर, इसके लिए मुझे आपके कुछ Details की ज़रूरत है, Passport नंबर, PAN नंबर और Date of Birth📄🖊️।” और क्या? बंदा बोला, “हाँ हाँ, मैं भेज रहा हूँ” । मैं बोला, “Thank You Sir, अब मैं अपना Airtel का Document बनाता हूँ। अगली कॉल में Meeting करेंगे आपके Signatures के लिए” ।

लेकिन असली प्लान तो ये था कि मैं फिर कॉल ही नहीं करूंगा, मुझे पता था कि उसका लालच उसे खुद मुझे कॉल करवाएगा😜। और वही हुआ, 2 दिन बाद सुबह 9:45 बजे उसका फ़ोन आया, कोई थोड़ा सा भी लालची आदमी ऐसे धमाकेदार Plan को छोड़ ही नहीं सकता📲। उसने बोला, “अंकित जी, मैं आपकी कॉल का इंतज़ार कर रहा हूँ। अगले हफ्ते मुझे विदेश जाना है” ।

मैं बोला, “सर, आप तो बहुत लंबी उम्र वाले निकले, मैं भी अभी आपको कॉल करने ही वाला था” 😂। मैं बोला, “मैं एक और ग्राहक से नोएडा

में 12:30 बजे मिल रहा हूँ आज। आप मुझसे 2:30 बजे Hyatt Regency Hotel में मिलिए। वहीं मैं आपको Document दिखा दूँगा और आपके Signature भी करवा लूँगा"। मित्र बोला, "ठीक है, मिलते हैं 2:30 बजे" 😏।

मैं उस वक़्त कालकाजी में अपने Office में AC की ठंडी हवा के मजे लेते हुए आराम से कॉफ़ी पी रहा था☕😎। 2:25 बजे मैंने उसे कॉल किया, "सर, नोएडा वाली मीटिंग लेट हो गई है, मैं अब Hyatt के लिए निकल रहा हूँ" । मुझे पता था Zero Bill के लिए कोई भी मुफ्तखोर 10 घंटे भी इंतज़ार कर सकता है🤣। मैंने उसे 3 बार और कॉल किया, हर बार नया बहाना, ट्रैफिक Jam, गाड़ी पंक्चर, फलाना ढिमका😂।

आख़िरकार 4:45 बजे उसका सब्र टूट गया💣, वो बोला, "अंकित जी, मज़ाक कर रहे क्या मेरे साथ, मैं 4 कॉफ़ी पी चुका हूँ...₹1500 उड़ गए हैं आपकी Scheme के चक्कर में और आप हैं कि आए ही नहीं" ! मैं बोला, "अरे ओ फ्री की चीज़ों के दीवाने! एक और कॉफ़ी पी ले और ज़िंदगी भर मेरा इंतज़ार करता रह कॉफ़ियाँ पी पीकर" 😆☕।

और तब उसे समझ आया, (1) वो उल्लू बन गया है और (2) शरारती तरून ने फिर चौका मारा है🏏🤣। वो बोला, "तरून यार, तू तो पूरा कमाल का कमीना है, तू ये है, तू वो है, मैंने दो ज़रूरी Meetings कैंसिल कर दी थीं आज"। थोड़ी देर बाद उसकी भी हँसी छूट गई😂, बोला, "यार, सिर्फ़ तू ही ऐसा Prank कर सकता है...पर Plase किसी दोस्त को मत बताना हमारे Friend Circle में, वरना सब ज़िंदगी भर मुझे Airtel

का उल्लू कहेंगे” 🐦। मैं बोला, “मैं किसी को क्या बताऊँगा, मैं तो इसकी Call Recording कर रहा हूँ” ।😜

तो दोस्तों, अगर आपकी दोस्त मंडली में कोई मुफ्तखोरी का भूखा हो, तो उसे मुझसे बचा कर रखो😂। मेरा Naughty दिमाग हर समय तैयार रहता है, Airtel, Jio, Idea, या Zindagi...सबके Free Plan मैं मुफ्त में बेचता हूँ…और साथ में ऐसी Waiting का बम्पर ऑफर भी चिपका देता हूँ😆, Prank करना मेरा धर्म है। और हाँ, आज भी जब मेरे दोस्तों के ग्रुप में किसी को अनजान नंबर से कॉल आता होगा, तो पहला सवाल होता होगा, “कहीं ये तरून तो नहीं” 📞🤔😂?

Laugh & Make Others Laugh! 🤣😆😂

"मैं हूँ 'मुरथल का मजनू' बनाने वाला Prank King!" 😂🕺📞

साल था 2006 और मौसम था दोपहर के खाने के बाद वाला घूमने वाला टाइम। हम 5-6 ऑफिस के Colleagues रोज़ खाने के बाद अपने ऑफिस के पास टहलने जाया करते थे। उसी Complex में एक बड़ा और मशहूर Builder & Promoter का Head Office भी था, और उनके ऑफिस में ज़्यादातर थी लड़कियाँ😍...अरे भाई साहब, क्या कहें, एक से बढ़कर एक Gorgeous, कुछ तो सीधा दिल ले जाएं टाइप की थीं, जैसे हमारे एक मित्र का दिल एक लड़की ले चुकी थी😍!

हम रोज़ जैसे ही टहलने निकलते थे Lunch के बाद, उनके Staff का भी After Lunch Walk हो रहा होता था। अब हमारी नजरें थोड़ी इधर-उधर तो होती ही थी😉। मुझे कुछ दिनों से एक दिलचस्प बात दिख रही थी, हमारे एक Bachelor Colleague और उस Builder Office की एक लड़की के बीच Regular Eye Contact हो रहा था, पता लगता था कि कुछ कुछ पक रहा है आंखों ही आंखों में दोनो की। और मेरे Naughty दिमाग में तुरंत 0.0001 सेकंड में एक शरारत ने जन्म ले लिया, अब Prank Time😂!

अब भई, वो हमारा Bachelor Colleague थोड़ा Over Smart बनता था, तो मेरे से तो बच नहीं सकता, लेकिन असल में था गुल्लू + उल्लू = Gullible & Prank Magnet😜। मैंने तुरंत अपने Office के तीन और शरारती तत्वों को Confidence में लिया। सब तैयार हो गए इस Master Prank Plan में शामिल होने को। Target तय था, इस Over Smart बेचारे को 70 Kms. Murthal भेजकर उल्लू बनाना है!

तो हुआ यूँ कि एक Wednesday जैसे ही हम 2 बजे वापस ऑफिस पहुंचे, हम चारों मेरे Cabin में इकट्ठा हुए। मैंने हमारे ऑफिस की Receptionist को कॉल किया, और मेरी टीम का एक Colleague, जो लड़की की आवाज़ में बात करने में माहिर था (Total Cross Voicer 😂), उसने लड़की बनकर कहा, "Hello Ma'am, मुझे उस लड़के से बात करनी है जिसने आज Light Blue Shirt और Navy Blue Pant पहनी है, नाम नहीं पता"🤭। अब प्लान का दूसरा हिस्सा चालू हुआ, हमारे एक और Colleague को Call करने से पहले ही भेजा गया था

Receptionist के पास। उससे Receptionist ने पूछा, "ये Call पर कोई ऐसे पूछ रहा है हमारे Office के किसी Colleague के बारे में" ? हमारा Colleague बोला "शायद किसी लड़की को Crush है हमारे Office के किसी बंदे पर, Try कर लो फलां को, आज वो Light Blue Shirt और Navy Blue Pant पहनकर आया है" और Receptionist से वो कॉल हमारे Gullible Target को ट्रांसफर करवा दी। बस...शिकारियों ने मछली पर जाल फेंक दिया🐟😆।

अब शुरू हुआ असली मज़ा। Cross Voicer बोला लड़की की आवाज़ में, "Hi, मैं अंकिता बोल रही हूँ, Guess करो मैं कौन हूँ" ? Target, "नहीं, नहीं पहचान पाया" । Cross Voicer, "सड़क पर आँखों से आँखें मिलाना आता है, लेकिन पहचानना नहीं" ? Target, "हाँ, हाँ अब पहचान गया, आप तो बहुत खूबसूरत हो, आज तो Pink Top में और भी Stunning लग रही हो" । Cross Voicer, "इतने अच्छे से पहचान लिया, सच में तारीफ कर रहे हो या Flirting कर रहे हो" ? Target, "I Swear, आप वाकई में बहुत सुंदर हो, प्यारी हो।"

Cross Voicer, "तो क्यों ना हम कभी मिलें, थोड़ा Time Spend करें एक दूसरे को जानने के लिए" ? Target, "क्यों नहीं! कब मिलें" ? Cross Voicer, "Friday को Murthal में 2 बजे मिलते हैं, Delhi में डर लगता है कहीं कोई देख ना ले, सारे रिश्तेदार दिल्ली में ही रहते हैं, तुम्हारे साथ देख लिया तो Problem न हो जाए घर में, Risk नहीं लेना मुझे"। Murthal का नाम सुनते ही बेचारे के दिमाग में GPS घूम गया होगा...70 Kms दूर, लेकिन प्यार में पगला आशिक😂, फंस गया हमारे जाल

में🤣। Target बोला, “Friday को थोड़ा ऑफिस का बहुत ज़रूरी काम है, पर मैं 12 बजे तक निपटा दूंगा और Office में कोई बहाना मारकर Murthal पहुंच जाऊंगा” ।

Friday आया...और जनाब उस दिन एकदम दूल्हा बने ऑफिस पहुंचे, Shampoo किये हुए बाल, Perfume की महक, चमकते जूते, मतलब पूरा READY FOR DATE पैकेज, Over Smart बकरे का😂।

मैंने उसकी सीट पर जाकर पूछा, “भाई, आज कोई खास बात लग रही है” ! बोला, “हाँ, एक दोस्त की Engagement है, सीधा Office से ही 12 बजे निकलना है वहां जाने के लिए” । अंदर से हम चारों के पेट में हँसी ऐसे आ रही थी, जैसे भांग पीने के बाद, अंदर ही अंदर LOL🎉🤣। अब बेचारा Murthal गया होगा हमारा उस दिन का Smartie, कोई 2 घंटे का Travel...और वहाँ, कोई Ankita नहीं! 2-3 घंटे बैठा रहा Lonely जो अंकिता है नहीं उसके इंतजार में, फिर 3 घंटे की वापसी। Total 7-8 घंटे की लवली Outing, मेरी मेहरबानी से🚗😅।

Next Day Saturday को वो बुरी तरह Gloomy Faced ऑफिस आया। मैंने पूछा, “और भाई, कैसी रही तेरी Romantic Murthal Date”? जनाब 5 सेकंड तक तो Freeze रहे, Shocked कि इसे Murthal के किस्से का कैसे पता चला, फिर बोले “भाई, ये तो बहुत गलत किया...20-25 Kms तक ही Fool बनाते😆, 70 Kms बहुत ज़्यादा है यार😂! पर Please ऑफिस में किसी को मत बताना” 🤪। और हम चारों 😆 LOL to the Power Infinity!

तो मित्रों, जो भी हमारे साथ ज्यादा Over Smart बनने की कोशिश करता है, हम उसे Murthal Express में भेज देते हैं😂। और मेरा Naughty दिमाग तो 5G से भी तेज़ है…Prank का Idea तो 1 सेकंड में आ जाता है, और बंदा Lifetime तक याद रखता है🤥। आज भी जब वो Gullible दोस्त Pink Top में किसी लड़की को देखता होगा…तो उसे Ankita याद आ ही जाती होगी और हमको भरपूर हँसी🤣😋💔।

Be Happy & Make Others Happy! 🤣😆😂

घुमक्कड़ी & Trekking

घूमना किसको कहते हैं ??? 🤔

आओ, आज इस सवाल का जवाब सिर्फ शब्दों में नहीं, एहसासों में ढूंढें...चलिए उस Wanderlust को परिभाषित करें जो हमारे अंदर कहीं गहराई में छिपा होता है, और हर बार जब हम किसी पहाड़ी सड़क, किसी झरने की आवाज़ या पहाड़ों में किसी अनजाने गाँव के रास्ते पर चलते हैं, तो जाग उठता है।

घूमना सिर्फ किसी नई जगह पहुंच जाना नहीं है। घूमना वो है जब आप धर्मशाला या पालमपुर के चाय के बागानों में खड़े होते हैं और कोई आपके पास खड़ा होकर बहुत जरूरी बातें कर रहा होता है...लेकिन आपका दिल, आपकी नजरें, आपका पूरा वजूद बिखर चुका होता है, उन सीढ़ीनुमा हरे-भरे बागानों में। सामने वाला बोल रहा होता है, और आप...बस देख रहे होते हैं🌲🍃। यही तो घूमना है साहब।

कभी-कभी, जब आप कांगड़ा से धर्मशाला की ओर जा रहे होते हैं, 25वीं बार, फिर भी वो रास्ता आपको हर बार नया लगता है। SUV/Bus की खिड़की से दिखते वो धौलाधार के पहाड़, और उनके ऊपर तैरते बादल और तैरता नीला आसमान...जैसे पहली बार देख रहे हों। नज़रों का हर

बार उसी जगह रुक जाना, एक अनकहा खिंचाव...यही है असली Travel Therapy🚗🌄।

घूमना तब भी होता है जब आप किसी 5 Star Resort में ठहरे होते हैं, जहाँ 10-15 तरह के लजीज़ खाने का बुफे सजा होता है...लेकिन आपका मन तो खींचा चला जाता है गाँव की किसी ढाबे जैसी मिट्टी की खुशबू वाले घर में, जहाँ मक्की की रोटी खाई जाती है खोड़ू/पलदे/रेहड़ू (Spl. Dish of Himachal made with Curd) से ज़मीन पर बैठकर, वो एक निवाला, पूरी आत्मा तक उतर जाता है। That's the soul of Travel🌽🍛।

जब आप रात को किसी रेसॉर्ट के Live Band को छोड़, अपने Room की बालकनी में अकेले बैठकर अपना पसंदीदा गाना गुनगुना रहे होते हैं...वो पल, जब पूरी दुनिया से कनेक्शन टूट चुका होता है और सिर्फ आप, वो गाना और वो ठंडी हवा साथ होते हैं...जनाब, यही तो घूमना होता है🎶🌀।

घूमना सिर्फ जगहें बदलना नहीं, खुद को खो देना है उस जगह में जहां आप घूमने गए होते हैं...और फिर खुद को दोबारा पाना भी। जब किसी झील के किनारे बैठकर आप घंटों सिर्फ पानी को बहते देखते हैं, बिना कुछ बोले...और फिर अचानक अहसास होता है कि आपके अंदर की सारी उलझनें भी बह गई हैं...वही तो असली घुमक्कड़ी है साहब।

Tourist बनकर घूमना अलग है, लेकिन जब आप किसी जगह से रिश्ता जोड़ लेते हैं, जब उसके नज़ारे आपको छू जाते हैं, जब आप उस धरती

से बातें करने लगते हैं...तब आप सिर्फ मुसाफिर नहीं रह जाते, आप उस जगह का हिस्सा बन जाते हैं💫।

देखो, नजारे किसी की मेहरबानी नहीं मांगते। ना Pass की ज़रूरत होती है, ना Ticket खरीदने की। वो तो बस इंतज़ार करते हैं आपकी एक नज़र का, आपकी एक मुस्कान का। वो चुपचाप खड़े हैं, वो घाटियां, वो Water Streams, वो चाँदनी रातें, वो सुबह की ओस...सब आपके लिए। Nature Charges Nothing, but it Gives Everything🌙⛰️।

कभी अकेले बैठकर सूरज को उगते देखो🌅, या किसी पहाड़ी मोड़ पर खड़े होकर नीचे फैली घाटियों को निहारो🏞️, वो पल कुछ कहते नहीं**,** लेकिन सब कुछ कह जाते हैं। हाथ में कैमरा हो या ना हो, आंखों में वो तस्वीरें हमेशा के लिए बस जाती हैं📸✨। यही है वो Connection, जो नज़ारे आपको बिना कहे दे जाते हैं, एक रिश्ता, जो इंसान और प्रकृति के बीच बिना शब्दों के बनता है🤝🌍।

और हां, कई लोग इन जगहों पर आते हैं सिर्फ खरीदारी के लिए...पर असली सुख तो वहाँ है जहाँ आप कुछ खरीदते नहीं, बस महसूस करते हैं। उन पहाड़ों की ठंडी हवा को, उन रास्तों की खामोशी को, उन लोकल बच्चों की मुस्कान को...यही है असली Luxury of Experience।

तो अगली बार जब आप कहीं जाएं...होटल में Check-in करने से पहले, खुद में Check-in कीजिए। नजारे देखने से पहले, दिल को खोलिए। हर पेड़ की🌲, हर पत्ते की🍃, हर आवाज़ को सुनिए... और महसूस

कीजिए, कि घूमना इसे कहते हैं...घूमना असल में जीवन को जीने का एक तरीका है। It's not just Travel, it's Transformation🧭❤️।

घूमना किसको कहते हैं...???
अब शायद हम सबको थोड़ा बहुत जवाब मिल गया है...और बाकी का जवाब तो वहीं मिलेगा, अगली यात्रा में, अगली मुसाफिरी में, अगली धड़कन में...✨।

(*Content Credit: Mr. Lalit Sharma*)

मबारिकपुर, हिमाचल प्रदेश - मेरी छुट्टियों का स्वर्ग 🏞️🌿
(1975 से 1990 के वो सुनहरे दिन ✨)

आज भी जब आंखें बंद करता हूं 😌, तो बचपन और जवानी के वो छुट्टियों वाले दिन 🌞👦👦, आंखों के सामने एक Movie की तरह घूमने लगते हैं। गर्मियों की छुट्टियाँ हों 🌞, दशहरे की धूम हो 🎭 या क्रिसमस की छुट्टियों की सर्द सुबहें ❄️🎄, हर बार मेरा मन और दिल भागता था मबारिकपुर की ओर…मेरे प्यारे नानके 🏡❤️।

वो HRTC की दिल्ली से धर्मशाला बस 🚌 से शाम 4:10 पर मबारिकपुर उतरते ही मिट्टी की एक अलग ही Fragrance मिलती थी, जैसे नानी का आंचल हो 👵👃। नाना जी की मुस्कान 😊, सुबह नाश्ते में नानी के हाथों की ताजी ताजी बनी रोटी 🍞 सिर्फ घर के निकाले सफेद मक्खन

से या भूने कच्चे आम पर मिर्च 🌶️, धनिये 🌿 व पुदीने वाला नमक डालकर चूल्हे के पास बैठकर खाना 🔥।

सुबह 8 बजे Vividh Bharti 📻 और शाम 3 बजे All India Radio पर फिल्मों के गाने 🎶 सुनना...सब कुछ जैसे आज भी कानों में गूंजता है 🎧।

गर्मी की दोपहरों में दाल, चावल/रोटी 🍚🫓 व चुल्हे में कच्चे भूने आम का माहणी, कच्चे प्याज काटकर डाले हुए, खाकर आम के पेड़ के नीचे मंजे पर लेटकर सो जाना 😴🌳, अम्ब के दशहरे पर रामलीला में साथ बैठकर तालियाँ बजाना 👏🎭, और क्रिसमस की छुट्टियों में अंगने में खोदे गड्ढे में गुल्लियों से आग जलाकर 🔥 हाथ सेकते हुए रेहड़ू/पलदे (Spl. Dish of Himachal made with Curd) से छल्लियों की रोटी खाना 🌽 और बाद में वहीं बैठकर मूंगफली खाते-खाते गपशप मारना 🥜🗣️।

ये सब मेरी ज़िंदगी के सबसे कीमती Moments हैं 💎। बिना मोबाइल 📵, बिना टीवी 📺❌, लेकिन दिलों में गहरी जुड़ाव और रिश्तों में सच्चा अपनापन था ❤️🤝। आज सब कुछ बदल गया है, गाँव भी, लोग भी, और शायद हम भी 🕰️। लेकिन मबारिकपुर की वो छुट्टियाँ, वो यादें …आज भी मेरी ज़िंदगी का सबसे अमूल्य Treasure हैं 🧳💖।

काश…एक बार फिर वो समय लौट आए 🔄⏳, वही मिट्टी, वही लोग, वही खुशबू, और वो बेफिक्री! 🌾👣

"₹3000 में चंबा-डलहौज़ी Outing: बिना Plan, बिना शर्म, और Hi-Fi!" 😜🚌🏞️

एक Adventurous किस्सा है, जो आज भी दिल-दिमाग में ऐसे बसा है जैसे पुरानी Photo Album में रखी कोई धुंधली मगर प्यारी तस्वीर📷।

ये बात है 1992 की, जब मेरा एक दोस्त SDA, New Delhi में DDA के सरकारी मकान में रहता था। महीना था सितंबर, और दिल्ली की हवा में हल्की सी ठंडक घुलने लगी थी। तभी एक दिन, पड़ोस वाली आंटी उसके घर आईं और उसकी मम्मी के ₹3000 वापस करने के लिए। क्योंकि मेरे दोस्त की मम्मी घर पर नहीं थीं, उन्होंने वो पैसे उसके हवाले किए और बोलीं, "मैं गांव जा रही हूँ, किसी की Death हो गई है।" दोस्त बोला, "ठीक है आंटी, आप जाइए...बाकी 'ये पैसे मम्मी को दे दूंगा"😉।

अब होता ये था कि हर शाम 4 बजे मैं उसके पास पहुंच जाता। हम दोनों की रोज़ की घुमक्कड़ी फिक्स थी, कभी ग्रीन पार्क मार्केट, कभी हौज़ खास, तो कभी अरबिंदो प्लेस। और मज़ेदार बात ये कि हर मार्केट में कुछ ना कुछ दोस्त पहले से मौजूद होते थे, जैसे Local Branches of Our Social Gang😂।

उस दिन भी कुछ ऐसा ही हुआ। टहलते-टहलते अचानक उसका Travel Bug Activate हो गया। बोला, "भाई हिमाचल में कहां घूमना बाकी है?" मैंने सोचा... Hmm...और बोला, "चंबा-डलहौज़ी वाला Area बचा है।" बस, इतना सुनना था कि बंदा तपाक से बोला, "चल फिर आज ही निकलते हैं"😲। मैंने कहा, "पैसे कहां से लाएगा बे? ये कौन-सी लग्ज़री

टूर एजेंसी है?" वो बोला, "पैसे का इंतज़ाम हो गया है, तू बस 8 बजे ISBT मिल, घर जा और सामान पैक कर"🧳। उस वक्त मैं Graduate हो ही चुका था, तो मम्मी-पापा ने Surprisingly बिना ज्यादा सवाल पूछे जाने की Permission भी दे दी।

हमने रात की HRTC बस पकड़ी और सीधा पहुँच गए चंबा। बस से उतरे, तो उस दोस्त ने बम फोड़ा, "भाई वो जो ₹3000 हैं ना, वो मैंने ही ले लिए आंटी से, जो वो मेरी मम्मी को वापस करने आई थी"। उस पर तो मेरा मुंह वैसे ही खुला रह गया जैसे आम आदमी का बजट सुनते ही होता है😵‍💫। मगर अब तो चंबा पहुंच गए थे, तो हमने वहीं से उसके घर एक Telegram भेज दिया, "हम मणिमहेश जा रहे हैं, खोजने मत आना। पैसे खत्म होंगे तो घर पहुंच जाएंगे"। Smart Kids, ख़ासकर जब मामला गोलमाल करने का हो तो।

अब असली जादू शुरू हुआ। मैं खुद हिमाचली हूं और बोली भी ठेठ आती है, तो वहां के लोग हमारे अपने जैसे लगने लगे। उन ₹3000 में ऐसा घूमे चंबा जिले को, जैसे किसी Tourism Department ने Sponsor कर दिया हो, सलूणी की वादियां देखीं, भरमौर की ठंडी हवाओं में खोए, और मणिमहेश की चढ़ाई भी कर डाली...वो भी बिना EMI के😄🏞️💸। एक दिन चंबा में हम दोनों शाम को टपरी वाली चाय पी रहे थे, किसी तरह राजा परिवार के कुछ लोगों से मेल-मुलाकात हुई और वापसी मैं जब पैसे कम हो रहे थे, एक हफ्ता उन राजा परिवार के लोगों के घर रॉयल्टी वाली मेहमाननवाज़ी में कट गया, Full VIP Treatment, वो भी Zero Cost में😎।

इसके बाद पहुंचे डलहौज़ी, जहां हमारी दोस्ती सात Local लड़कों से हुई, एकदम फिल्मी स्टाइल में। जब हमारे ₹3000 खत्म हो गए, तो उन भाइयों ने चंदा इकट्ठा कर के न सिर्फ हमें 3 दिन रुकवाया बल्कि दिल्ली की बस के लिए किराया भी दिया। Seriously, इंसानियत और दोस्ती का असली मतलब वहीं जाना। बीच में हमने अपने-अपने घरों को एक-एक Telegram और भेजा कि "भरमौर से चंबा वाला रास्ता बंद है, Landslide हो गया है, पहुंचते हैं जल्दी।" और फिर बेफिक्री से पूरे 34 दिन घूमते रहे। हां, 34 दिन! बिना इंटरनेट, बिना फोन, बस दिल और सड़क साथ थी🚶❤️🌄।

जब 34 दिन बाद वापस दिल्ली लौटे, तो जो स्वागत हुआ...भगवान बचाए, आप अंदाजा लगा ही सकते हो कि हमारे अपने अपने घरों में हम दोनों की कैसी और क्या खतिरदारी हुई होगी। घरवालों की शक्लें देख कर लगा जैसे हम Kargil से लौटे हों। एक तरफ "तुम्हें जरा भी फिक्र नहीं थी?" और दूसरी तरफ "अच्छा ठीक है, जिंदा तो हो!" वाला मिला-जुला रिएक्शन। मगर उस डांट में भी प्यार था, और हमारे Adventure का Thrill भी 😅□।

सच कहूं, तो वो 34 दिन जैसे ज़िंदगी की एक Documentary बन गए हैं। हर जगह, हर मोड़, हर इंसान कुछ सिखा गया। आज भी जब चंबा या डलहौज़ी का नाम सुनता हूं, तो मन मुस्कुरा उठता है😊। घूमना असल में इसी को कहते हैं, बिना Plan, बिना Luxury, बस दिल से...और थोड़ा पागलपन साथ हो तो सोने पे सुहागा🗺️🎉।

"धर्मशाला की डाइनिंग टेबल और टमाटर की चाशनी वाला वो सूप!" 🍅🍵😂

बात 1989 की है, जब दुनिया भोली-भाली, मोबाइल फ्री और इंस्टाग्राम रहित हुआ करती थी...और हम भी! 😎 मैं, यानी एक 18 साल का जोश से भरा हुआ, मैगी से बड़ा और माचिस से छोटा लड़का, अपने दो परम मित्रों के साथ पहली बार निकला था एक एडवेंचरस यात्रा पर, धर्मशाला दर्शन के लिए। एक मित्र 21 का जवान शेर और दूसरा 19 का नया-नया बालिग 😁।

अब हुआ यूं कि एक मित्र के पास था “Col. अंकल”, मतलब आर्मी में कर्नल और आर्मी वाले कर्नल नहीं, दिल वाले कर्नल! उन्होंने हमें धर्मशाला कैंट में अपने सरकारी बंगले में रहने का ठिकाना दे दिया। और कसम से, वो घर देखकर हमें लगा कि अब बस यहीं रह जाएं, दिल्ली की धूल छोड़ो, यहीं घास खाकर गुज़ारा कर लेंगे। 🌿😆

Col. अंकल का परिवार उन दिनों दिल्ली गया हुआ था। और ये Col. अंकल, स्वभाव से जितने जेंटलमैन थे, नियमों से उतने ही ज़्यादा मिलिटेंट थे। बोले, “8:30 PM, डाइनिंग टेबल पर रिपोर्टिंग टाइम है!” अब हमारे लिए डाइनिंग टेबल उस समय वैसी ही चीज़ थी जैसे आज किसी गाँव वाले के लिए "Hyperloop", सुना है, देखा नहीं! 🤷

हम तो वो लोग थे जो थाली में खा-पीकर उंगलियों से आखिरी रोटी पोंछते थे, और यहाँ सामने चाँदी की कटलरी, अजीब-से आकार वाले चम्मच और सफेद नैपकिन, जिसे हम गलती से रुमाल समझ बैठे थे। 😅

बहरहाल, पहला दिन था Officers’ Mess में, वो जगह जहाँ आर्मी वाले सिर्फ खाते नहीं, Class दिखाते हैं! ✨

अंकल बोले, “सूप लाओ सबके लिए।” अब हमारे दिमाग में तो बस यही घूम रहा था, “सूप होता क्या है?” पीते हैं? खाते हैं? रगड़ते हैं? डुबोते हैं? चम्मच से मारते हैं? हम तीनों ने सिर हिलाकर विनम्रता से कह दिया, “नहीं चाहिए।” अंदर से डर ये था कि कहीं मुंह में डालते ही छींके ना आ जाएं और सामने बैठे Col. अंकल का कपड़ा लाल न कर दें। 😬🍅

अब अंकल के सामने सूप आया। कटोरे में कुछ लाल-लाल, जिसे देखकर हमें लगा कि ये तो रस भरी सब्ज़ी है, बस रोटी नहीं है साथ🤔। अंकल ने चखकर कहा, “खट्टा ज़्यादा है, चीनी लाओ।” फिर बड़ी नफासत से 2 चम्मच चीनी डाली और उस कटोरे का सूप यूं पी गए जैसे Whiskey के Connoisseur हों! 😎🍸

अब हमारे मन में तो वही सूप रात को सपना बन गया, लाल, गर्म और शुगर वाला🍅💭। अगले दिन, फिर वही 8:30 बजे की सजगता, आज हमने तय कर लिया कि आज सूप का सामना आंखों में आंखें डाल कर होगा। ऑर्डर किया, “Same Soup, Please!” बटलर टाइप बंदा ऐसे मुस्कराया जैसे समझ गया हो कि "अरे...आज सूप की लंगड़ी मार पिलाई जाएगी"😁।

सूप आया, हमने चखते ही किया वही रिएक्शन, “खट्टा है!” चीनी मंगवाई, और इस बार ऐसा डाला...जैसे हम गन्ना पेरने वाले हों। 1 नहीं, 2 नहीं,

पूरी 3 चम्मच डाली और फिर जो मिश्रण तैयार हुआ, टमाटर की खालिस चाशनी🍅+🍯=😵‍💫!

अब अंकल ने देखा तो बोले, “तुम्हें मीठा सूप पसंद है?” अब क्या बोलते? Truth बोले तो बेइज़्ज़ती, झूठ बोले तो आत्म-सम्मान की रक्षा! हम बोले, “हाँ, मीठा अच्छा लगता है।” और अंदर से आत्मा कह रही थी, “बेटा, तुमने सूप नहीं, हलवे की तैयारी कर दी है”😂! उस मीठे जलेबी वाले सूप को किसी तरह पीकर जैसे ही उठे, मन में ठान लिया, “आज के बाद सूप का नाम भी नहीं लेंगे।”

और कसम से, अगले 2-3 साल तक किसी शादी या रिसेप्शन में जब भी सूप सामने आया, हम उल्टी दिशा में चले जाते थे, जैसे उसके अंदर हमारे पुराने दिन छुपे हों😆। बाद में जब थोड़ा दुनिया देखी, शादी-ब्याह और होटल बुफे में शामिल हुए, तब जाकर समझ आया कि सूप भी एक कला है, टमाटर, स्वीट कॉर्न, मन्चाओ, हॉट एंड सॉर, मलिगटॉनी और ना जाने क्या-क्या...पर हमारे लिए तो सूप हमेशा रहेगा, “चीनी डालो और खाओ जैसा टमाटर का शरबत”🥄🍅🍹।

आज भी जब कोई Fancy रेस्टोरेंट में कहता है, “Let’s start with soup!” तो दिल से आवाज़ आती है, “भाई, तुम पी लो...मैं तो रसगुल्ला खा लूंगा”😂।

और हाँ...उस यात्रा से हमने क्या सीखा?

👉 सूप को हल्के में मत लेना।
👉 आर्मी अफसर का डाइनिंग टेबल, आपके लिए एक युद्धभूमि हो सकती है।
👉 और सबसे ज़रूरी, “मीठा सूप” एक पाप है, जो सिर्फ हम जैसे भोले-भाले लोग ही कर सकते हैं! 😅🙏

अब तक की सबसे यादगार डिश - टमाटर की चाशनी AKA धर्मशाला स्पेशल सूप 🍅🍲😂

(*Content Credit: Mr. Lalit Sharma*)

October 1998 में मेरे Office के मित्रों के साथ मेरा Manali Trip - "छत पे छाता नहीं, हौसला होना चाहिए!" 😄🚌☔

अक्टूबर 1998 की वो सुबह थी जो न तो धूप थी, न बारिश, बस "चल निकलते हैं" वाली Feeling थी। काम से बोर हो चुके थे, बॉस की शक्ल देख-देख के दिल ऊब गया था, और Kuldeep Sharma (जो Friend से कहीं ज्यादा है...कुछ-कुछ जैसे ‘आत्मा के जुड़वां’) और Deep Chopra को कहा, “भाई, दशहरे में कुल्लू नहीं गए तो क्या खाक जिए! चलो, बैग पैक करो, चलना है!” बस फिर क्या था, दिल्ली से मनाली की ओर हमारी बुलेटप्रूफ...अरे नहीं, HRTC की बस रवाना हो गई! 😁🚌

बस चली और हम बैठे खिड़की के पास, दिल में सपने लिए। बस ठीक-ठाक चल रही थी, सब कुछ Smooth लग रहा था...जब तक बिलासपुर नहीं आया। वहां हमारी HRTC बस ने अचानक 'Retirement' ले ली। ड्राइवर ने कहा, "Axle ने दम तोड़ दिया है, अब दूसरी बस का इंतज़ार करो"😳। थोड़ी देर में एक और HRTC बस आई जो चंडीगढ़ से मनाली जा रही थी, और उसमें वैसे ही Tight Seating थी जैसे दिल्ली मेट्रो की Peak Time में होती है। पर हिमाचल वालों की मेहरबानी देखिए, उस बस के ऊपर भी हम तीनों समेत कई Passengers चढ़ा दिए गए😅। बस वालों ने कहा, "छत खाली है, चाहो तो बैठ जाओ।" और हम? बिना दो बार सोचे चढ़ गए छत पर, क्योंकि Adventure वहीं शुरू होता है जहाँ Comfort Zone खत्म होता है🧗🚌।

और बस के Rooftop की उस Journey को क्या ही कहें। 100 किलोमीटर का सफर, बिलासपुर से Aut तक, बिना सीट, बिना छत, पर भरपूर मस्ती। ऊपर से रही-सही कसर बारिश ने पूरी कर दी🌧️। नीचे खाई, और हम तीनों बीच में रोमांस कर रहे थे ठंडी हवा से, इतने में बारिश आ गई, जैसे Nature भी Testing कर रही हो, लगभग आधा घंटा लगातार भीगते हुए जब बादलों की चादर से लिपटे पहाड़ों को निहारते जा रहे थे, तो खुद को किसी यश चोपड़ा की फिल्म का हीरो समझने लगे थे...फर्क बस इतना था कि वहां Heroines नहीं थी, सिर्फ Kuldeep और Deep थे😂।

मनाली पहुंचकर जानपहचान से जुगाड़ किया वहाँ के Mountaineering Institute के एक Legendary Room का, बड़ा सा

Bedroom, Attached Bathroom और टॉयलेट। गरम पानी और फर्श पर बिछा Mattress ऐसा लग रहा था जैसे Hotel नहीं, स्वर्ग का दरवाज़ा खोल दिया हो। वहाँ की रजाइयों में जो Warmth थी, वो दिल्ली की सर्दियों में भी नहीं मिलती। तीनों दोस्त वहाँ बैठकर Steaming Hot चाय पीते हुए अपने "बस छत यात्रा" के किस्से पर खूब हँसे😄☕।

सबसे पहले गए कुल्लू, वहाँ के दशहरे का Celebration देखते ही बनता था। पूरे शहर में रौनक, ढोल-नगाड़े, देवताओं की झांकियाँ और रंग-बिरंगे कपड़ों में सजे लोग, एकदम जैसे कोई Magical Carnival। यहीं पहली बार मैंने "Japanese Persimmon (जापानी फल)" खाया, जो देखने में टमाटर और खाने में आम के बीच की कोई चीज़ थी😂🍅🍊।

Manali के Dhungiri Van Vihar में बिताया हुआ समय सबसे खास रहा। Dhungiri Van Vihar में हम ऐसे खो गए जैसे पुराने फिल्मी गाने में Hero खो जाते हैं । Beas River के किनारे पेड़ों की सरसराहट के बीच Stroll करते हुए हम जैसे किसी और ही दुनिया में पहुँच गए थे। वहाँ की Wooden Walkways, और नदी की कल-कल, सब कुछ किसी Poetry सा लग रहा था। हम सबने सोचा कि काश ऑफिस से छुट्टियाँ 7 दिन की नहीं बल्कि 7 हफ्तों की लेते😅🌲🏞️।

और अब बारी थी उस जगह की, जिसे ट्रिप से निकाल दिया जाए तो ट्रिप का चेहरा ही अधूरा लगे, Rohtang Pass। हाँ जी, वही Oxygen की किल्लत वाला स्वर्ग, जहां पहुँच कर लगता है कि आप माउंट एवरेस्ट बेस कैंप तक चले गए हैं, बस चलने की बजाय हांफते-हांफते😅❄️⛰️।

सुबह-सुबह हम तीनों Mountaineering Institite से एक Locan Bus में रवाना हुए, जिसका ड्राइवर हमें ऐसे समझा रहा था जैसे NASA का मिशन लॉन्च हो रहा हो "भाईसाहब, ऊपर जाना है तो चाय नीचे ही पी लो, Oxygen कम है, थोड़े गर्म कपड़े पहन लो, वरना Photos में नीला चेहरा ही आएगा।" जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते जा रहे थे, Road का Shape वैसे-वैसे दिल की धड़कनों से मिलता जा रहा था, कभी तीखा मोड़, कभी खाई की झलक, कभी सामने से आती बस जो लगे अभी ले जाएगी। और फिर पहुंच गए Rohtang Pass ⛰। हम तीनों ने वहाँ 3 घंटे ऐसे बिताए जैसे Netflix की एडवेंचर फिल्म का ट्रेलर शूट हो रहा हो।

मनाली में एक और रात ठहरने के बाद, अगली सुबह सूरज की पहली किरणों के साथ हमने अपनी उंगलियों में गरमागरम चाय का प्याला थामा और तय हुआ, "आज जाएंगे Solang Valley"। हम में से कोई भी Paragliding के पास नहीं गया, क्योंकि सबसे पहले डर ने Gliding कर ली थी🤣🪂 । Solang पहुँचते ही सबसे पहला नज़ारा, पहाड़ ऐसे खड़े थे जैसे वो खुद अपने Selfies ले रहे हों। चारों ओर ऊँचे देवदार के पेड़, दूर-दूर तक बर्फीली चोटियाँ और बीच में सिर्फ 1 - 2 दुकानें, जिसमें से एक में टपरी वाली चाय पीने का तो मज़ा ही आ गया और घोड़े! वहाँ बैठकर हिमालय की चोटियों को देखते हुए, हमारे बीच Silence था, पर वो "बोरिंग Silence" नहीं, बल्कि "इस वक्त कुछ न बोलना ही बेहतर है वरना ठहाका लग जाएगा" वाली शांति।

उस शाम मनाली वापिस पहुंचे और Dinner के Time दिल जैसे बोला, "Dhauladhar Range नहीं देखी, तो अधूरा है ये Trip"। मैं तो धौलाधार का दीवाना हूँ, तो McLeod Ganj को Last Minute Itinerary में घुसेड़ दिया। Deep ने विरोध किया, बोला "यार, छुट्टियाँ बची नहीं हैं", पर Kuldeep बोला, "अभी दिल है Traveler, और दिल की सुनना जरूरी है"😌⛰️।

McLeod Ganj में घुसते ही तिब्बती चाय की खुशबू, शांत Monestaries, और वो बादलों में छुपे धौलाधार पहाड़, मानो पहाड़ खुद कह रहे हों, "आ गया फिर से तू, चल मौज ले अब।" वहाँ Sunset देखा, और Tridev, हम तीनोंक्षऐसे शांत हो गए जैसे Meditation में बैठे हों। वो शाम आज भी आँखें बंद करते ही दिख जाती है मुझे, वही ठंडी हवा, वही Clouds, और वही Dhauladhar की मुस्कराहट🌄☁️।

जब वापस दिल्ली लौटे, तो शरीर थका हुआ था, लेकिन दिल भरा हुआ, हँसी, भीगना, बस की छत, दोस्ती, चाय, और पहाड़ों की खामोशियां, सब कुछ हमारे साथ था। आज भी जब कोई Boring ऑफिस मीटिंग में घड़ी देखता हूँ, तो मन Kuldeep और Deep के साथ उस बस की छत पर उड़ने लगता है। हाँ, कोई छत पे बैठने नहीं देगा अब, पर यादों की छत तो फ्री है😉🕊️।

Planning जरूरी है, पर उससे भी जरूरी हैं दोस्त, मूर्खताएं और बस की छत पर सफर। अगर सफर में सब कुछ सही जाए, तो क्या ही मज़ा

आए? कुछ Malfunction, कुछ बारिश, और थोड़ी पागलपंती, यही असली Travel है🌧️🚍💙।

"Dhauladhar की गोद में... जहाँ Trekking, Spirituality और महादेव का जादू एक साथ चलते हैं! 🏔️🔱🎶"

मुझे Trekking👣 से जो लगाव है, वो सिर्फ एक Adventure या Hobby भर नहीं है...ये मेरी Soul से जुड़ा एक ऐसा Connection है, जिसे मैं शब्दों में पूरी तरह बयां नहीं कर सकता। खासकर हिमाचल प्रदेश की Dhauladhar Range🌄, ये जगह मेरे लिए किसी मंदिर से कम नहीं है। यहाँ की हर चोटी, हर Valley, हर चुपचाप बहती खड्डें और नाले, और वो घने बादल...सब मुझे अंदर तक छू जाते हैं।

मैंने Dhauladhar Range में कई Treks किए हैं, और मज़े की बात ये है कि ज़्यादातर बारिश⛈️ के मौसम में ही। जहां लोग इस Season को Avoid करते हैं, वहीं मुझे इसमें एक अलग ही Magic□महसूस होता है। जब बारिश की बूंदें💧 चेहरे पर पड़ती हैं, और रास्ते पानी से भर जाता है, तब असली Trekking Spirit जगती है मेरे अंदर। उन मुश्किल रास्तों में खुद को आगे बढ़ाते हुए, मैं हर बार Nature के और पास चला जाता हूँ।

हर बार जब मैं किसी नए Trek🧗 की Planning करता था, और जैसे ही मैं अपने घर से निकलता था...तो मेरे कानों में अपने आप "🎶 The Final Countdown 🎶" गाना गूंजने लगता था। वो भी बिना किसी Music System के बस मेरे अंदर से···एक बार जब ये गाना शुरू हो जाता था, तब तक नहीं रुकता था जब तक मैं ट्रेक के Starting Point तक नहीं पहुँच जाता था। ऐसा लगता था जैसे मेरी Spirit खुद को Mentally Prepare कर रही हो, एक और Divine Journey के लिए। Dhauladhar Range की खूबसूरती को शब्दों में समेटना आसान नहीं है। जब सुबह की पहली धूप इन पहाड़ों की चोटियों को छूती है, तो ऐसा लगता है जैसे किसी देवता ने उन्हें अपने स्पर्श से जगाया हो। सफेद बर्फ से ढकी हुई चोटियाँ, उनके पीछे लहराते हुए बादल, और वो नीला आसमान, सब मिलकर एक ऐसी Canvas तैयार करते हैं जिसे कोई Artist भी Imagine नहीं कर सकता🌥️⛰️।

जब भी मैं इन पहाड़ों में होता हूँ, मुझे लगता है कि मैं किसी और ही दुनिया में हूँ, जहाँ न कोई भीड़ है, न शोर, बस Pure Silence & Serenity। Dhauladhar की वादियों में चलते हुए जब हल्की-हल्की बारिश होती है, और रास्तों के दोनों ओर जड़ी-बूटियों की खुशबू उठती है...उस समय दिल Garden-Garden होकर खुद कह उठता है, *This is Heaven on Earth*💚🌧️।

और, इन पहाड़ों के बीच एक ऐसा रहस्य है जो महसूस तो होता है, पर समझाना मुश्किल है। वो रहस्य है महादेव🔱 की उपस्थिति का। जब मैं किसी उँचाई पर पहुँचता हूँ, और अपने चारों ओर सिर्फ पहाड़ और

बादल होते हैं...उस समय मुझे ऐसा महसूस होता है कि मैं शिवजी📿 के बहुत करीब हूँ। उनकी ऊर्जा😇 इन वादियों में बहती है, कभी ठंडी हवा बनकर, कभी गरजते बादल बनकर, और कभी शांत झरनों की तरह जो चट्टानों से गिरते हैं🌬️🕉️।

Dhauladhar में ट्रेक करते हुए मेरे लिए सबसे खास पल तब भी आता था, जब मैं रास्ते में कहीं शांत जगह पर बैठकर Meditation🧘 करता था। बादलों के बीच, या किसी चट्टान पर बैठकर जब मैं आँखें बंद करता, तो ऐसा लगता था जैसे पूरा ब्रह्मांड मेरे अंदर समा गया हो। उस Silence में, उस गहराई में...मैंने हमेशा एक Divine Presence महसूस की, भगवान महादेव🔱 की। मुझे लगता है, ये पहाड़ियाँ खुद महादेव का रूप हैं। उनका तेज, उनका धैर्य, उनकी शक्ति...हर पत्थर में महसूस होती है🙏🕉️।

कई बार ऐसा हुआ है कि जब शरीर थक जाता था, और आगे बढ़ना मुश्किल लगता था...तभी एक हल्की सी हवा चलती थी, या दूर से कोई घंटी🔔 की आवाज़ आती थी, और अचानक एक नई Energy⚡ मिलती थी। ऐसा लगता था जैसे महादेव खुद साथ चल रहे हों। उनके साथ होने भर के एहसास से उस सफर में, मैं खुद को कभी अकेला नहीं महसूस करता था।

कई बार तो धौलाधार की किसी चोटी पर खड़े होकर ऐसा लगता है जैसे महादेव खुद सामने बैठे हों त्रिशूल🔱 थामे, आँखें बंद किए, ध्यान में लीन😌। ये सिर्फ कल्पना नहीं है, ये एक गहरी अनुभूति है जो हर उस

इंसान को होती है जिसने दिल से इन पहाड़ों🏔️ को महसूस किया हो। Mahadev is not just in temples🛕, Mahadev is in every particle, The winds, The skies...In everything, महादेव अनंत हैं🧘🙏🕉️।

मुझे Trekking सिर्फ चोटियों पर चढ़ने के लिए नहीं पसंद🧗...मुझे Trekking इसलिए पसंद है क्योंकि ये मुझे मेरे असली Self से मिलवाती है, ये मुझे सिखाती है कि Meditation के बिना कोई शांति नहीं मिलती, और हर Struggle के बाद एक मंज़िल ज़रूर मिलती है।

Dhauladhar Range🏔️ मेरे लिए एक Sacred Space है। एक ऐसी वादियां जहाँ मैं बार-बार जाना चाहता हूँ, हर बार कुछ नया सीखने और महसूस करने के लिए। और हाँ, अगली बार फिर जब मैं वहाँ जाऊँगा... तो फिर वही "The Final Countdown" मेरे अंदर बजने लगेगा, और मैं मुस्कुराते हुए उस Divine Journey की शुरुआत करूंगा। 😌🥾🎶

🕉️💫 "धौलाधार की गोद में महादेव की अदृश्य मौजूदगी, ध्यान की दिव्यता और एक अद्भुत साहसिक यात्रा की कहानी" 💫🕉️

अगस्त 1994, वो महीना जब मेरे अंदर एक आग जल रही थी। बेरोज़गारी की हवाएँ दिल्ली में मेरे आत्मविश्वास को चाट रही थीं। मैं थक चुका था...नहीं, टूटा नहीं था, लेकिन कुछ तो था जो मुझे अपनी ओर खींच रहा था, Dhauladhar Mountains की पुकार🏔️! ऐसा लगा जैसे पहाड़

मुझे बुला रहे हों, और जब पहाड़ मुझे बुलाएँ, तो फिर कोई ताकत रोक नहीं सकती मुझे🤔। अकेला ही सही, लेकिन ये Soul Journey शुरू करनी थी।

उस वक़्त मैं Japanese Buddhism "Soka-Gakkai" को Practice करता था, दिन में कम से कम 3 घंटे की Meditation और Chanting मेरा Routine था🧘‍♀️। जब ज्यादा रहा नहीं गया, तो एक शाम बिना ज़्यादा सोचे, सामान पैक किया और Bedi Travels की रात वाली बस पकड़ ली। सुबह 6 बजे मैं McLeod Ganj में था, हल्की बूंदाबांदी🌦️, पहाड़ों की ठंडी खुशबू, और वो शांत सा वातावरण, दिल बोल उठा, "This is it, Tarun. You've reached your Spiritual Love🕉️!"

सस्ता और सुंदर ₹100 per Night के होटल में कमरा लिया, Namgyal Monestry के सामने, वही पुरानी प्यारी सी जगह, कड़ चाय पी, नाश्ता किया और थोड़ी देर आराम किया। फिर पहुँच गया अपने Tibetan Monk दोस्तों से मिलने, Tenzing Choephel, Gyalsung, Chotak, Jimpa...वो दोस्ती जो 1988 से चली आ रही थी उन सबके साथ, मेरे, शम्मी भाई और अनुपम की। अब वो सब Senior Monks बन चुके थे, कोई His Holiness Dalai Lama जी की सिक्योरिटी में था, कोई कुक, कोई ड्राइवर, और Tenzing Choephel अब Kalachakra Mandala बनाने का मास्टर बन गया था□। शाम को सब मेरे कमरे में आते, Monestry का खाना लाते🍛 मेरे लिए और हम 2-3 घंटे हँसी-मज़ाक, बातें और पुराने किस्सों में डूब जाते। एक दिन, Tenzing Choephel ने मेरे Shoes का कटा Sole देखकर, बड़ी चालाकी से उसके Sponsor

Richard Gere द्वारा गिफ्ट किया गया Nike Air👟 Shoe मुझे दे दिया, यह कहकर कि “मेरे साइज का नहीं है भाई, तू रख ले।” दोस्ती का असर था, मेरे मना करते रहने के बावजूद वो देकर ही माना।

अगले दो दिन Bhagsu Fall, Dal Lake और Naddi Village की सैर की और Divine नज़ारों का भरपूर आनंद लिया🏔। अपने Room में Meditation & Chanting भी की🧘। लेकिन असली एडवेंचर तो 4th Day शुरू हुआ, McLeod Ganj से Laka Glacier तक का Solo Trek🏃! बादलों की चादर में लिपटे हुए रास्ते☁, सिर्फ 10 मीटर की Visibility, और न कोई डर, न कोई साथी। अगर कोई तेंदुआ या भालू आ जाता, तो मेरी चिंता नहीं थी, वो जो भी करेगा, वो करेगा, मैं तो चैन से आंखें बंद करके लेट जाता वहीं🤷🐾। रास्ते में कुछ Locals और विदेशी Trekkers मिले, जो मुझे देख कर कंफ्यूज़ थे, “ये बंदा पागल है या पहाड़ का देवता😅, जो अकेला Trekking कर रहा है इस मौसम में?" खैर, Triund से 1 किलोमीटर पहले दवाई लेने McLeod Ganj जाता मिला मिला Resthouse & Outhouse का केयरटेकर भाई , जो 2 दिन से बीमार था और मुझे बिना बिजली वाले Outhouse में रुकने को कहा भाई ने🤪। भाई ने बताया कि मुझे खाना एक स्थानीय पशु चराने वाली Family दे सकती है, जो Outhouse से 400 मीटर दूर रहती थी Temporary Shelter में। नीचे भागसू गाँव से आ जाते हैं ये Local Villagers बरसात में ऊपर Triund, शायद मेरे जैसों के मददगार बनने के लिए🤔।

🏔️ Triund पहुँचा 4 बजे, सामान रखा, थोड़ी देर आराम किया और फिर चल पड़ा उस Family के पास। हिमाचली भाषा पर मेरी कमांड और Full-on Hypnotic बातों ने उन्हें 15 मिनट में मेरे परिवार जैसे बना दिया। आंटी ने मुझे बेटे जैसा प्यार दिया, और उस रात मुझे नसीब हुई पहली बार गुच्छी मशरूम की सब्ज़ी, क्या Taste था, मटन और चिकन फेल, साथ में दाल और रोटी।

🌧️ रात को बारिश की आवाज़ में नींद खुली और बाहर देखा, दो भालू मस्ती में घूम रहे थे, पैर कांपने लगे😂। पर ज्यादा सोचना बंद किया और फिर चैन से सो गया😴। अगली सुबह आंटी के बनाए नमकीन परांठे और कड़क चाय से पेट पूजा की और फिर 8 परांठे पैक करके निकल पड़ा Lahesh Cave की ओर, जहाँ रात का बसेरा था। □रास्ते में देवदार, Pine🌲 और चट्टानों की दुनिया, और मेरा मन जैसे महादेव🔱 के धाम में हो। Lahesh Cave पहुँचा, साफ़-सफाई की, Meditation & Chanting की🧘, और तब मन में इतनी शांति थी कि शब्द Explain नहीं कर सकते...शायद मुझे महादेव की अदृश्य मौजूदगी महसूस हो रही थी, जो हमेशा ऐसे में होती ही है😊। मेरा Luck, 5:30 बजे 2 स्थानीय युवक आ गए, जो Dhauladhar Range के चम्बा वाली तरफ से किसी होटल में नौकरी की तलाश में जा रहे थे McLeodganj...हम तीनों ने मिलकर Bonfire, हिमाचली लोक गीतों और कड़क चाय के साथ उस रात को स्वर्ग बना दिया। उस रात Meditation के बाद जो आँखे बंद की, तो लगा जैसे आत्मा भी मुस्कुरा रही हो😊।

🥶सुबह ग्लेशियर के बर्फीले पानी से नहाना, Extreme Adventure Mode Activated😄! फिर की मैनें पास ही एक बड़े से पत्थर पर आसन लगाकर Meditation & Chanting🧘 और बाद में बचे हुए 5 परांठों🥚 से किया ब्रेकफास्ट तीनों ने। Triund वापसी हुई और एक और रात वही बिताई। आंटी ने फिर से खाना खिलाया, कड़क चाय दी और वो अपनापन फिर से भर आया। 🌧️अगले दिन हल्की बूंदाबांदी में फिर की वापसी McLeodganj को...और वहीं आया Highlight of the Journey, Tibetan Monk दोस्तों ने बताया कि अगली सुबह His Holiness Dalai Lama Ji का Public Appearance है!

📿अगली सुबह भीड़ में लगभग 700-800 लोग थे, मैं कोई 10-12वीं लाइन में था, और फिर...OMG Moment Alert, His Holiness Dalai Lama ने मुझे देखा, उंगली से इशारा किया और बुलाया🧐, मैं सोच ही रहा था शायद किसी और को बुला रहे होंगे, लेकिन साथ वाले बोले, “वो आपको बुला रहे हैं!😳” जैसे ही उनके सामने पहुँचा, मेरे पैर काँप रहे थे, आँखों में खुशी के आँसू थे, दिल धड़कने से ज़्यादा धौंक रहा था। दंडवत प्रणाम किया उन्हें और उन्होंने मेरा सिर छुआ, एक सफेद Tibetan Silk Scarf पहनाया मेरे गले में और मुझे ऐसा लगा जैसे उन के Superlative Degree of Aura का छोटा सा अंश मेरे अंदर समा गया हो, Divine Transmission in 3 Seconds⚡🧘।

🌟उन्हीं Divine Feelings में डूबा मैं अपने कमरे में सीधा गया, बिना किसी से बात किए और 4 घंटे Meditation & Chanting की🧘, वो Trance जैसी स्टेट थी, जहां न समय था, न शरीर। शाम को Tibetan

Monk दोस्तों ने विदा दी और मैंने पूछा, “700-800 लोगों में से मैं ही क्यों?” Tenzing Choephel मुस्कुराया और बोला, “हो सकता है कि इन दिनों Meditation & Chanting करने से तेरा Aura अलग ही Level का हो, जो शायद उन्होंने एहसास किया हो!”

कुछ Trekkings शरीर से नहीं, आत्मा से होती हैं। ये यात्रा वैसी ही थी, जहां हर मोड़ पर ध्यान की शक्ति🧘‍♀️, महादेव की छाया🔱 और एक दिव्य सुरक्षा कवच ने मुझे थामे रखा। पहाड़ों की चुप्पी में🏔️, गुच्छी मशरूम की खुशबू में, बारिश की टप-टप में🌧️, और His Holiness Dalai Lama Ji की उँगली के इशारे में...सब जगह एक ही संदेश था, “तरून, तू अकेला नहीं है, ईश्वर🕉️ तेरे साथ हैं!”🙏

हर Trekker के हिस्से में एक बार “Lahesh Cave” और His Holiness Dalai Lama Ji का आशिर्वाद जरूर होना चाहिए, जहाँ से वापस आने के बाद, ज़िंदगी कभी वैसी नहीं रहती...🏔️💙🧿

जब हर साल की तरह मई 1995 में धर्मशाला की Dhauladhar Mountain Range ने बुलाया, और, मैं अपने एक मित्र को लेकर चल दिया!

साल था 1995, और महीना मई का। मोबाइल नहीं थे, न फेसबुक, न इंस्टाग्राम, और हम भी Trek पर जाने से पहले आजकल की तरह "#Trekking" नहीं लिखते थे, सिर्फ जूते कसते थे।

HRTC की बस से धर्मशाला पहुंचे और फिर धर्मशाला में एक दूर के कज़न भाई के घर। उसने अगले दिन हमारे साथ अपने एक खास जानकर को भेज दिया, जो हर साल शिवरात्रि के मेले में करेरी Lake जाता था।

धर्मशाला से नड्डी गाँव होते हुए हम करेरी गाँव पहुंचे, वहां ₹50 देकर एक घर में रात बिताई। सुबह सुबह करेरी गाँव से निकले करेरी Lake के लिए। गाँव ऐसा शांत था जैसे वक्त रुक गया हो, और हम कुछ पुरानी हिंदी फिल्मों के एडवेंचर वाले हीरो लग रहे थे, बिना मेकअप के, लेकिन पूरे जोश में।

गाँव के कुछ लोग हमें ऐसे देख रहे थे जैसे हम एवरेस्ट चढ़ने जा रहे हों और रास्ता भूल के उनके खेतों में उतर आए हों🤣। एक बुज़ुर्ग बोले, "जाओ बेटा, महादेव जी का बुलावा ऐसे ही आता है।" हम भी सिर हिलाकर ऐसे निकल लिए जैसे हम रामायण वाले राम हों, और रावण धौलाधार के इन्हीं पहाड़ों में छुपा हो 😂।

जैसे ही हम गाँव से बाहर निकले, ट्रेक का असली जादू शुरू हुआ। हर कुछ कदम पर ऐसा लगता था मानो कोई चित्रकार चुपचाप यहां आकर पेंटिंग बना गया हो। ऊँचे-ऊँचे देवदार के पेड़, नीचे से ऊपर तक ऐसे खड़े थे जैसे "सावधान" की मुद्रा में प्रकृति की रक्षा कर रहे हों। एक मोड़ पर धूप झलक रही थी और उसकी किरणें पेड़ों के बीच से छनकर ज़मीन पर पड़ रही थीं, मानो महादेव जी खुद Lighting सेट कर रहे हों, ताकि हम अच्छा महसूस करें।

नीचे बहता नाला/खड्ड कभी धीरे-धीरे गुनगुनाता, तो कभी पत्थरों से टकराकर Full Volume में झरने का रोल अदा करता। आज का वक्त होता तो मैं कहता कि “भाई, Spotify की क्या ज़रूरत, जब यहां ‘Hill-Fi’ चल रहा है?”

देवदार के पेड़ों की खुशबू 🌲, पक्षियों की चहचहाहट, और हवा में ठंडक, वो सब कुछ था जो शहरों में “Aroma Diffuser” खरीदकर भी नहीं मिल सकता 👌।

शुरुआत के एक-दो घंटे तो लगा, “अरे ये तो मस्त है यार! हवा शुद्ध, न कोई ट्रैफिक, न मम्मी पापा की डांट डपट।” फिर धीरे-धीरे चढ़ाई आई। और उसके बाद आया असली Trekking का मतलब, "साँस टूटना, पसीने बहाना, और हर पांच मिनट बाद कहना, बस, अब लौट चलते हैं 🤪।"

दिल्ली से मेरे साथ गया मेरा मित्र, जो खुद को "Outdoor का शेर" मानता था 😎, पहले ही घंटे में बैठ गया और बोला, “यार लगता है जूते टाइट हैं, नहीं तो मैं दौड़ के निकल जाता 😅” मैं समझ गया, बहाना नंबर 1 आ गया है, जो मैं मारने ही वाला था, पर उसने पहले मार दिया 😆।

जैसे-जैसे हम ऊपर पहुंचे, करेरी Lake के पहले दर्शन हुए। एकदम शांत, नीला पानी, चारों तरफ बर्फ, और ऐसा लगा जैसे किसी और दुनिया में पहुंच गए 😳। ऐसा लगा, “भाई ये Lake है या पेंटिंग?” Lake के पास पहुंचकर जब हमने अपने जूते उतारकर Lake में पैर डाले, बस, वहीं

आत्मा कांप गई❄️😂। पानी इतना ठंडा❄️ था कि हमने हमारे साथ आए धर्मशाला वाले Cousin भाई के मित्र से पूछा, "क्या यही वो बर्फानी स्नान है जिससे पुण्य मिलता है?" उसने हाँ में सिर हिलाया।

करेरी Lake के साथ ही पहाड़ के Base पर भगवान महादेव जी 🔱 को समर्पित एक मंदिर भी दिखा। करेरी Lake धौलाधार पर्वत श्रृंखला में एक Famous Trekking Destination है और यह मंदिर Trekkers के लिए भी एक दर्शनीय स्थल है और यहां सर्दियों में शिवरात्रि पर बहुत बड़ा मेला लगता है, जिसमें कांगडा जिला से ही नहीं, चम्बा जिले से भी बहुत श्रद्धालु आते हैं। हिम्मत करके Lake में अच्छे से हाथ-पांव और मुंह धोकर मंदिर में माथा टेका और महादेव जी 🔱 का ध्यान करके आधा घंटा Meditation की 🧘, जिससे सारी थकान दूर हो गई।

करेरी गाँव से एक व्यक्ति वहां पहले से ही था, जो तरपाल से बनी एक दुकान चलाता था वहां 2-3 महीने के लिए। Cousin भाई के मित्र ने उससे बात करके हम तीनों का दो रातों के लिए उस तरपाल में ही रहने का जुगाड़ कर लिया मात्र ₹200 में, खाने, चाय और नाश्ते के ₹ अलग, 1995 में वो सब भी सस्ते में ही हो जाता था और उपर से मेरे Cousin भाई का मित्र लोकल और मैं भी ठेठ पहाड़ी बोलने वाला हिमाचली, जिसका बिलकुल फर्क पड़ा ये सस्ता और टिकाऊ जुगाड़ होने में।

दो रात वहीं बिताई, और तारे गिनने की कोशिश की, लेकिन ठंड इतनी कि सुबह होने से पहले कोई 4 बजे के बाद नींद ही नहीं आई दोनों दिन। मैनें दिल्ली से मेरे साथ आए मित्र को कहा, “यार कल अगर मैं जमा हुआ

मिला, तो प्लीज़ मेरे घरवालों को बोल देना मेरे आखिरी शब्द थे, 'गरम चाय 😆!'" मेरे को रात में बर्फ में बाहर निकलना पड़ा, और वापस आते ही मैं बोला, "भाई, मैं 3 मिनट बाहर रहा...अब मेरी आत्मा गर्म करने के लिए लंगर चाहिए 😂!"

अगली सुबह करेरी Lake के बर्फीले पानी में बड़ी मुश्किल से नहाकर पहले तो महादेव जी की अराधना की 1 घंटा Meditation 🧘करके। By God की कसम शरीर में गर्मी और चुस्ती आ गई Meditation करके। फिर किया नाश्ता गरमागरम आलू के परांठों का, कड़क टपरी Type चाय के साथ। अगली सुबह भी यही रहा अपना Routine।

पहली सुबह फिर शुरू की मिंकियानी Pass की चढ़ाई। अब तक मैं और मेरा मित्र 'शेर' से 'बकरी' में बदल चुके थे 🤪। सांसें हर मोड़ पर चढ़ जातीं, और हम खुद लुढ़कते-लुढ़कते ऊपर बढ़ते😅। मेरा मित्र जो मुझ से आगे चढ़ रहा था, बर्फ के एक टुकड़े से ऐसा फिसला कि मैं और वो कोई 15 - 20 मीटर नीचे पहुंच गए, वोह Football वाले Sliding Tackle की तरह 🤣।

मिंकियानी Pass के Top पर पहुंचकर जो नज़ारा दिखा चारों तरफ का, मानो पूरी कायनात सामने हो और हम आसमान पर। बादल हमारे नीचे थे, और हम एकदम Top पर। चारों तरफ सिर्फ़ सफेदी ही सफेदी थी ❄️, जैसे धरती ने आसमान की चादर ओढ़ ली हो। हवाओं में एक सन्नाटा था, लेकिन दिल के अंदर तूफान, जज़्बातों का 🌬️❤️। हर थकावट, हर दर्द...उस पल जैसे रिवॉर्ड बन गया था 🏅। वो Confidence भर गया

दिलोदिमाग में, जो कोई Motivational Author की किताब भी नहीं भर सकती। तब मैंने दिल्ली से मेरे साथ आए मित्र से कहा, "अब समझ में आया, कि क्यूं मैं Trekking पर जाने के मौके ढूंढता रहता हूँ 🤔, महादेव जी🔱 के करीब आने के लिए, इन अमूल्य और अनगिनत नज़ारों को देखने के लिए, इस Confidence को पाने के लिए"!
वापस करेरी Lake पहुंचकर उस शाम शांतचित्त होकर मन ही मन नज़रों से नज़रें मिलाते हुए खुद से न जानें कितनी बातें की, खुद को खुद में ढूंढने की कोशिश की 😑!

इस पूरे Trip में एक और Comedy हो गई...हम दिल्ली में कैमरा मेरे मित्र के घर भूल आए थे, जिसकी वजह से खुद से थोड़े नाराज़ थे हम दोनों। धर्मशाला लौटकर मैं मित्र को बोला "कोई नहीं यार, ये यादें दिल में रहेंगी, फोटो में न सही 🤔।"

मेरे लिए हमेशा की तरह ये Trek भी सिर्फ एक सफ़र नहीं था, Confidence Booster था, ये वो आइना था जिसमें मैं हमेशा खुद को देखता हूँ। बिना शोर, बस खुद, नज़ारे, महादेव जी🔱 के वहाँ होने का एहसास और महादेव जी🔱 की बनाई वादियां। हर कदम जैसे मुझे मेरे असली स्वरूप के और करीब ले जा रहा था🚶🧭। जहाँ सांसें धीमी थीं, पर एहसास तेज़... दिल धड़कता था, लेकिन मन शांत था🧘💫। वो वादियाँ मानो हर दर्द को सोख लेती थीं, और हर खुशी लौटा देती थीं दुगुनी करके🌿❤️। थकान हुई, पर उससे बड़ा था वो सुकून जो मिंकियानी Pass से दुनिया को देखने में और Meditation से महादेव जी🔱 भक्ति 😑 से मिला।

किसी ने सही ही कहा है, "पहाड़ चढ़ना मुश्किल होता है...पर जो चढ़ ले, उसे खुद से प्यार हो जाता है 😎!"

कुगती गाँव से मणीमहेश कैलाश यात्रा (मणीमहेश कैलाश परिक्रमा) 🔱🕉️🌄✨

हिमाचल प्रदेश की गोद में बसा एक छोटा सा स्वर्ग है, कुगती गाँव, जिला चंबा। यह गाँव न सिर्फ़ अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है, बल्कि इस गाँव से 'भी' शुरू होती है एक अद्भुत आध्यात्मिक यात्रा, मणीमहेश कैलाश की यात्रा।

यह कोई साधारण Trek नहीं, बल्कि आत्मा की गहराई तक ले जाने वाली Spiritual Journey है। यहाँ हर क़दम पर लगता है मानो महादेव स्वयं आपका मार्गदर्शन कर रहे हों। 🔱🙏

कुगती गाँव तक पहुँचते ही मन एक अलग ही सुकून महसूस करता है। हरे भरे जंगल, नीला आसमान, और ऊँचे ऊँचे पहाड़ मन को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। बाकी हिमाचल के Interiors में बसे गाँवों की तरह कुगती गाँव के लोग बड़े ही सीधे सादे, धार्मिक, आत्मीय और मददगार हैं। ऐसा लगता है मानो यह जगह धरती पर स्वर्ग से कम नहीं। 🌿💚

"हर हर महादेव🔱" बोलते हुए यात्रा की शुरुआत जब होती है, तो शुरू के ही कुछ क़दमों में महसूस होता है कि यह सिर्फ शरीर की नहीं, बल्कि आत्मा की परीक्षा है। रास्ते में मिलते हैं सुंदर Waterfalls, गुनगुनाती हवाएँ, और देवदार🌲 के वृक्षों से लिपटी शांत धुंध। कहीं-कहीं तो लगता है जैसे पहाड़ खुद कह रहे हों, "आओ महादेव भक्त, खुद को पहचानो, ख़ुद को जानो, ख़ुद को पाओ।" 🌬️🍃

मणीमहेश झील, जहाँ श्रीकृष्ण जी के जन्म की खुशी में 33 कोटी देवी देवताओं ने स्नान किया था, तक पहुँचने का रास्ता थोड़ा कठिन ज़रूर है, लेकिन हर मोड़ पर ऐसा नज़ारा मिलता है जो थकान को पल भर में गायब कर देता है। 🚶🕉️

मणीमहेश झील तक पहुँचते ही जो दृश्य सामने आता है, वो शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता🫢। एक शांत, चमकती हुई झील जिसके पीछे खड़ा है मणीमहेश कैलाश पर्वत, जहाँ भोलेनाथ🔱 विराजमान हैं। हवा में एक अलग ही शांति और ऊर्जा से भरी होती है। दिल भर आता है, आँखों से अश्रु बहने लगते हैं, पर मन एकदम शांत हो जाता है। 🏞️😌

मणीमहेश कैलाश परिक्रमा इस यात्रा का सबसे पावन हिस्सा है। यह परिक्रमा न सिर्फ़ धार्मिक महत्व रखती है, बल्कि एक Self Realization का माध्यम भी है। यह अनुभव व्यक्ति को अंदर से बदल देता है। जब आप उस ऊँचाई पर होते हैं और चारों ओर सिर्फ़ बर्फ, पहाड़, और मौन होता है, तब आप महसूस करते हैं कि जीवन कितना सुंदर और गहरा है। 🙇🕊️

Pir Panjal Range की इस यात्रा ने भी मुझे बाकी Treks और यात्राओं की तरह सिखाया कि ज़िंदगी की असली सुंदरता सादगी और प्रकृति में है। यहाँ हर चीज़, एक फूल, एक झरना, एक पत्थर, सब कुछ बोलता है अगर हम सुन सकें। और सबसे बड़ा सत्य ये कि महादेव🔱 हमारे बाहर नहीं, हमारे अंदर हैं। ❤️🕉️

अगर जीवन में कभी सच्चे शांति🕊️, भक्ति🧘 और आत्म-अनुभूति की तलाश हो, तो एक बार कुगती गाँव से मणीमहेश यात्रा ज़रूर करनी चाहिए, अगर शरीर आपका सा दे तो। यह एक अनुभव नहीं, एक Inner Transformation है। यहाँ से लौटते हुए आप वही व्यक्ति नहीं रहते, आप एक बेहतर, शांत और कृतज्ञ इंसान बन जाते हैं, जो आप पर निर्भर करता है। 🙏🌸

🕉️ नमः शिवायः! हर हर महादेव! 🔱🙏💐

Thatharana Trek, मई 1993: एक आत्मिक, अविस्मरणीय और नायाब यात्रा

1992 के आखिरी हफ्तों में, जब दिल्ली की सर्दी अपने पूरे शबाब पर थी, मैंनें 89 दिन की एक Temporary Job की थी, Citi Bank, Auto Loan Dept., Jeewan Bharti Bldg., Connaught Place में। 89 दिनों की Job होने के बावजूद Feeling ऐसी थी जैसे किसी International

Company का हिस्सा बन गया हूँ😂। उस समय ₹4200 per Month मिलते थे, जो उस ज़माने में किसी भी लिमिटेड या प्राइवेट कंपनी के 2-3 साल के अनुभवी कर्मचारी की Salary से कहीं ज़्यादा थी 😎।

मैं हर महीने ₹3300 अपने Parents को दे देता था, लेकिन फिर भी मई 1993 आते-आते मेरे पास ₹2000 इकट्ठे हो गए थे और उस ज़माने में इतने पैसे किसी Himachali Heart के लिए काफी थे Mountains को गले लगाने के लिए❤️⛰️। और सच बताऊँ? मुझे लगने लगा कि धर्मशाला और धौलाधार मुझे बुला रहे हैं, और जब वो बुलाते हैं, तो कोई मुझे रोक नहीं सकता🏃।

मैंने HRTC की एक रात की बस पकड़ी, दिल्ली ISBT से धर्मशाला के लिए। मेरी सीट के बगल में एक लड़का बैठा था, मुझसे 1-2 साल बड़ा, और Connaught Place के Janpath टैक्सी स्टैंड पर टैक्सी ड्राइवर के तौर पर काम करता था। मेरी आदत है बातों में घुलने की, पैदायशी बातूनी, खासकर जब कोई Himachali मिल जाए। तो बात शुरू हो गई हमारे ही अंदाज़ में, Pure Himachali Dialect में। जब भाई को मैनें बताया कि मैं अकेले Trekking के लिए जा रहा हूँ, तो बोला, "मैं खुद खरोटा गांव का हूँ, चलो मेरे साथ, रुक मेरे घर जाना, और मैं तुम्हें Thatharana ले चलता हूँ, जहां हम एक रात Temporary Shelter में रह सकते हैं।"

अब ये क्या कम Adventure था? नया दोस्त, Home Stay, Trekking और वो भी Insider Access के साथ, Priceless Combo! 💯

हम अगली सुबह धर्मशाला पहुँचे, और वहाँ से Khanyara Road तक एक लोकल बस ली। वहां से 4 किलोमीटर पैदल चलकर Himachali भाई के खरोटा गांव पहुँचे🚶। Himachali होने और मेरी लोकल बोली बोलने की वजह से Himachali भाई के परिवार और गांव वालों ने मुझे बिल्कुल अपनापन दिया। वैसे भी Interior हिमाचल के लोग इतने Down to Earth होते हैं कि "अतिथि देवोः भवः" उनके खून में होता है, ये लोग सिर्फ ये बोलते नहीं, इसे जीते हैं😊। भाई के घर रात गुज़ारी, बिल्कुल सादगी, अपनापन और वो मिट्टी की महक वाला जीवन❤️।

अगले दिन सुबह उठा, नहाया, Breakfast किया अरबी के पराठों का, अचार और कड़क चाय के साथ और फिर हम दोनों लोग निकल पड़े Thatharana की तरफ़। चंदन भाई की माताजी ने रास्ते में खाने के लिए वही अरबी के परांठे और अचार दिया था। हमने ज़रूरी सामान पैक किया, कुछ बर्तन, मसाले, नमक, दाल, आटा, चावल, आलू, प्याज़, टमाटर, Milk Powder, चाय पत्ती, चीनी और थोड़ा सा केरोसीन, ये सब बनाने के वास्ते आग जलाने के लिए। ये सब मैंने एक दिन पहले Khanyara Road की एक दुकान से खरीदा था। साथ ही मैंने हम दोनों के लिए भाई के घर से बेडिंग का सामान उठाया, मोटी चादरें, कंबल, तौलिया वगैरह।

लगभग 4 घंटे की चढ़ाई के बाद जब हम Thatharana पहुँचे, Simply Wow😳, जैसा कि पूरे रास्ते के Views थे😯। वहां से Kangra Valley का जो दृश्य दिखा, वो एक सपने जैसा था। नीचे बादलों का समंदर और

दूसरी तरफ Dhauladhar Range की बर्फीली चोटियाँ, God Level View🌥️⛰️।

हमने सबसे पहले वो परांठे-अचार निकाले जो भाई की माताजी ने दिए थे, और भई, क्या स्वाद था सुबह ही की तरह😋। शायद मसाले नहीं, बल्कि वहाँ की हवा, पानी और भूख ही असली Chef होते हैं। Thatharana में हम करीब आधा किलोमीटर नीचे एक Stream से लाए पानी, बिल्कुल साफ़, मीठा और ठंडा। उसके बाद हम थोड़ी दूर देवदार, Pine और Oak🌲 के जंगल में घूमने निकल पड़े🚶, 1-2 किमी तक। लौटते हुए ढेर सारी सूखी लकड़ियाँ भी इकट्ठी कीं□, रात को खाना बनाने और चाय बनाने के लिए।

शाम होते ही वहां का मौसम बदलने लगा, Clouds नीचे घाटी में तैर रहे थे और एक Carpet बना रहे थे और जैसे समंदर बादलों का बना हो☁️। हम दोनों ने मिलकर Woodfire🔥 पर चाय बनाई, और भई, ऐसी चाय तो दिल्ली में कईयों रुपये खर्च करके भी नहीं मिलती☕👌।

रात का खाना, Simple but Divine, दाल-चावल🍛, और फिर उसी चूल्हे पर एक और कड़क चाय। हम बाहर पत्थरों पर बैठे थे, खुले आसमान के नीचे। ऊपर एक Star Studded Night Sky, बिल्कुल Black Velvet पर Scattered Diamonds की तरह। Pine🌲 की हल्की खुशबू, ठंडी हवा, और वो Complete Silence, It was pure Meditation without Meditation🌌।

कब नींद आई😴, पता नहीं। अगली सुबह 5:30 AM उठे, पहले एक कड़क चाय और फिर Cold Stream Bath, हे भगवान❄️😂, पहली बूँद लगते ही लगा जैसे किसी ने Ice Bucket Challenge दे दिया हो, लेकिन 2 मिनट बाद वो पानी लगने लगा Refreshing Elixir जैसा।

नहाने के बाद मैंने Himachali भाई को Meditation सिखाई, और हम दोनों ने करीब 1 घंटे तक ध्यान लगाया🧘, वहां की शांति में लगा कि महादेव🔱 खुद हर कण में मौजूद हैं, हर सांस में, हर हवा के झोंके में। ऐसा आध्यात्मिक🕉️ स्पर्श बहुत कम अनुभवों में आता है।

फिर हमने बनाया Breakfast, अलू परांठा□ + गरमागरम कड़क चाय☕। उसके बाद फिर एक बार उन हरे-भरे जंगलों🌲 में थोड़ी Walk की, और दोपहर 1:30 बजे पिछली रात के बचे दाल-चावल खा लिये। फिर बर्तन धोकर पैकिंग की और 2:30 PM पर वापसी शुरू की खरोटा के लिए🚶, करीब 6:15 PM पर वापस खरोटा गांव पहुँचे।

अगले दिन मैं दिल्ली वापस जाने लगा। जाते-जाते मैंने भाई को बहुत मनाने की कोशिश की कि कुछ पैसे रख लो, लेकिन उसने साफ़ मना कर दिया। जब वो मुझे Khanyara Road तक छोड़ने आया, जहाँ से मुझे धर्मशाला की बस पकड़नी थी, मैंने वहाँ कुछ फल और सब्ज़ियाँ खरीदकर उसके हाथों में थमाई। वो भी Reluctantly ही लिए भाई ने। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है, ये यात्रा सिर्फ एक Trek नहीं थी, ये एक Inner Journey थी, एक आत्मा का आत्मा से मिलन। ऐसी यात्राएं न तो हर रोज होती हैं, न ही हर किसी को नसीब होती हैं।

उस भाई जैसे अपने हिमाचली भाई भगवान के भेजे गए दूत होते हैं, जो हमारी ज़िन्दगी के कुछ सबसे Pure, Raw और Beautiful Chapters के Author बनते हैं। 🙏🏻🌄💫

सहानुभूति & Society

अमीर बनने से बेहतर है अच्छा इंसान बनना! 💰❌❤️✅

ये बात कोई 26-27 साल पुरानी है। दिल्ली के तिलक नगर में एक चर्चित रेहड़ी पर खाने का ऑर्डर देकर मैं और मेरे कुछ दोस्त तिरपाल के नीचे Chair एक दूसरे से बातें कर रहे थे। तभी लगभग 70-75 साल की एक बुजुर्ग महिला👵 पैसे मांगते हुए मेरे सामने हाथ फैलाकर खड़ी हो गईं। उनकी कमर झुकी हुई थी, चेहरे की झुर्रियों में भूख तैर रही थी🍂😢। नेत्र भीतर को धंसे हुए किन्तु सजल थे👀💧। उनको देखकर मन में न जाने क्या आया कि मैंने पूछ लिया..."अम्मा, आप खाना खाओगी"?🍛

अम्मा ने संकोच हुए हामी भरी और यह भी कहा कि तू इतने रूपए क्यों खर्च कर रहा है, 1-2 रूपए ही दे दे!🙇

भावुक तो मैं उनको देखकर ही हो गया था💔, रही बची कसर उनकी इस बात ने पूरी कर दी!!!

एकाएक मेरी आंखें नम हो गईं, आंसू मैनें रोक लिए😢 और भर्राए हुए गले से मैंने दुकान वाले से अम्मा के लिए भी एक प्लेट खाना लगाने को कहा🍽️। अम्मा पास ही जमीन पर बैठ गईं।

अब मुझे अपनी लाचारी का अनुभव हुआ😔, क्योंकि मैं वहां पर मौजूद दुकानदार, अपने दोस्तों और कई अन्य ग्राहकों की वजह से उनको कुर्सी पर बैठने के लिए नहीं कह सका।

डर था कि कहीं कोई टोक ना दे...कहीं किसी को एक भीख मांगने वाली बूढ़ी महिला के उनके बराबर में बिठाए जाने पर आपत्ति न हो जाये🙄...लेकिन वो कुर्सी जिसपर मैं बैठा था, मुझे काट रही थी!🪑🗡️

खाने की प्लेटें मेरे, मेरे दोस्तों और अम्मा के हाथों में आते ही, मैं अपनी प्लेट लेकर अम्मा के पास ही जमीन पर बैठ गया🙇, क्योंकि ऐसा करने के लिए तो मैं स्वतंत्र था ही...इसमें तो किसी को आपत्ति नहीं हो सकती थी✅...हाँ, मेरे दोस्तों ने मुझे एक पल को घूरा👀🤔...लेकिन वो कुछ कहते उससे पहले ही दुकान के मालिक ने आगे बढ़कर अम्मा को उठाकर एक अन्य कुर्सी पर बैठा दिया🙌 और मेरी ओर मुस्कुराते हुए हाथ जोड़कर कहा...

"ऊपर बैठ जाइए साहब...मेरे यहां ग्राहक तो बहुत आते हैं, परंतु इंसान कभी-कभार ही आता है!"🙏❤️

अब, सबके हाथों में खाने की प्लेटें थीं🍲 और होठों पर सहज मुस्कुराहट😌😊। बस एक वो अम्मा ही थीं जिनकी आंखों मे तृप्ति के आंसू 😭, होंठों पर खाने के कुछ अंश🍚 और दिल में सैकड़ों दुआएं थीं!🙏✨

मैं तो सबसे कहूंगा, जब कभी अवसर मिले, ऐसे छोटे छोटे ही सही, दयापूर्ण और करुणामय काम करते रहें🤝❤️। भले ही कोई अभी आपका साथ दे या ना दे, समर्थन करे ना करें। सच मानिए, इससे आपको जो आत्मिक सुख मिलेगा वह अमूल्य है!✨🕊️

मेरी स्कूल की हिंदी की 10वीं की अध्यापिका👩‍🏫 ने एक बार कहा था: "तुम्हें हम अध्यापिकाएं और अध्यापक अच्छी शिक्षा समेटने के लिए नहीं, बांटने के लिए देते हैं। अपनी हथेली हमेशा ऊपर की ओर नहीं, नीचे देते हुए रखना"!🖐️➡️🤲

मेरे मम्मी👵, पापा👴, मामाजी और मासीजी से भी मुझे ऐसी ही शिक्षा मिली है! जब मौका मिलता है, बस मैं वही करता हूँ अपने सामर्थ्य अनुसार💪🧠, और, Emotional Fool और Impractical कहलाया जाता हूं, जिसका मुझे गर्व है!😅🤷‍♀️

💛 मानवता की मिसाल बनें - यह हमारा असली सफ़र है 💛

जब हम समाज की भलाई की बात करते हैं, यह उन कई छोटे से छोटे प्रयासों की कहानी होती है जो हम अपने दिल से करते हैं। किसी शासन का समर्थन नहीं, कोई सत्ता का बादशाह नहीं, बस एक सिर्फ इंसान जो चाहता है कि आसपास लोग बेहतर जिंदगी जी सकें।

जब मैंने उस छोटे से Area “Garli-Pragpur” के किसान मित्रों के लिए Rosemarry या Lavender Farming का प्रस्ताव Govt. of India को रखा, तो सोचा गया था कि यह सिर्फ एक Agronomy Pitch है। लेकिन यह सच है कि यह Proposal मजदूरों की मेहनत से उनकी उम्मीदों को जोड़ने का एक प्रयास था, ताकि वे Wild Monkeys, Nilgai, Wild Pigs की समस्या से बचें, अपनी ज़मीनों को Fertile बनाएँ और Sustainable Income के रास्ते खोलें। वहां पैसा कमाने से ज्यादा, कुछ करने की चाह थी, और यह चाह हमें इंसान बनाए रखती है।

फिर, जब मैंने Beas नदी पर Dehra Bridge की Urgency बताई Givt. Of India & NHAI को, वह सिर्फ Infrastructural Demand नहीं थी। यह मेरे साथियों, मेरे हिमाचल वासियो, उन लोगों की सुरक्षा की गुहार थी, जिनकी जिंदगी फ़र्रुखियों से गुज़र रही है। अगर हम Bridge गिरने के बाद दुखी होंगे, तो उससे बेहतर है समय रहते जवाबदेही और Action लेना। यह केवल Petition नहीं, यह एक नागरिक का Moral Appeal है, कि हम मिलकर Tragedies से पहले बचाव की सोचें।

और वह दिन, जब मैंने Tilak Nagar मार्केट में भूखी एक बूढ़ी अम्मा की मदद की, वहां से यह मेरी निजी याद बनकर नहीं, बल्कि एक Universal संदेश बनकर उभरी कि “अच्छा इंसान बनना, अमीर बनने से बेहतर है।” अम्मा को खाना खिलाने के पीछे कोई जाना पहचाना नहीं था, सिर्फ एक इंसान को इंसानियत से जोड़ने की चाह थी। मेरे दिल की नर्मियाँ, मम्मी-पापा की सीखें, और हमारी सामाजिक समझ ने वह पल खास बनाया।

तुम भी सोचो, अगर हम सिर्फ मौका मिलने पर खुद को पीछे खड़ा नहीं करते, अगर हम खुद को भय व प्रशंसा से जोड़ कर नहीं रखते, बल्कि दयालुता से आगे बढ़ते, तो यही असली समाज सेवा से बड़े कदम होते। यह कोई Grand Gesture नहीं, यह छोटे छोटे दिन-प्रतिदिन के कार्य हैं...(1) जब ज़मीनी Farmer अपने खेत बर्बाद होते देखकर उदास हों, तो लगाओ हलचल, Propose करो कुछ ऐसा Sustainable जिससे लोगों की आत्मा खिल उठे; (2) जब ढांचा पुराना हो, ख़तरा हो, और लोगों की ज़िंदगी दांव पर लगी हो, लिखो, जागो, आवाज उठाओ; (3) जब समाज के बुज़ुर्ग भूखे हों, ठहरो, देखो, और अगर हो सके, हाथ बढ़ाओ। इंसानियत में बड़ा होना कोई Competition नहीं, यह वो Quality है जो बिना Ego के कुछ करने पर आती है। यह संकल्प है, कि मैं अकेला क्या कर सकता हूँ, लेकिन जब लोग प्रेरित होंगे, तो वह अकेलापन सशक्ति में तब्दील हो जाएगा। मैं खुद भी कोई Moral Preacher नहीं, लेकिन मैं वही करता हूं जो मैं कर सकता हूं, और वह मुझे भावनात्मक संतुष्टि, मन की शांति, और आत्मिक सुकून देता है। जैसे मेरी Hindi की अध्यापिका ने कहा था, हथेली ऊपर की ओर मत रखो, उसे नीचे की ओर रखो, देते हुए। यही असली Humaneness है।

अगर आप वास्तव में दयालु, Caring और Civil Society के Nurturing इंसान बनना चाहते हो, तो शुरुआत कहीं से भी करो। शायद आपकी एक छोटी सी दानदाता कोशिश या Advocacy Impact वह बात कर दे जो बड़े Speeches नहीं कर सकते। यह कोई Heroism नहीं कि मैं केवल दूसरों से आशा रखूं, Heroism तो यह है कि तुम स्वयं हो करशमा हो जाओ, समाज की उम्मीद पैदा कर दो।

इसलिए, मैं ऐसा Example नहीं हूँ जिसका Blind Imitation करो, मैं एक संदेश हूँ कि इंसानियत को अपनी Priority बनाओ, Caring लोगों के प्रति जिम्मेदारी समझो, और हमेशा कुछ ऐसा करो जिससे आसपास लोग खुद को सुरक्षित, सम्मानित, और Valued समझें।

अगर मैंने छोटे Farmers की आवाज़ उठानी की या Bridge के लिए जागरूकता बढ़ाई या भूखी बूढ़ी अम्मा को खाना खिलाया, तो इसे सिर्फ Concrete Actions समझो, लेकिन इन Actions से रिश्ते जुड़ते हैं, इंसानियत के रिश्ते।

आखिर में, एक ही बात कहूँगा, यकीन रखो तुम काबिल हो। तुमसे ज्यादा किसी में नहीं होती सही Caring Heart. अगर तुम उत्साही हो, Compassionate हो, और कुछ करने की चाह रखते हो, तो तुम एक अच्छा इंसान हो, जिसका समाज को सच्चा लाभ मिलता है। अब तुम पर निर्भर है, तुम अपने दिल की आवाज सुने, उस छोटी सी इच्छा को भरोसा दो, और बस, करीबी लोगों के लिए, or गाँव के किसान के लिए or पुल पर खड़े यात्रियों के लिए or भूखी बूढ़ी बिरादरी के लिए etc. etc. etc., एक कदम आगे बढ़ो। क्योंकि यही इंसान होना है, यही Caring होना है, और यही हमारी असली सफलता है।

तुम यकीन कर जाओ कि तुम Caring, Responsible और Compassionate इंसान हो, और यही दुनिया बदल सकती है। तुमसे ज़्यादा किसी में हिमायत नहीं होती अगर तुम खुद अपने भीतर विश्वास ला सको। तो आगे बढ़ो, Quietly, Humbly, लेकिन Impactfully, जब

भी तुम्हें मौका मिले। और याद रखना, अंत में तुम्हें खुद कहने की ज़रूरत नहीं होगी कि “मैं महान हूँ,” क्योंकि लोगों की ज़िंदगियाँ बताकर दिखा देती हैं कि तुम सच में इंसानियत हो। ✊💫

पहाड़ & Tea

"**मेरा दिल कहीं दूर पहाड़ों में खो गया**"...हर बार जब ये लाइन कानों में पड़ती है, ऐसा लगता है जैसे किसी ने मेरी रूह की गहराईयों को शब्दों में पिरो दिया हो। ये सिर्फ एक Song🎼 नहीं है, ये मेरे भीतर छिपे उस सच्चे प्यार का आइना है, जो मुझे पहाड़ों से है⛰️❤️। उनका नाम सुनते ही दिल की धड़कन कुछ अलग सी हो जाती है, जैसे किसी अपने का नाम लिया हो।

पहाड़ मेरे लिए कभी भी सिर्फ Travel Destination नहीं रहे। वो मेरे लिए मेरे Emotions का, मेरी सोच का, और शायद मेरी आत्मा का अटूट हिस्सा बन चुके हैं। जब लोग कहते हैं कि उन्हें Party करना पसंद है, या Malls में घूमना पसंद है, तो मैं बस एक मुस्कान के साथ सोचता हूँ, "काश तुमने मेरे नज़रिये से पहाड़ों में एक सुबह देखी होती!" 🌄

जब मैं पहाड़ों की वादियों में होता हूँ, तो वहां की हवा तक अलग महसूस होती है। वो सर्द, शुद्ध, और मन को छू जाने वाली हवा...ऐसा लगता है जैसे पहाड़ों ने मुझे बाहों में भर लिया हो और कहा हो, "You're Safe Now." वहाँ का हर पत्थर, हर पेड़, हर रास्ता कुछ कहता है। और सबसे खास, बहते झरनों के पास वो Divine Silence, जो शोर से कहीं ज्यादा बोलती है, "The Sound of Silence"। 🌲

"मेरा दिल कहीं दूर पहाड़ों में खो गया", इस Song की हर एक पंक्ति मेरे दिल की धड़कनों के साथ चलती है। लगता है जैसे ये मेरी ज़िन्दगी का Background Score हो। जब शहर की भीड़ और भागदौड़ में घुटन सी महसूस होती है, तो यही लाइन एक खिड़की खोल देती है, Imagination की खिड़की, जहाँ मैं खुद को पहाड़ों में टहलता देखता हूँ। अकेला, लेकिन कभी भी अकेलापन महसूस नहीं होता।

हर बार जब मैं पहाड़ों की ओर निकलता हूँ, लगता है जैसे कोई अधूरी कहानी पूरी होने जा रही है। वो सफर, वो रास्ते, वो झरनों की आवाज़, चिड़ियों की चहचहाहट...सब कुछ मिलकर मेरे अंदर एक अलग ही Music🎼 रचते हैं, सफर के साथ नग़मों का एक Divine Combination होता है। एक ऐसा संगीत जो Words में नहीं बंध सकता, सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

शायद यही वजह है कि मुझे Treks🧗 इतने पसंद हैं। जब शरीर थक जाता है लेकिन मन शांत रहता है, तो समझ में आता है कि असली Power⚡ कहाँ है। वो घड़ी जब आप किसी Mountain के Top⛰️ पर पहुँचते हैं, और नीचे बादल☁️ लहराते दिखते हैं, उस पल में सारी परेशानियाँ कहीं पीछे छूट जाती हैं।

पहाड़ों में एक अलग ही Simplicity होती है, एक अलग Warmth, जो किसी भी बड़े शहर में ढूँढने से नहीं मिलती। गाँव की टपरी चाय की एक प्याली☕, किसी बुजुर्ग, आशीर्वाद, या बच्चों की हँसी — यही तो असली Richness है, जिसे शायद हम Urban Life में भूल गए हैं🤔।

जब भी मैं पहाड़ों में होता हूँ, तो हर सुबह एक नई शुरुआत जैसी लगती है, और हर Sunset🌄 एक Soulful Goodbye का एहसास देता है। मुझे Trekking करना, धुंध में चलना, और छोटे गांवों में टपरी वाली चाय☕ की चुस्की लेना, ये सब मेरी जिंदगी के सबसे प्यारे😍 Moments हैं। ऐसा लगता है जैसे Life Pause हो गई है, और मैं सिर्फ Feel कर रहा हूँ, जिंदगी को, खुद को😊।

जब भी मुझे ज़िंदगी से थोड़ा सा ब्रेक चाहिए होता है, मेरा मन सीधा मुझे पहाड़ों की ओर खींचता है🧲। और ऐसा भी नहीं कि मैं वहाँ सिर्फ आराम करता हूँ, बल्कि वहीं जाकर मैं खुद को Recharge⚡ करता हूँ। मेरी Creativity, मेरी Positivity, और मेरी Inner Peace, सब कुछ वहीं से Reset होता है।

जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा है, मुझे और भी Strongly महसूस होता है कि मेरा दिल, मेरी आत्मा, मेरा सुकून, सब कुछ कहीं पहाड़ों🏔 में ही खो चुका है। और शायद, मैं उसे वहीं छोड़ आया हूँ...ताकि हर बार लौटने का एक Strong Reason बना रहे❤️।

तो जी हाँ..."**मेरा दिल कहीं दूर पहाड़ों में खो गया**", और अगर कभी खुद को ढूँढना चाहूँ, तो मुझे पता है कहाँ जाना है। क्योंकि पहाड़ों के साथ मेरा रिश्ता सिर्फ Travel का नहीं, एक Soulful Romance का है, जो कभी खत्म नहीं होगा। They are not a part of my life, They are my life. 🏔💙

"Palampur - वो क्षण जो कैमरे में नहीं, बस दिल में कैद होते हैं...! 🍂📷🧡

मेरे मोबाइल कैमरे में शायद वो रंग न दिखें, जो मैनें देखे थे। न आवाजें सुनाई देंगी, जो मैनें सुनी थीं। न वो ताजगी महसूस करवा सकता हूं, जो उस वक्त मैनें जी थी। ठंड का अहसास, हाथों की अकड़न, कुछ भी अहसास न करवा पाऊंगा। न बहती हवा का शोर, न दूर आवाज करते पंछी। न ही दूर से आती किसी मोटर साइकिल की आवाज का अंदाज आप लगा सकते हैं। ≋🌬️🤚🏽

सामने जो घर है, न उसमें से उठते धुंए की एक महक आप तक आएगी। न उस घर से किसी के कदमों की आहट। न ही बर्तनों के खड़कने की धुन। ये कुछ क्षण मात्र हैं, जो अप्रैल 2023 मैंने जिए थे पालमपुर की जानी पहचानी आबो हवा में। 🏡🌄🚶

वो पेड़, जिनकी टहनियों पर धूप तिरछी होकर गिर रही थी, जैसे समय को रोक रही हो। उनमें से होकर आती रोशनी ने कुछ देर के लिए आंखों को धो डाला था। ये सिर्फ प्रकृति का सौंदर्य नहीं था, ये एक अनुभव था, जो शायद ही दोबारा वैसा ही दोहराया जा सके। 🌳🌞👀

घास पर पड़ी ओस की बूंदें, जैसे किसी कहानी की नन्ही चुप्पी हों। जब मैं झुक कर उन्हें देखता, तो अपना ही अक्स उनमें दिखाई देता। वो क्षण इतने शांत थे कि समय भी जैसे धीरे-धीरे चल रहा था। ⏳🍃💧

पास ही बहते पानी की आवाज, जैसे किसी पुराने गीत की धुन हो। दूर किसी गाय की घंटी की टुनक सुनाई देती थी, जो उस सन्नाटे में कविता जैसी लगती थी। ये सब मेरे मोबाइल में नहीं आ सकता, क्योंकि वहां सिर्फ दृश्य कैद होते हैं, अनुभव नहीं। 🐄🔔📷

वो हल्की ठंडी हवा, जो मेरी गर्दन से होकर गुजरती थी, उसने उस दिन कुछ कहानियाँ मेरे अंदर छोड़ दी थीं। मन में एक सुकून था, जैसे किसी ने बिना बोले मेरी थकान समझ ली हो। इन अनुभवों को मैं किसी से बांट तो सकता हूं, पर पूरा महसूस नहीं करवा सकता। 🍂🌀🧘

चाय की गर्म प्याली जब हाथ में आई, तो लगा जैसे वक्त खुद को थामे बैठा हो। उस एक सिप में पूरा पहाड़ उतर आया था। कोई बात नहीं की जा रही थी, लेकिन हर खामोशी में सौ बात छुपी थी। □☁🗻

इस सबके बावजूद, मैं चाहता हूं कि जो मैंने वहां जिया, वो कभी किसी और के मन में भी ऐसे ही बसे। शायद शब्द कम पड़ जाएं, तस्वीरें धुंधली हों, लेकिन यादें...वो हमेशा साफ रहेंगी। वो एक मुलाकात थी प्रकृति से, जो अब दिल में दर्ज है। ❤️📖🍁

(*Small Content Credit: Mr. Lalit Sharma*)

"फुर्सत, चाँदनी और टपरी वाली चाय☕✨ - मेरा सुकून भरा सफर"

जब कभी भी मुझे थोड़ी सी भी फुर्सत मिलती है, चाहे वो Weekend की हो या किसी छुट्टी की, मैं उसे Waste नहीं जाने देता। ऐसे ही किसी पल में, मैं तुरंत एक छोटा सा Vacation Plan बना लेता हूँ, बस 2-3 दिन का ही सही, लेकिन वो Moments मेरे लिए बहुत मायने रखते हैं। ज़िंदगी की दौड़-भाग में जब थकावट हावी होने लगती है, तो एक छोटा सा ट्रिप ही मुझे फिर से तरोताज़ा कर देता है।🌿

ऐसे Short Trips में सबसे ज्यादा जो चीज़ मुझे सुकून देती है, वो है ठंडी हवा में अकेले बैठना। एक पहाड़ी किनारे या किसी शांत सी जगह पर, जब आप खुद के साथ होते हो, तो बहुत कुछ साफ़-साफ़ दिखने लगता है। और हाँ, साथ में अगर टपरी वाली चाय मिल जाए☕ तो समझिए जैसे Mood में चार चाँद लग जाते हैं! उस मिट्टी की खुशबू, अदरक और इलायची की चाय और सामने फैली हुई वादियाँ...एक अलग ही जादू होता है उन लम्हों में।

चाँदनी रातों का भी अपना ही एक नशा है। मुझे अक्सर चाँद को घंटों निहारना अच्छा लगता है, खासकर तब, जब वो बादलों के बीच से झांकता है, छुपता है और फिर निकल आता है। वो छुपा-छुपी का खेल दिल को छू जाता है🌙। उस पल दिल में कुछ खास सा होता है, कुछ अनकही सी बातें जो सिर्फ दिल जानता है। कई कहानियाँ होती हैं, हर किसी की

अपनी, और मेरी भी। कभी वो चाँद किसी पुराने रिश्ते की याद दिलाता है, कभी किसी अधूरी ख्वाहिश की।

ऐसे पलों में आँखें नम हो जाना भी आम है। लबों पर नग़मे आ जाते हैं, जो दिल से निकलते हैं और फिर वहीं खो भी जाते हैं। कभी वो नग़मे पुराने गानों की शक्ल में होते हैं, तो कभी दिल की धड़कनों में गूंजते हैं। उस वक़्त न भूख लगती है, न प्यास महसूस होती है, न गर्मी सताती है न ठंड। बस एक शांति होती है, एक सुकून जो कहीं और नहीं मिलता🌌। मेरे लिए यही असली Vacation Vibes हैं। यही फुर्सत, यही सुकून, यही अकेलापन जिसमें मैं घंटों बैठा रह सकता हूँ, ये मेरा सबसे पसंदीदा शगल है। उन पलों में कहीं जाने की कोई जल्दी नहीं होती, लौट आने की कोई चिंता नहीं होती। जैसे वक्त थम जाता है और मैं उस ठहरी हुई फिज़ा का हिस्सा बन जाता हूँ।

मेरे ननिहाल मुबारिकपुर, हिमाचल प्रदेश से निकलकर जब मैं धीरे-धीरे पहाड़ों की वादियों में गाड़ी से या बस से चल पड़ता हूँ, तो हर मोड़ पर एक नया नज़ारा मिलता है। लगभग 30 की स्पीड से जब रास्ता धर्मशाला की तरफ बढ़ता है, तो लगता है जैसे हर पेड़, हर पहाड़, हर झरना कुछ कह रहा हो। और मैं बस उन कहानियों को सुनने के लिए चला जा रहा हूँ🏞️।

मेरी ज़िंदगी में सफर ही मेरा शौक है, मेरा सुकून है, और उस सफर में जो नग़मे होते हैं, वो मेरे दिल का संगीत बन जाते हैं। जब सब कुछ शांत होता है, तो उस मौन में भी एक आवाज़ होती है, दिल की। और मैं उसे

सुनता हूँ, महसूस करता हूँ, और उसमें खो जाता हूँ...क्योंकि यही है मेरा असली 'मैं', यही है मेरी असल खुशी...!✨

🏞️ "तुम सिर्फ पहाड़ नहीं...मेरी आत्मा की आवाज़ हो" 🗣️

मैं यूँ ही नहीं निकला था Delhi की उस भीड़ से, शोर से...कुछ था जो अंदर से खींच रहा था, एक Invisible डोर, एक पुकार, जो मैंने हफ्तों तक अनसुना किया...But not Today। आज दिल ने हार मान ली, और मैं निकल पड़ा, तुम्हारी ओर। 🌿

तुम सिर्फ पहाड़ नहीं हो...You are a place where my Soul Breathes Again। सड़क की शुरुआत से ही, ऐसा लगा जैसे तुम मुझसे बातें करने लगे हो, हर मोड़ पर, हर झुकती पगडंडी पर तुम्हारी साँसें चलती महसूस होती हैं। ठंडी, धीमी, मगर बहुत गहरी...तुम वही तो हो ना...जिसने सालों पहले मेरी खामोशी सुनी थी?

जब Delhi की आवाज़ें मेरी पहचान निगल रही थीं, जब लोग समझने की बजाय सवाल करने लगे थे, तब भी दिल के किसी कोने से सिर्फ एक ही आवाज़ आती थी, "चल, वापस चल...वहीं जहां Silence भी संगीत बन जाता है..." 🎶। और अब जब मैं तुम्हारे पास हूँ, हर बादल मुझे अपनी बाहों में समेट रहा है...तुम्हारे ये रास्ते जैसे मुझे पहचानते हैं, जैसे तुम मेरे दर्द, मेरी थकान, मेरी खोई हुई मुस्कान को जानते हो। 🕊️

तुम्हारी हर चोटी, एक Ancient Whisper की तरह लगती है। तुम्हारे जंगलों में जो Rustling है, तुम्हारे झरनों में जो Flow है, वो कहता है, "Real Luxury is not in Gold, Cars or Gadgets...It's in being Truly Unapologetically Free।" 🍃✨

तुम्हारे साथ बिताई हर शाम, एक Deep Meditation जैसी होती है। आज की ये गुलाबी शाम, ऐसी लगती है जैसे कोई पुराना गीत फिर से बज उठा हो...तुम्हारी हवाएँ मुझे वो दोस्त लगती हैं, जो बिना कुछ कहे, सबसे ज़्यादा समझते हैं 🤍। मैं चलता जा रहा हूँ, कभी चढ़ाई, कभी उतराई, कभी थक कर रुक जाता हूँ, तो तुम बिना बोले मुझे देखते हो...और उस नज़र में शब्दों से ज़्यादा प्रेम होता है। ⛰️💫

शहर में कईयों रातें बिताई हैं, पर तुम्हारे बीच गुज़ारी एक रात उनसे कहीं बेहतर होती है। एक ऐसा आसमान जो सितारों से भरा है, एक ठंडी हवा जिसमें रहस्य है, और कहीं दूर जंगल से आती कोई आवाज़, जैसे ब्रह्मांड खुद मेरे कान में कोई राज़ बता रहा हो 🌌🧘। सुबह की पहली किरण जब तुम्हारे चेहरे पर पड़ी, तो मैं रुक गया...तुम कोई "सौंदर्य" नहीं हो, तुम पवित्र हो। And I'm lucky...So lucky, कि मुझे तुम्हें फिर से देखने का मौका मिला। 🌞

तुम्हारे पत्थरों के बीच बैठकर मैंने अपने अंदर की आवाज़ फिर से सुनी है। जहाँ दुनिया ने मुझे "ठीक हो जाना चाहिए" कहा, तुमने कहा**,** "तू जैसा है, वैसा ही रह...यही ठीक है।" तुम मेरे Therapist नहीं...तुम मेरी आत्मा का आईना हो। 💛

काश...हर भटका हुआ इंसान एक बार तुम्हारे पास आ सके। क्योंकि तुम हर किसी को अपनाते हो, बिना शर्त, बिना सवाल। तुम्हारे पास Judgment नहीं है...बस Acceptance है 🤗। तुम्हारे करीब आते ही मेरे कंधों से Emotional Baggage उतरने लगता है, Self Doubt, Expectations, डर...सब पीछे छूट जाता है, और मैं हल्का हो जाता हूँ। 🎒💨

लोग कहते हैं, "पहाड़ बुलाते हैं"। पर सच कहूँ...तुम बुलाते नहीं, तुम पुकारते हो। पुकारते हो उन लोगों को जो खो गए हैं शोर में, और अब वापस खुद तक लौटना चाहते हैं। You are not a Tourist Spot... You are a Soulful Destination। 🌲⛰️

तुम्हारी वादियों में चलना, जैसे किसी पुराने गीत की धुन पर चलना हो, जहाँ हर मोड़ कोई भूली हुई याद लौटा लाता है, और हर हवा एक नया सवाल पूछती है 🏞️🍃। यहाँ Silence सिर्फ चुप्पी नहीं, एक संवाद है...और तुम्हारी ऊँचाइयाँ किसी ऊँचे दर्शन-सा लगती हैं। तुम हर बार मुझे सिखाते हो, कि सच्ची शांति पाने के लिए बाहर नहीं, भीतर जाना पड़ता है 🧘✨।

तुम्हारे हर मौसम में एक नई सीख है, ☔ बरसात में "बह जाना", ❄️ सर्दियों में "रुक जाना", ☀️ गर्मियों में "खुल जाना"। तुम Teacher भी हो... और Temple भी 🙏📖। और हर बार जब मैं Delhi लौटता हूँ, तुम्हें एक बार पलटकर ज़रूर देखता हूँ...शायद तुम्हारी आँखें भी थोड़ा

भर आती हैं, या शायद...मेरी। तुम्हारा प्यार मुझे कभी बाँधता नहीं, पर छोड़ता भी नहीं। 💞

जब वापस Delhi जाता हूँ, तो कुछ Stories, कुछ Smiles, थोड़ा सुकून और बहुत सारा Silence लेकर लौटता हूँ I And I always come back Lighter...But Fuller 🌄🧳 I क्योंकि तुमने मुझे फिर से मुझसे मिलाया है I और मैं वादा करता हूँ, I will Return, as Always...Every time life gets too Loud I

क्योंकि मुझे एक डोर...हमेशा तुम्हारी ओर खींचती है। 🧭💚

बारिश में पहाड़ी सड़कों का सफर! ☔🚗🌿 🌧️

13 June 2025 की सुबह वंदेभारत से अपने ननिहाल मुबारिकपुर, हिमाचल प्रदेश पहुंचा।

🌞 गर्मी इतनी कि जैसे दिल्ली और यहां में कोई फर्क ही न हो! 🥵 मम्मी से मिलने की खुशी के बावजूद मन थोड़ा मायूस था गर्मी की वजह से। शायद मेरी मायूसी का एहसास महादेव जी को हो गया और उन्होंने इंद्रदेव से सैटिंग करके भरपूर वर्षा करवा दी। 🌧️⚡

और, फिर हम तो हम हैं, घुम्मकड़, बस मौका चाहिए ऐसे मौसम में नजारों का आनंद लेने का। निकल दिए सदाशिव मंदिर, महादेव जी का धन्यवाद करने के लिए मौसम को परिवर्तित करने के लिए। 🌺🙏 रिमझिम Romantic बारिश के मौसम में पहाड़ों की सैर करने में जो 35 साल से हो रहा है, वही खूबसूरत अनुभव हुआ, Pure Bliss। 🌧💚

और, फिर हम ठहरे एक पल में जिंदगी जीने वाले, यहां तो कईयों पल दे दिए थे आज महादेव जी ने। 🕉🙏 चारों तरफ हरियाली छाई हुई थी 🌿, पेड़-पौधे ऐसे जैसे अपनी जवानी के चरम पर। बादलों से ढके आसमान ☁ और टपकती हुई बूँदों 💧 ने दिल को वही हर बार मिलने वाला सुकून दिया 💫।

जब गाड़ी पहाड़ी मोड़ों पर धीरे-धीरे चल रही थी, तो लगा जैसे मैं किसी फिल्म का सीन 🎬 देख रहा हूँ। रुक-रुक कर गिरती बारिश एक अलग ही दुनिया बना रही थी। 🎶

एक टपरी वाली चाय ☕ की दुकान दिखी और मुझे तो जैसे स्वर्ग मिल गया। कुटे अदरक और इलाईची के साथ कढ़ कढ़ कर बनी महकदार कड़क चाय पीकर और पकौड़े खाकर 🍵🥔, जैसे जिंदगी के अनेकों कहानियों में एक और कहानी जुड़ गई उस दिन, बारिश की ठंडी हवा में। 😋🍃

उस दिन की पहाड़ों की ये ड्राइव सिर्फ एक यात्रा नहीं थी, ये दिल को एक अगल ही शांति देने वाला अनुभव था, जिसमें महादेव जी की कृपा साथ मिली हुई थी। 💙✨

बॉय गॉड की कसम ये 13 June 2025 की सैर सदा के लिए यादों में बस गई और एक दिलखुश मुस्कान दे गई। 😊🙏

"चाय, बिस्कुट और पहाड़ों वाला रोमांस - देसी स्टाइल में!"

हिमाचल में, चाहे अपने गांव की मिट्टी की खुशबू हो या किसी ठंडे-ठंडे हिल स्टेशन की हवा...सुबह की शुरुआत सिर्फ और सिर्फ एक कप कड़क चाय से ही होती है ☕। वो भी कोई मामूली चाय नहीं, बल्कि अदरक-इलायची वाली ऐसी तीखी कड़क चाय जैसी ट्रक ड्राइवर पीते हैं, जो एक सिप में दिमाग के सारे Network Connection Restart कर दे😵💫😂।

अब कई लोग पूछते हैं, "भई, इतना Drama चाय के लिए?!" तो मैं कहता हूं, Drama तो वो है जो बिना चाय के ज़िंदगी में हो जाता है। बिना चाय के तो मूड वैसा हो जाता है जैसे फोन 1% Battery पर हो, और Charger कहीं नहीं मिल रहा🤯।

चाय ही है जो पहाड़ी मौसम में हाथ सेकने का बहाना देती है, बातों को लंबा खींचने का लाइसेंस देती है, और सबसे ज़रूरी, पुराने किस्से, Gossip, रिश्तों और दोस्ती को एक प्याले में फिर से गर्म कर देती है🔥❤️।

और चाय के साथ अगर बारिश की बूंदें टीन या स्लेट की छत पर टपक रही हों, ठंड हो और बाहर कोहरा छाया हो, तो समझो आप किसी देसी स्वर्ग के Five Star सीन में हैं🌧️□😌।

अब बात हो रही है चाय की तो बिस्कुट भी चाहिए, पर वो भी बिना किसी नाटक के😎। ये चॉकलेटी, जैमी, क्रीमी या क्रीम के ऊपर Drizzle वाले ड्रामेबाज़ बिस्किट हमें नहीं सुहाते😤। हम तो हैं अंग्रेजों के जमाने के बचे हुए देसी Tea Lovers, जिन्हें चाय के साथ पारले G या NICE बिस्कुट चाहिए😋। वही पुराने ज़माने के, जो चाय में डुबोते ही आत्मा को सुकून दे दें और टूटे नहीं😌।

अब ऐसा नहीं कि हम हमेशा ही टपरी Type के रहे...समय के साथ थोड़ी औक़ात भी बढ़ी😎। 1993 में जब 6th Time धर्मशाला के मैक्लोडगंज गए, तो ₹100-₹150 वाली होटल में भी Stay कर लिया। वो अलग बात है कि आज भी ये रेट सुनकर होटल वाले हमारी शक्ल देखकर हँसते हैं🤭। HRTC की सस्ती Local वाली बस से सुबह 5 बजे पहुंचे थे, और पहुंचकर ऐसा लगा जैसे हम नहीं, हमारी आत्मा ही लौट आई हो अपने घर...लगता है किसी पिछले जन्म में यहीं दूध-चाय बेची थी☕😂।

अब मेरा एक सपना था, वो वाला Fancy, जैसे फिल्मों में दिखाते हैं...हल्की धूप में किसी गार्डन में बैठे हों, वेटर सफेद कप-प्लेट और चाय की केतली लेकर आए...दूध, चीनी सब कुछ अलग से...सामने कुकीज हों और मैं एकदम नवाब टाइप सीन में चाय की चुस्कियां लूं। पर हकीकत

में होटल का गार्डन तो दूर, कमरा ही गार्डन के बगल वाले ड्रेनेज की तरफ खुल रहा था🤣। So, मजबूरी में चाय रूम में ही मंगाई।

चाय आई...वेटर भाई भी कुछ ज़्यादा ही अंग्रेजियत में खोया हुआ था, बोला, “सर, Sugar के कितने Cubes लेंगे?” अबे! ये “Cube” कौन सी नई बिमारी है भाई🤨? हमारे लिए तो चीनी की मात्राएं होती हैं, चम्मचों में! मैंने सीधा कहा, “भाई, 2-3 चमच डाल दो, क्यूब-व्यूब फिल्मी चीजें हैं, Real Life में पेट मीठा चाहिए।”

अब बात निकली है तो बता दूं, हम ठहरे खालिस देसी, और हमारी चाय भी वैसी ही होनी चाहिए। गैस पर पकाई हुई, दूध ज़्यादा, पानी कम, पत्ती और चीनी ठोक के डाली हो😤। और वो भी स्टील के भगौने में...जहाँ चाय उबाल के बाहर न छलके तो लगे ही नहीं कि सच्ची वाली चाय बनी है। ये “Tea Set” वाले लोग जो चार बूंद दूध डालते हैं और उसे “व्हाइटनर” बोलते हैं, वो तो हमें किसी एलियन कांड से कम नहीं लगता। अबे दूध है तो बोलो, क्या व्हाइटनर व्हाइटनर लगा रखा है😑।

असल में ये Tea Set वाली अंग्रेज़ी चाय एकदम महंगी और दिखावटी होती है, जैसे कोई महंगी शराब, जिसमें स्वाद से ज़्यादा बात “अरोमा”, “फिनिश”, “टंच” जैसी फालतू बातों की होती है😅। वैसे ही इनकी चाय में भी अरोमा-वरोमा चलता है...हम तो भाई रेड लेबल या ताजा लेकर खुश हैं। ब्रुक बॉन्ड रेड लेबल, ये हमारे जीवन की सबसे वफादार चाय है...न ब्रेकअप हुआ, न ही बदला कभी ब्रैंड❤️😂। कांच के गिलास में पीने का मजा ही कुछ और है, वो भी ढाबे या टपरी की बेंच पर बैठ के,

जहां सामने पहाड़ हों, और साथ में पारले G हो...नजारों का पूरा पैकेज😌👌। ये रेड लेबल पीछा नहीं छोड़ता🤣...कांच का गिलास भी...सुबह हो या शाम हो...महंगी चीजों में सबसे सस्ती चीजें शायद रेड लेबल के नाम से जानी जाती हैं, चाय हो या............😆। वैसे तो अब हम सोबर हैं काफी समय से, वो अंग्रेजी में कहते हैं न 'टी टोटलर', वही हैं हम आजकल😊।

हमने कभी "वाह ताज" नहीं कहा, हम हमेशा "वाह क्या नज़ारा है!" ही कहते हैं। क्योंकि हमारे लिए चाय एक 'ब्रांड' नहीं, बल्कि एक 'भावना' है😍। अब आप सोचेंगे कि जब होटल में केतली वाली चाय मिलती है तो उसी से क्यों नहीं चाय बनाते? तो भाई, उस प्लास्टिक सी महक वाली केतली से निकली पानी जैसी चाय हमारे आत्मा पर अत्याचार है🤪। चाय हो तो टपरी वाली हो, जिसमें दूध की परत ऊपर जमी हो, और बिस्कुट ऐसे हों कि चाय में डुबोते ही आधा बिस्कुट गल जाए, लेकिन फिर भी खाया जाए😋।

और हाँ, चावल आज भी हाथ से ही खाते हैं, चम्मच का नखरा नहीं आता। पांच तत्वों का Intake जो जाता है पेट में खने के साथ साथ😄।

वैसे भी, जो लोग कहते हैं "हम Coffee Person हैं", उनसे हमारा बस एक ही सवाल होता है, "भई, तुमने कभी खाली पेट टपरी या ढाबा Type चाय नहीं पी क्या?" क्योंकि जिसने वो पी ली, उसका दिल भी बड़ा होता है, और पेट भी संतुष्ट😂👏।

तो कुल मिलाकर, हम आजकल 'टी टोटलर' टाइप लोग हैं, चाय से रिश्ता टूटता ही नहीं☕❤️। चाय हमारे लिए सिर्फ एक पेय नहीं, बल्कि एक Emotion है, एक आदत है, और कभी-कभी तो एक रिलेशनशिप स्टेटस भी होता है, "Committed to चाय"□।

चाय पीना हमारे लिए नित्यकर्म है, और जब वो कड़क हो, तो समझो दिन बन गया। पहाड़ हों, प्याली हो, पारले G या NICE हों और साथ में सुबह की ठंडी हवा...बस ज़िंदगी में और क्या चाहिए😇?

जय चाय, जय पारले G, जय NICE!

(*Content Credit: Mr. Lalit Sharma*)

चाय, पालमपुर स्टेशन, पहाड़ और शाम! 🍵🚉🌄

पहाड़ों के बीच, जैसे किसी पुराने सुर में बसा हो एक छोटा-सा Station, जिसे ज़िंदगी ने कभी जल्दी में नहीं जिया, बल्कि हर पल को ठहर कर महसूस किया हो। सड़कें कहीं दूर हैं, भीड़-भाड़ का कोई नामोनिशान नहीं, बस कुछ घने पेड़ों की छांव है, और उनके साये में सुस्ताता समय। यहाँ टीन की छत पर बरसात की पुरानी बूंदों की खुशबू अब भी सांस लेती है, शाम जैसे किसी पुराने Postcard से निकलकर धीरे-धीरे इस स्टेशन पर उतरती है, हल्की सी ठंडक लिए, अपने साथ एक नमी, एक Nostalgia लेकर। एक बेंच है वहां, जैसे वक़्त का कोई पुराने जमाने का

मेहमान, जहां कुछ चेहरे बैठे हैं...कुछ बोले गए, कुछ अनकहे अफ़साने लिए हुए।

पास ही चाय की छोटी-सी दुकान से उठती है भाप, जो जैसे हर साँस के साथ कुछ सुकून ले आती है। चाय का कप हाथ में थामते ही लगता है, कि यह कोई आम चाय नहीं, यह किसी पुराने खत की तरह है, जिसमें बचपन, बारिश, बिछड़न और बंद दराजों की कहानियाँ सिमटी हैं☁️🍵।

ट्रेन🚆 अभी तक आई नहीं, और शायद देर से ही आएगी, पर Platform पर उम्मीदें पहले से खड़ी हैं, पटरियाँ चुप हैं, पर हर पटरी में कोई धुन छिपी है, जैसे कोई अधूरा गीत, जो हर आने-जाने वाले की कहानी जानता हो। लोग आते हैं यहाँ, कुछ जल्दी में, कुछ बस यूँ ही, पर कोई ज़्यादा देर रुकता नहीं, फिर भी, उस बेंच पर समय ठहरा हुआ लगता है। चाय☕ के हर घूंट में कोई पुराना किस्सा है, शब्दों से नहीं, महसूस करने से सुनाई देता है।

एक घूंट में कॉलेज के दिनों की हँसी, दूसरे में किसी अधूरी मोहब्बत की याद, तीसरे में घर की बालकनी से दिखती दूर की धुंधली पहाड़ियाँ, और आख़िरी घूंट...जैसे किसी पुरानी डायरी का आखिरी पन्ना। यह पहाड़ी⛰️ शाम बड़ी खामोश सी है, पर उसकी खामोशी में भी हज़ार आवाज़ें हैं। पंछियों की, पत्तों की🌿, चाय की भाप में घुली बातों की। यहाँ सब धीमा चलता है, वक़्त भी, धड़कनें भी, उम्मीदें भी।

शांति जैसे खुद चलकर आई हो और इस स्टेशन की मिट्टी में घुल गई हो, हर चीज़ सजीव लगती है, बेंच, पटरियाँ, पेड़🌲, बादल☁...और आप खुद को अकेला नहीं, बल्कि बहुत पूरा महसूस करते हैं। हर चाय☕ का कप बस चाय नहीं होता, वो उस वक़्त का हिस्सा होता है जब आप किसी के साथ होते हुए भी अकेले होते हैं, या अकेले होते हुए भी किसी के बहुत पास। चाय के घूंट में बीते हुए कल की मिठास है, और आज की नमी में कल का ठहराव।

यही तो है इस पहाड़ी शाम का जादू...जहाँ ख्वाब हवा में तैरते हैं, यादें पेड़ों🌲 से लटकती हैं, और हर चाय का कप एक नई कविता जैसा लगता है। शांति, ख़्वाब और यादें, तीनों की तिकड़ी एक साथ चलती है, और आप उस बेंच पर बैठकर सोचते हैं...क्या ट्रेन सच में कभी आएगी भी? या शायद यही ठहराव ही तो असली मंज़िल है। जहाँ हर घूंट में गुज़रा वक़्त मुस्कुराए, जहाँ हर साँस में पहाड़ों⛰ की ठंडक समाई हो, जहाँ चाय सिर्फ पेय नहीं, एक एहसास हो...वही तो है...चाय, पालमपुर स्टेशन, पहाड़ और शाम। 🍂☁🍵🚉⛰

"पहाड़ों से प्रेम: जहाँ आत्मा साँस लेती है, और दिल धड़कता है वादियों की लय में...!" ⛰💚🏞🧘

पहाड़ मेरे दिल में एक गहरा स्थान रखते हैं, मुझे चुंबक की तरह अपनी ओर खींचते हैं, खासकर धौलाधार और पीर पंजाल के पहाड़, भावनाओं

को उत्तेजित करते हैं, जिन्हें केवल शब्दों से ही व्यक्त नहीं किया जा सकता।

मैं पहाड़ों को उनके विशाल होने के लिए पसंद करता हूं, जिस तरह से वे Rise होते हैं, अडिग और मजबूत, एक शांत शक्ति के साथ आकाश को छूते हैं। वे मुझे Flexibility, तूफानों के बावजूद डटकर खड़े रहने, युगों-युगों तक शालीनता के साथ टिके रहने के लिए प्रेरित करते हैं।

पहाड़ों के अपनेपन में मुझे एक गहरी शांति मिलती है, एक ऐसा Silence जो शब्दों से भी ज़्यादा गूंजती है मेरे अंदर। ताज़ा हवा मेरे शरीर के रोएं रोएं में भर जाती है, और ऐसा महसूस होता है मानो मैं जीवन में ही साँस ले रहा हूँ। उन वादियों की शांति मेरे मन को साफ़ कर देती है, और पहाड़ों की विशालता मेरी आत्मा को नम्र कर देती है।

पहाड़ मुझे चुनौती देते हैं, मुझे मेरी सीमा तक धकेलते हैं और ऐसा करते हुए मुझे सिखाते हैं कि मैं वास्तव में कौन हूं। पहाड़ों पर चढ़ना, ट्रैकिंग करना आत्मविश्वास बढ़ाने की यात्रा है, प्रत्येक मंजिल याद दिलाती है कि मेरा लक्ष्य क्या है और जब मैं मजबूत रहता हूं, तो हर लक्ष्य मेरी पहुंच में होता है।

जब सूरज की पहली किरणें बर्फ से ढके पहाड़ों पर गिरती हैं, तो लगता है मानो कोई स्वर्गीय स्पर्श धरती पर उतर आया हो। सुबह की उस ठंडी हवा में एक नई शुरुआत की खुशबू होती है, जैसे हर दिन तुम्हें दोबारा जीने का मौका दे रहा हो। पहाड़ों की शांति में जो शोर छिपा है, वो अंदर

के तूफानों को भी धीरे-धीरे शांत कर देता है, बिना कुछ कहे, बहुत कुछ समझा देता है।

पहाड़ों की वादियां कितने ही रहस्यों को अपने अंदर समेटे हुए हैं, उन वादियों में यही सोचता हूँ, छिपी हुई पगडंडियाँ, झिलमिलाती धाराएँ, और उनकी छाया में पनपने वाला जंगल का जीवन। ये सब प्रकृति की सबसे बेहतर कृतियां हैं, जो बर्फ, चट्टान, जंगल और हर ऋतु में अलग अलग रंगों से रंगी हुई होती हैं।

सबसे बढ़कर, घूमने जाने के लिए मुझे सिर्फ पहाड़ पसंद हैं क्योंकि वे एक ऐसी जगह हैं जहां मैं खुद के साथ रह सकता हूँ, घंटों उन वादियों से बातें कर सकता हूँ, नजारों के मजे ले सकता हूँ, वहां बस सकता हूं। पहाड़ों के साथ में, मैं कुछ महान, कुछ शाश्वत से जुड़ा हुआ महसूस करता हूं, जैसे कि मेरा दिल उन वादियों के साथ ही लय में धड़कता है। पहाड़ों पे दो किस्म के लोग जाते हैं, "एक जो खुद की तलाश में हैं और दूसरे जिन्हें ईश्वर की तलाश है"। पहाड़ों की ऊँचाईयों में कुछ तो है, जो मुझे भीतर झाँकने पर मजबूर कर देता है। कुछ लोग यहाँ खुद को ढूँढने आते हैं, अपनी टूटी हुई पहचान, उलझे हुए विचार और अधूरे सपनों को सुलझाने। तो कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें हर पेड़, हर बादल, हर शांत हवा में ईश्वर की झलक मिलती है, एक ऐसी शक्ति की तलाश, जो उन्हें जीवन के पार ले जाए। और मैं? मैं हर बार इन पहाड़ों में दोनों को खोजने जाता हूं, खुद को और ईश्वर को भी, जिसने मुझे बनाया है। क्योंकि कहीं न कहीं मुझे लगता है कि जब मैं खुद को पाऊंगा, उसी पल ईश्वर भी मिल जाएगा...या शायद ईश्वर की तलाश ही खुद को पाना है।

पहाड़ मेरे लिए Landscapes से कहीं अधिक हैं, वे एक साथी, शिक्षक और Sanctuaries हैं, प्रेरणा और Solice का स्रोत हैं जिन्हें मैं अपने साथ रखता हूँ, चाहे मैं कहीं भी रहूँ।

धार्मशाला की बारिश में मेरा पहाड़ों से प्यार! ❤️🌧️

जब भी बारिश की हल्की-हल्की बूंदें गिरती हैं न, मुझे सबसे पहले Dharamshala की याद आती है। वो Mist में छुपे हुए पहाड़, और वो ठंडी हवा जो कान में धीरे से कहती है, "Come to Dharamshala, Mountain Lover!" 🏔️💨

पता नहीं क्यों, मुझे लगता है Dharamshala के पहाड़ भी Romantic हैं। कभी शर्माकर बादलों में छुप जाते हैं, तो कभी इतने ज़्यादा Close आ जाते हैं कि लगता है बस...उन्हें बाहों में समा लूं! 😍☁️🤗

बारिश में उन घुमावदार सड़कों पर चलना, और हर मोड़ पर एक नया View मिलना, जैसे Nature की खुद की बनाई Reel, जो कभी खत्म ही नहीं होती! 📸🌄
और, टपरी चाय की दुकान पर चाय की चुस्की लेते हुए वहां बैठना...ऊपर से गरमा गरम पकोड़े! भाईसाहब, उस टाइम मेरी आत्मा Literally कहती है, "Yeh Hai Asli Zindagi!" ☕😌

मुझे लोग कहते हैं कि "तू पहाड़ों से इतना प्यार क्यों करता है, खासकर धर्मशाला या पालमपुर के?" मैं क्या बताऊँ...पहाड़ वो सच्चा प्यार हैं जो Height में तो ऊँचे हैं, पर Ego में Zero! और बारिश में तो वो और भी ज्यादा Dreamy लगते हैं, थोड़े Cool, थोड़े Unpredictable और बहुत ही Hug Worthy! 😅❤️⛰️

Dharamshala की वादियाँ, बारिश की महक, और वो हरियाली...मुझे हर बार फिर से अपने प्यार में डाल देती हैं। और जब-जब मैं उदास होता हूँ, पहाड़ चुपचाप बोलते हैं, "Tension Not Bro, Chill, Come to Dharamshala!" 😂🌧️🧘

पहाड़ों पर टपरी वाली चाय पार्टी!!! ⛰️🍵⛰️

भारत के पहाड़ी गांवों के मध्य में एक कप टपरी चाय का आनंद लेने में कुछ खास बात है...एक सरल लेकिन Soul Igniting अनुभव, जो शहर की Chayos और इन जैसी Luxury चायशालाओं से कहीं उपर और परे है।

मुझे टपरी चाय बहुत पसंद है...खुद जो टपोरी ठहरे 🤣। सड़क के किनारे टीन-टप्पर या स्लेट से ढकी हुई छोटी छोटी दुकानों में ऊबाल ऊबाल कर तैयार की गई चाय, यह उस जगह का सार ही है, Unfiltered और असली चाय। ताज़ी कुचली हुई अदरक और इलायची की सुगंध कुरकुरी पहाड़ी हवा के साथ मिल जाती है, जिससे एक ऐसा

आनंद पैदा होता है, जो न केवल शरीर बल्कि आत्मा को भी तृप्त और जागृत कर देता है।

किसी पुरानी बेंच या चट्टान पर बैठकर, पहाड़ियों पर धुंध को छाते हुए देखकर, हर घूंट एक गर्म अहसास जैसा लगता है। चाय कभी भी सिर्फ एक पेय नहीं है, यह एक जुड़ाव है, उन लोगों से जो इसे प्यार से तैयार करते हैं, उन पहाड़ों से जो मुझे हमेशा घेरे रहते हैं, और, जीवन की सादगी से, जो शहरों की भीड़ में एकदम खो गई है।

पहाड़ों पर हर क्षण का एक लय है...उबलती चाय की खुशबू, अपने साधारण पहाड़ी भाईयों की बातचीत, पक्षियों की दूर से आने वाली आवाज़, कोई जल्दबाजी नहीं, अत्यधिक शांतिपूर्ण। उन क्षणों में, दुनिया धीमी हो जाती है, और जीवन सुंदर रूप से सरल लगता है।

कांच के गिलास में परोसी टपरी चाय, पहाड़ों की भावना की तरह, मजबूत और स्वादिष्ट होती है। इसके हर घूंट में एक कहानी है, लचीलेपन की, परंपरा की, प्रकृति और मानवता के बीच गहरे बंधन की कहानी।

मुझे टपरी चाय बहुत पसंद है क्योंकि यह एक पेय पदार्थ से कहीं अधिक है, यह एक अनुष्ठान है, समय में एक ठहराव है, जो मुझे जीवन के सरल सुखों की याद दिलाता है। यह मेरे दिल और पहाड़ों के बीच एक पुल है, अपनेपन का स्वाद, जो आखिरी घूंट के बाद भी लंबे समय तक बना रहता है।

पहाडों की Beauty की परिभाषा मेरे नज़रिये से! ⛰️🌲😊

कभी-कभी सुबह की पहली किरण पहाड़ों पर नहीं⛰️, दिल पर पड़ती है❤️, जब मैं पहाड़ों की उस वक्त की Beauty का आनंद ले रहा होता हूँ। जब पहाड़ों की मुस्कान इतनी प्यारी लगे कि सूरज भी कुछ देर छिपा रहना चाहे, तब समझो कि Soul Soothing खूबसूरती ने नया जन्म लिया है। वो क्षण, जब एक चेहरा मेरी सोच से बाहर नहीं आता, वो केवल मोह नहीं होता, वो Poetry in Motion होता है।

पहाड़ों पर दिख रहे उस चेहरे पर आज कुछ अलग था। जैसे प्रकृति ने खुद अपने खजाने से हर रंग को एक नए ढंग से बुन दिया हो। चेहरा वही था, पर उसमें कोई नया Spark था। मानो समय थम गया हो, या फिर वक़्त ने खुद को उसी पल के लिए रचा हो🌸।

उस दिन नज़रों ने जो देखा, वो दिल ने महसूस किया, और दिल ने जो महसूस किया, वो शब्दों में नहीं उतर सका उस वक्त। जैसे कोई पुराना ख्वाब हो जो अचानक पूरी तरह जिंदा हो गया हो। पहाड़ों की हर लकीर, हर मुस्कान, हर झलक, जैसे किसी अदृश्य सुर में बँधी हो, Silent Symphony को बस महसूस करने के लिए।

पहाड़ों के कुछ चेहरे किताबों की तरह होते हैं, हर बार देखने पर एक नया पन्ना खुलता है, और आज वो चेहरा एक नई कहानी बन गया। ऐसी कहानी जिसे पढ़ने के लिए किसी Language की ज़रूरत नहीं होती, बस पहाड़ों की सुंदरता का एहसास करने के लिए एक अदद दिल होना चाहिए💫।

पहाड़ों की वो आंखें...कुछ कहती नहीं थी, पर सब कुछ सुना देती थीं, जैसे किसी बहुत पुराने साज को छू लिया गया हो और वो खुद-ब-खुद बज उठे। पहाड़ों की उन आखों में आज एक ऐसी Depth थी जो हर सवाल का जवाब थी और हर जवाब में एक और सवाल छुपा था। Layers Within Layers, Just Like The Ocean।

पहाड़ों की Beauty कुछ कहती नहीं है...पर उसकी खामोशी भी शोर कर रही होती है । वो आवाज़ नहीं होती, एहसास होता है। ऐसा एहसास जो किसी और का नहीं, सिर्फ मैनें हमेशा Feel किया है, Personal, Intimate, जादुई✨।
कभी-कभी इंसान किसी और को देखकर खुद को और बेहतर समझने लगता है। और जब जब मैं पहाड़ों की शरण में होता हूँ, वैसा ही Feel करता हूँ, मानो पहाड़ों की खूबसूरती ने मेरे अंदर की सुंदरता को जगा दिया हो। मैं खुद से Deeply जुड़ जाता हूँ, एक नये रूप में।

पहाड़ों में मेरी वो कोई साधारण सुबह नहीं होती, वो एक एहसास की शुरुआत होती है। ऐसी सुबह शायद हर बार एक और नई और Unforgettable सुबह होती है, क्योंकि वो कोई सुबह नहीं होती, वो एक Emotion होता है, वो एहसास जिसमें सब कुछ नया होता है, नज़रिया, सोच, दृष्टि और शायद...उम्मीद।

अक्सर हम सुंदरता को केवल बाहरी रूप में तलाशते हैं, लेकिन कभी-कभी, पहाडों का ऐसा चेहरा हमारे अंदर की रोशनी को जगा देता है, अगर हम पहाड़ों को उस Beauty के नज़रिये से देखें तो। क्योंकि मैं

पहाड़ों को उस Beaity के नज़रिये से देखता हूँ, तो अक्सर मेरे साथ कुछ Unbelievable होता है। Transformation Doesn't Always Need Time, कभी-कभी एक नज़र ही काफी होती है🌅।

पहाड़ों पर Total Time के बिताए कुछ Speacial लम्हें सिर्फ लम्हे नहीं होते, वो ज़िंदगी की नई शुरुआत होते हैं। कभी पहाड़ों के पीछे से Rise होता कोई चेहरा हमें रोक देता है, थाम लेता है, और एक नई कहानी का पहला पन्ना बन जाता है। पहाडों पर जब जाओ, ऐसी सुबह, ऐसे दिन, ऐसे एहसास को जन्म दो, अपने दिल में ऐसा पन्ना लिखो हर बार, बार बार❤️।

वो जो सागर में मोती तलाशते हैं, और मैं जो पहाड़ों में कण कण ढूंढता हूँ, हम अपनी अपनी Positive Thoughts Process में एक जैसे है, उनके लिए मोती अमूल्य हैं❤️, मेरे लिए पहाडों का हर एक कण❤️।

हिमाचल & Food

हिमाचली धाम - वो स्वाद, जो सिर्फ ज़ुबान नहीं, आत्मा में उतरता है! 🍛🌿😋❤️

क्या आप जानते हैं कि हिमाचली धाम कोई Meal नहीं है, ये एक Reel है, जो हर हिमाचली के दिल में फिल्म की तरह चलती रहती है? ये खाने की थाली नहीं, बल्कि हिमाचली Culture का Full-on Cinematic Universe है! और इसके तीन सबसे प्रसिद्ध ब्लॉकबस्टर हैं, कांगड़ी धाम, मंडियाली धाम, और चंबियाली धाम। 😋

जब दुल्हन पहली बार ससुराल आती है, तो उसकी अगवानी की खुशी का इज़हार सिर्फ ढोल-नगाड़ों से नहीं होता, बल्कि एक राजा-महाराजा जैसी Royal Thali यानी धाम से होता है, जिसके लिए न्यौता दिया जाता है अपने रिश्तेदारों को, खास जानकारों को और अपने गाँव वासियों को। कोई धार्मिक समारोह हो, चौबर्सी का भावुक मौका हो या फिर बर्थडे पार्टी में थोड़ा लोकल हिमाचली Touch देना हो, हिमाचली धाम is the Ultimate Showstopper!

अब बात करते हैं इसकी Star-Cast की...🎬👇

🍚 **1. चावल** - हिमाचली धाम में चावल सिर्फ चावल नहीं होता। ये वो कंधा है जिस पर हिमाचली धाम की हर Dish सर रख के आराम करती

है। बिना चावल के धाम वैसी ही अधूरी है जैसे जैसे Priety Zinta के गाल बिना Dimple के।

□ 2. **तेलिये मांह** - कच्चा सरसों का तेल डालकर एक से डेढ़ घंटे पके ये तेलिये मांह उतने ही Intense होते हैं जितना किसी Himachali Grandma का सर्दियों में स्वेटर ना पहनने पर गुस्सा। Handmade कूटे या पिसे मसालों के साथ-साथ इसका Secret Ingredient है, कुटी काली इलायची और साबुत मग्घ, जो इसे Aroma का Avengers बना देता है। कोई तड़का नहीं, तड़का सिर्फ़ Emotions का। 🧡

🧡 3. **छोलों की दाल** - कच्चे सरसों के तेल के साथ-साथ Desi Ghee और Handmade मसाले के साथ बनी ये दाल नहीं, Culinary Poetry है! इसे चखते ही लगता है जैसे मसाले आपको Whisper करके कह रहे हों, "Welcome to Himachal, Ladies & Gentlemen! इसका Hero है, कूट के पीसी हुई जावित्री, जो हर Bite में एक शाही ठाठ भर देती है।

🤎 4. **खट्टा (माहणी)** - अब ये वो ज़्यादा खट्टी और खट्टे को बैलेंस करने के लिए छुआरों के पेस्ट को मिलाकर थोड़ा सा मीठा करके बनाई गई वो Dish है जो आपको Confuse भी करती है और Amuse भी। खट्टापन, मिठास, Burnt अखरोट की श्याही और काले चने या कद्दू का Twist, ये सब कुछ एक ही Plate में! जैसे Himachali Weather, Unpredictable लेकिन हमेशा ताज़ा। 🌧️🍠

❤️ 5. **मदरा** - Desi Ghee में डूबा हुआ दही को बिना फटने दिए पकाकर बना मदरा इतना Royal होता है कि अगर हिमाचली धाम में

Dishes में कोई राजा होता है, तो यही होता है। कांगड़ी और मंडियाली धाम में, सफ़ेद काबुली छोले या रौंगी का मदरा लेकिन चंबियाली धाम में, राजमा का मदरा, भाऊ, राजमहल वाला राजमा, मदरे को दो घंटे तक Simmer किया जाता है जब तक कि ये राजमा जैसा ही रंग न पकड़ ले और ऊपर से घी की परत ऐसे चमके जैसे किसी Politician का चुनाव जीतने के बाद माथा💫। इसके Secret Ingredients हैं, कुटी काली इलाइची, साबुत सौंफ, दालचीनी, तेजपत्ता और बहुत थोड़े से लौंग। Dry Fruits, काजू, किशमिश, छुआरे, कटी हुई नारियल गिरी, इस Dish को बनाते हैं पूरे धाम का Crown 👑।

🟡 6. **अंत में कुछ मीठा हो जाए** - अब बिना मिठे के धाम वैसा ही जैसे Himachal बिना पहाड़ों के! मीठे चावल, Desi Ghee में पके, Dry Fruits से Loaded, या फिर बदाने का मीट्ठा या मीट्ठा सरूणा, वो Dry Fruits वाला Sweet Syrupy Magic, जिसे चावल के साथ हाथ से खाने के बाद भी आप ऊंगलियां चाटते हैं।

🟠 7. **Bonus Features (जिले के आधार पर)** - कांगड़ी और चंबियाली धाम में कढ़ी भी Serve होती है, जिसमें Besan की मोटी Fried पकोड़ियां डली होती हैं। मंडियाली धाम is the Foodie's Playground, "सेपू वड़ियां", उड़द दाल की उबाल के त्यार की हुई वड़ियाँ, गाढ़ी स्वादिष्ट ग्रेवी में तैरतीं; "औरिया मूंगी दाल", इसमें छाछ + Mustard पाऊडर का ऐसा Acid-base Reaction होता है कि Chemistry Class याद आ जाती है। तड़का, सरसों के तेल में सिर्फ साबुत लाल मिर्च का। पहाड़ी Perfection!🔥

पिछले 10-15 सालों से, जबसे लोगों को शादी-ब्याह में "Royal Vibes" देने का शौक चढ़ा है, तबसे धाम में भी Innovation की हवा चल पड़ी है😄! अब सिर्फ पारंपरिक स्वाद से काम नहीं चलता, "ज़रा रॉयल टच देना पौंदा है भाऊ" कहते हुए लोग राजमा और मटर-पनीर को भी धाम में घुसेड़ने लगे हैं😂। मतलब अब धाम ऐसी हो गई है जैसे कोई हिमाचली Royal थाली नहीं, बल्कि Bollywood की Multi-Starrer फिल्म हो, जहाँ हर Dish अपनी Screen Presence दिखाना चाहती है🍛🎬! और हाँ, राजमा और मटर-पनीर भले Outsider हों, लेकिन अब वो इतने Gracefully घुल-मिल गए हैं कि बरोटी/बोटी भी सोचते होंगे, "चलो, ये भी अब अपने ही हैं"😄👑!

अब सबसे मजेदार बात सुनो, और थोड़ा झटका भी तैयार रखो😲😂! तेलिए मांह, छोलों की दाल, और औरिया मूंगी दाल, इन तीनों का नाम सुनते ही कुछ लोग सोचते हैं, "ओ बाप रे! कच्चा सरसों का तेल?! वो भी बिना तड़के के? लेकिन उनके लिए Surprise🎉 है, जब आप ये तीनों धाम की Gems दालें खाओगे, तो सरसों के तेल की कड़क महक का रत्ती भर नामो-निशान तक नहीं मिलेगा, हाँ, बिल्कुल ZERO Raw Oil Taste🙅💯! और यकीन मानो, कोई तड़का नहीं डलता, इनमें सिर्फ कच्चा सरसों का तेल, हाथों से पिसे हुए मसाले दालों के साथ उबाले जाते हैं और Centuries पुरानी कला का जादू है ये✨! मतलब, जो लोग सोचते हैं कि बिना तड़के के स्वाद नहीं आता, उन्हें धाम के ये Dishes ऐसा जवाब देते हैं जैसे कोई Himachali नानी या दादी बोले, "बेटा, स्वाद मसाले में नहीं, नीयत और नुस्खे में होता है"😄👵🍲! तो अगली बार कोई बोले "कच्चे तेल में कैसे बनता है खाना यार?", तो बस कह देना, "तू

खा तो सही एक बार तेलिए मांह और दालें, तेरी सारी गलतफहमियाँ Desi Ghee में घुल जाएंगी"😂□!

चारोटी/सागला/बलटोई में पकता है ये खाना, वो भी लकड़ी की आग में, 4 - 5 मीटर लम्बे गड्ढे पर चारोटी/सागला/बलटोई रख कर। और हां, हरेक चारोटी/सागला/बलटोई का वजन होता है 22 - 25 किलो! इतना वजन Gym में उठाओ तो Body बनती है, पर यहाँ Flavor बनता है! और परोसने वाले? सिर्फ बरोटी/बोटी ब्राह्मण, नंगे पांव, और चावल Serve करने का काम भी सिर्फ और सिर्फ बरोटी/बोटी ही करते हैं, It's a Sacred Act, not a Buffet Service!

अब बात करते हैं Ambience की! धाम Serve होती है पत्तलों पर, जो बनी होती हैं Sal या Taur के पत्तों से, एकदम Eco-friendly! कोई और Plate नहीं, Pure देसी स्वाद on Nature's Plate हिमाचली धाम - वो स्वाद, जो सिर्फ जुबान नहीं, आत्मा में उतरता है! 🍛🌿😋❤️

धाम हाथ से खाने का मजा ही कुछ और है🍛🤲! और ये कोई "Old-school" आदत नहीं है, एक सिद्ध Scientific Logic है इसके पीछे, जी हाँ...फुल वैज्ञानिक कारण😎🧪! हमारे हाथ की पाँचों उंगलियाँ सिर्फ खाना खाने के लिए नहीं बनीं, ये पाँचों पंचतत्व (Earth🌍, Water💧, Fire🔥, Air🌬️, Space🌌) की प्रतिनिधि हैं। अब जब आप धाम को प्यार से हाथ से खाते हो, तो वो पाँचों तत्व भी आपके शरीर में घुल जाते हैं, मतलब एक Spoon नहीं, Nature की पूरी Wi-Fi एक्टिवेट हो जाती है📶✨! और ऊपर से, जब घी में डूबा हुआ मदरा या खट्टे में तैरते काले चने उंगलियों के रास्ते सीधे आत्मा से Connect करते हैं, तो दिल

कह उठता है, "भाऊ, ये सिर्फ खाना नहीं, ये तो Meditation है" 🧘🍽️! तो अगली बार जब कोई चम्मच से धाम खता दिखे, तो बस मुस्कुरा के कहिए, "भाऊ, Spoon से सिर्फ Soup पीते हैं, धाम तो हाथों से ही स्वादिष्ट Feel होती है!" 😄🙏

धाम कोई Fancy Restaurant की Tasting Menu नहीं है, ये हिमाचली घरों की Soul Food है। Kangra से लेकर Mandi तक, Chamba से लेकर Hamirpur, Bilaspur और Una तक, हर घर, हर परिवार, हर पीढ़ी के दिल में बसी है ये धाम। मैंने बचपन से आज तक हर खास मौके पर धाम खाई है, और Believe Me, दुनिया घूम आओ, पर जो Satisfaction एक कटोरी तेलिए मांह की दाल दे देती है, वो न किसी Italian Pasta में है, न Pizza-Burger में।

अगर आप हिमाचली हैं, तो धाम आपके DNA का हिस्सा है। और अगर आप हिमाचली नहीं हैं और आपने कांगड़ी या मंडियाली या चंबियाली धाम का स्वाद आज तक नहीं लिया है, then you've missed out on one of the most sacred and delicious culinary traditions of Bharat & Himachal! धाम हमारे लिए सिर्फ खाना नहीं, एक संस्कार है, एक Nostalgia है, एक Commitment है, To food, To roots, To love❤️। तो अगली बार जब कोई कहे कि हिमाचली धाम क्या होती है, तो बस उन्हें ये Note भेज देना। 😉

धाम खाओ, दिल से जीओ! 🥘❤️

"पतरोड़े - हिमाचली मानसून का स्वाद और आत्मा का सुकून!" 🌧️🌿🍽️

जब पहाड़ों पर बादल गले मिलने आते हैं, खेतों में हरियाली झूमती है, और हवा में मिट्टी की भीनी-भीनी खुशबू घुलती है, तभी हिमाचली रसोई में एक जादू पकता है, रसोई से एक खास गंध आती है, "पतरोड़े और उनकी मनमोहक खुशबू", जिसे हम हिमाचली में "बत्तें" भी कहते हैं। 😋

पतरोड़े कोई आम खाना नहीं है, ये हमारी जड़ों से जुड़ा वो स्वाद है, जो हम हिमाचलियों की आत्मा को भी सुकून देता है। ये वो डिश है जो सिर्फ हमारा पेट नहीं भरती, ये दिल भर देती है। जुलाई से सितंबर के 3 महीनों का अटूट बंधन है हिमाचलियों और पतरोड़ों aka बत्तों का। 🫶

अरबी के पत्तों पर मक्की के आटे के गाढ़े पेस्ट की लेयर थोड़े सरसों के तेल के स्वाद के साथ, जिसमें मसालों की पहाड़ी बारिश हो रखी हो, हल्दी की गर्माहट, पिसे धनिये की मिठास, पिसी दालचीनी, कुटी मिर्च का तीखापन, अजवायन...और सबसे Important, कूंडे (Thick Natural Stone Bowl) में लकड़ी के डंडे से पीसी गई हरी मिर्च और भावरी (Cinnamon Basil) 🌿।

मक्की के आटे के पेस्ट में मिले मसालों की ये जादुई परतें हर एक पत्ते के साथ ऐसे चिपकी होती हैं जैसे Himachali परिवार की परंपराएं गहरी, सच्ची और स्वाद से भरपूर और हर परत में बसता है कहीं दादी, कहीं नानी कहीं माँ, कहीं भाभी माँ, कहीं बहन का प्यार। 🥰

कितना सच है ये तो पता नहीं, पर पतरोड़ों पर परत दर परत पेस्ट लगाकर तैयार करते वक्त उसे तैयार करने वाली महिला बिलकुल बात नहीं करती क्योंकि मान्यता है कि बात करने से बनाए पतरोड़े गले मे खराश करते हैं, खाने के बाद। 🤔

जब पानी की भाप में पकाकर पतरोड़े बर्तन से बाहर निकाले जाते हैं, तो लगता है जैसे हर पतरोड़ा किसी Royal Spa से निकलकर आया हो! 💆🌿

पतरोड़े जब भाप में पकने के बाद सरसों के तेल में तवे पर सेंके जाते हैं, तो उनका स्वाद और भी निखर जाता है, और अगर ये लोहे के तवे पर सिके हों, तो फिर बात ही कुछ और है! 😋 लोहे का तवा पतरोड़ों को वो देसी करारापन देता है जो Non-stick पर मुमकिन ही नहीं। सरसों के तेल की तीखी खुशबू और हल्की-सी चटक, हर टुकड़े में एक Earthy, Rustic Flavour भर देती है, जैसे बचपन की रसोई में वापस लौट जाना। गरमा-गरम पतरोड़े जब सोंधी महक के साथ तवे से उतरते हैं, तो लगता है जैसे हर क्रंच में हिमाचल की मिट्टी बोल रही हो। 🌿🔥🍳

नाश्ते और लंच में एकदम ताजा रोटी के साथ या शाम को चाय के साथ स्नैक्स में, इन पतरोड़ों को आप कहीं भी Adjust करके खा सकते हो। 😂

पतरोड़ों के बारे में Age-old हिमाचली Recipe Wisdom है, जो कहती है, "ज़्यादा खा लिया तो सीना जल उठेगा क्योंकि पतरोड़े गर्म तासीर के होते हैं"🔥! और इसीलिए Entry होती है, ठंडी छाछ की! जी हाँ, पतरोड़े

का स्वाद "Complete" तभी होता है जब उसके साथ 1-2 गिलास भर छाछ हो, ठंडी, और बिल्कुल मिट्टी के बर्तन में जमे दही के दिल से निकली हुई! 🥛

छाछ मतलब, पतरोड़े खाने के बाद पेट का फायर ब्रिगेड 🚒! छाछ मतलब, नींद का इंजैक्शन 💉, जब पटरोड़े खाने के बाद शरीर बोले “थोड़ा आराम भी चाहिए भाई!” 😴

हम हिमाचलियों के लिए पतरोड़े सिर्फ रेसिपी नहीं है, ये हमारी संस्कृति, मौसम और कहीं दादी, कहीं नानी, कहीं माँ, कहीं भाभी माँ, कहीं बहन के हाथों का मेल है। हर साल जुलाई से सितंबर तक, ये डिश हिमाचल के घरों में ऐसे आती है जैसे त्योहार, बिना पूजा के भी पवित्र!

कांगड़ा, मंडी, ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर और चंबा के घरों में ये पतरोड़े बनाने की परंपरा चलती है, और जब पतरोड़े बनते हैं, आस-पड़ोस सूंघकर ही जान जाता है, "आज खास दिन है!" 😋

हम हिमाचलियों के लिए, पतरोड़े खाना मतलब अपनी जड़ों से जुड़ जाना। हमारे लिए ये Comfort Food नहीं, "Soul Food" है, हर Bite में स्वाद भी है और यादें भी। हर टुकड़ा कहता है, "आप अपने पहाड़ों में हो, चिंता छोड़ो और जियो अपनी जिंदगी।" ⛰️❤️

"अद्भुत भाबरी (Cinnamon Basil) लूण – पहाड़ों की मिट्टी से उपजा ज़ायका"! 🧂🌿

हिमाचल की वादियों में न सिर्फ़ पहाड़ खूबसूरत हैं, बल्कि वहाँ की रसोई में भी एक जादू बसता है। और जब बात हो कच्चे खट्टे आमों की, जिन्हें चूल्हे की गरम राख में भूनकर उनके छिलकों से आज़ादी दिलाकर प्लेट में रोटी के साथ परोसा जाता है या फिर चुल्हे में भूने कच्चे आम के Pulp में कच्चे कटे प्याज के टुकडों से बने माहणी में एक अलग ही जादुई स्वाद आए, तो उस जादुई स्वाद में जो सबसे बड़ा हाथ होता है, वो है एक बेहद ख़ास नमक, हिमाचली में बोलें तो भाबरी लूण! 😋🔥

मेरे लिए, ये कोई आम नमक नहीं है, ये "The Soul Salt of Himachal" है, एक देसी मसालों और Herbs से बना ऐसा ज़ायका, जो सीधे दिल में उतरता है। इसकी खुशबू में बचपन की यादें होती हैं, और स्वाद में वो सारी बचपन की बातें।

इस नमक को बनाना भी किसी पहाड़ी पूजा से कम नहीं है। पहले बग़ीचे से ताज़ी भाबरी (Cinnamon Basil) तोड़ी जाती है, फिर हाथों से चुना जाता है ताजा हरा पुदीना, धनिये की पत्तियाँ, और वो तीखी मगर मनभावन हरी मिर्चियाँ। थोड़ा सा जीरा, थोड़ी काली मिर्च, और बस थोड़े से लौंग, Himalayan Pink Salt, काला नमक, ताकि Pure देसी पहाड़ी Fusion Flavor तैयार हो सके। 🌿🌶️

अब बारी आती है असली मेहनत की, इन्हें पीसा जाता है सिलबट्टे पर या फिर कूंडे (Natural Stone Bowl) में खास लकड़ी के डंडे से, ना कि

मिक्सी में। क्योंकि असली स्वाद तो तभी आता है जब हर पत्ता, हर दाना, अपने आप को इस स्वाद के संग Blend करता है। जब ये पसीना बहाने की प्रक्रिया पूरी होती है, तो जो तैयार होता है, वो है एक ऐसा चटपटा, तीखा, सुगंधित नमक, जो किसी की भी जुबान पर पहला कौर बन कर चढ़ जाए! 🤤

उस नमक की खुशबू ही बता देती है कि इसमें पहाड़ी हर्ब्स की एक खास बात है🌿🧂। इसे सूंघते ही ऐसा लगता है जैसे किसी पहाड़ी रसोई के दरवाज़े खुले हों और अंदर से मिट्टी, धुआं और मसाले की महक बाहर आ रही हो, एकदम देसी Aroma Therapy 😌🔥!

और, जब इसे गरम राख से निकाले गए आम के गूदे पर छिड़का जाता है और उस आम को रोटी से खाया जाता है, तो आम बस आम नहीं रह जाता, वो पहाड़ का फलों का राजा बन जाता है🏔□। उस पहले निवाले में जो स्वाद होता है, वो किसी 5 Star Dish से कम नहीं 😋🍽। वो आम की खटास, और रोटी की सादगी, कमाल का Combo है ये 🔥🥭□। ऐसे लगता है जैसे बचपन फिर से जुबान पर लौट आया हो, एकदम देसी, एकदम दिल से 💛👶।

ये नमक सिर्फ स्वाद नहीं बढ़ाता, मूड भी बना देता है 😍...यही नमक कच्चे आम के माहणी में, दही में, रायते में, सलाद में डालो, तो खाने वाला यही बोलेगा "वाह क्या बात है, इसमें तो पहाड़ बसा है!" 🏔🤩

तो अगली बार जब आप किसी पहाड़ी दोस्त के घर हिमाचल जाएँ और आपको कच्चे आम पर या कच्चे आम के माहणी में या दही में या रायते

में या सलाद में किसी जादुई मसाले का स्वाद आए...समझ जाइए, वो Himachal का Soul Salt है।

इसे नमक मत समझिए, ये पहाड़ों की मिट्टी, हवा और प्यार का Blend है। 🌿🌶️⛰️

कुल्लू और मंडी के स्वाद का असली जादू ✨ - Siddu Point, Shyam Nagar, Dharamshala में!

हर वो दिन जब मैं Siddu Point के Siddu और मंडियाली कचौरी का स्वाद लेता हूँ, वो एक बेहतरीन याद बन जाती है। 🥰

यहाँ का Siddu सिर्फ एक Dish नहीं, बल्कि एक संस्कृति है, जो हर Bite के साथ कुल्लू की मिट्टी, सादगी और प्यार का एहसास कराता है। 🌄❤️ मसालेदार अखरोट की Filling से बना सिड्डू गरमा गरम परोसा जाता है, नरम, मुलायम और पूरी तरह भाप में पका हुआ, जिससे हर हिस्सा स्वाद से भरपूर होता है। □🔥 ऊपर से देसी घी की Drizzle और साथ में तीन अनोखी चटनियाँ, जो इसका स्वाद Next Level पर ले जाती हैं:

1. 🌿 हरे धनिये और पुदीने की ताजी चटनी: एकदम Fresh और खुशबूदार,

2. 🍅 टमाटर की तीखी चटनी: मसालों से भरपूर, बिल्कुल देसी अंदाज़ में और

3. 🧄 दही लहसुन की चटनी: हल्की, ठंडी और स्वाद को Perfectly Balance करती हुई।

क्योंकि Siddu गेहूँ के आटे से बना होता है, ये न सिर्फ Tasty बल्कि Health Friendly भी है, मोमोज़ की तुलना में कहीं ज्यादा Healthy Option। 💪🥗 और जब मैंने पहली बार Siddu Point की मंडियाली कचौरी का स्वाद चखा था, तो सच में यकीन नहीं हुआ कि Himachali Cuisine में भी इतनी Depth और Richness है। 😋

Fermented गेहूँ के आटे से बनी ये खास कचौरी बाहर से Crisp और अंदर से उड़द दाल की मसालेदार और Nutrition से भरपूर Filling के साथ परोसी जाती है। इसमें वो देसीपन था जो आजकल के Fast Food में Missing होता है। 🍽️

इसके साथ परोसा गया...

🥒 अचार,
🍶 मिट्टी के बर्तन में जमाया हुआ दही,
🌿 और वही Fresh धनिया-पुदीना चटनी।

बस कह सकते हैं , स्वाद जो यादों में बस जाए! 💫

Siddu Point के Siddu और मंडियाली कचौरी में शुद्धता, मेहनत और प्यार साफ झलकता है। यहाँ खाने से सिर्फ पेट नहीं भरता, आत्मा भी तृप्त हो जाती है। 🙏💚

यहाँ का हर Experience एक यादगार सफर जैसा है, जिसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। तो अगर आप कुल्लू और मंडी के असली पहाड़ी स्वाद का अनुभव करना चाहते हैं, तो अगली बार जब धर्मशाला जाएं, Siddu Point, Shyam Nagar ज़रूर जाएं। 🏔✨ हर निवाला यहाँ हिमाचल की आत्मा से जुड़ा हुआ है। ⛰🥰

"खट्टे, मीठे, तीखे स्वादों का फुल तड़का – पेश है पहाड़ी 'खट्टे की चाट' का देसी धमाका! 🍋🌶🍯🔥😋"

आओ आज आपको एक हिमाचली चाट का जायका दूं। इसको मैं तो "खट्टे की चाट" कहता हूँ। यह सर्दी के सीजन का व्यंजन है। बड़ा वाला खट्टा (पहाड़ी नींबू), जिसे यहां शहरों में लोग गलगल भी कहते हैं...

...इसका पल्प निकाल लिया जाता है। पत्थर के कूंडे में लकड़ी के डंडे से कूट कर पोदीना, धनिया और हरी मिर्च का नमक बाना लिया जाता है, जिसे स्वादानुसार पल्प में गुड़ या शक्कर के साथ मिला लिया जाता है। और, अंत में कोयला इस चाट पर रखकर उसे दी जाती है हींग की धूनी।

अब इसमें हो गए सभी स्वाद...खट्टा, मीठा, तीखा, नमकीन...'विटामिन C' की खान है ये।

जब पहला निवाला मुंह में जाता है, वो खट्टा रस, पिसी हरी मिर्च की चुभन और गुड़ की मिठास एक साथ मिलकर जैसे जीभ पर नाच उठते हैं💃🔥! फिर क्या, हर किसी का एक ही डायलॉग होता है, "एक प्लेट और बना दे यार!" 😄🍋

धूनी वाला वो कोयले का तड़का तो जैसे इस चाट की आत्मा है🔥🧂। जैसे ही हींग और कोयले की वो महक उठती है, पूरा आंगन महक जाता है, और लगने लगता है जैसे भूख ने कोई लंबा Notification भेज दिया हो 😋📲। घर के बड़े-बुजुर्ग भी बोल पड़ते हैं, "बस दो चम्मच देना, पर ज़्यादा तीखा न हो", और फिर खुद ही दो बार रिपीट भी कर देते हैं 😂!

ये सिर्फ चाट नहीं, एक परंपरा है...एक मजमा है जहां मोहल्ले के बच्चे, दादी-नानी, और कभी-कभी तो बगल वाले भी शामिल हो जाते थे😄👵👦। सब लोग धूप में बैठकर गप्पें मारते थे, और एक-एक निवाला लेते हुए कहते थे, 'ये स्वाद तो सिर्फ पहाड़ों में ही मिल सकता है'। उस चाट के साथ बचपन भी परोसा जाता था, यादों का तड़का लगाकर 🥰⛰️।

इसे दोपहर के समय खाया जाता है, धूप में बैठकर, ऐसे ही भरपूर आनंद आता है।

होता ये एकदम मस्त है...बचपन से जायका लेता आ रहा हूँ मैं इसका।

👌👍😋😋😋👍👌

(*Content Credit: Mr. Lalit Sharma*)

🌿 "लसोड़ों की वो खट्टी-मीठी सब्जी का पहला स्वाद", एक हिमाचली रसोई की कहानी! 🏔️

अगर आप हिमाचली नहीं हैं तो चलो आपको पहले लसोड़ों से Introduce करवा दूँ...इसको अंग्रेजी में कहते हैं Gum Berry...यह एक जंगली Berry है, पर क्योंकि इसकी खट्टी-मीठी सब्जी इतनी स्वाद बनती है कि शायद इसी वजह से हमारे पूर्वजों ने इसके पेड़ अपनी जमीनों पर उगा लिए थे 🌿...Gum Berry बोलें तो लसोड़े। लसोड़ों को खनिज, फाइबर, विटामिन और अन्य एंटी-ऑक्सीडेंट 🛡️ का एक महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

अब बताता हूँ कि लसोड़ों की सब्जी की मेरी ज़िंदगी में एंट्री कब हुई...शायद बात 1977 की गर्मियों की छुट्टियों की है, हर साल की तरह मैं अपने ननिहाल मुबारिकपुर, हिमाचल प्रदेश गया हुआ था...पहाड़ों में धूप गुनगुनी हो चली थी, खेतों से गेहूँ काटी जा चूकी थी, और हवा में आम के बौर की खुशबू तैर रही थी...10 - 12 देसी किस्म के आम के पेड़ हैं वहां हमारे, पकने के बाद हरेक आम का अपना ही अलग और अव्वल

स्वाद। पुश्तैनी मकान की वही मिट्टी की दीवारें, स्लेटों की छत, और आँगन में लगी तुलसी की हँसती हुई क्यारी।

एक सुबह का समय था, और नानीजी छींका (रसोई के कोने की टोकरी) से कुछ ढूँढ रही थीं। मैंने अपनी पहाड़ी में पूछा, "माताजी, अज क्या बणाई लेया लाणा, मतलब आज क्या बना रही हो?" नानीजी मुस्कराईं और बोलीं, "आज वो बनाएँगे, जो तूने शहर में कभी चखा भी नहीं होगा...लसोड़ों की खट्टी-मीठी सब्ज़ी!" 😋

अब मैं कन्फ्यूज़ 🤔...सोचा ये "लसोड़ा" कौन? कोई पहाड़ी चाचू है क्या? 😂 नानीजी आँगन के कोने में रखी बांस की टोकरी से हरे-हरे छोटे फलों के 2-3 गुच्छे दिखाए..."ये हैं लसोड़े"!

गाँव में लोग आपस में मिलनसार भी होते थे और मददगार भी...हमारे घर के पास लसोड़ों का पेड़ किसी और परिवार का था...नानाजी शायद उनके पेड़ से तोड़कर लसोड़े ले आए थे, एकदम ताज़े, कड़क, और हल्के चिपचिपे से!

नानीजी ने चूल्हे पर कड़ाही में सरसों का तेल डाला। जैसे ही मेथी दाने तड़के में नाचे, रसोई में एक अलग ही खुशबू फैल गई, वही देसी, Earthy Aroma जो पहाड़ों में ही मिलती है।

सबसे पहले मेथी, फिर सौंफ, फिर हींग...हींग की खुशबू से ही भूख दो गुना हो गई 😆। अब बारी थी धनिया पाउडर और हल्दी की। फिर आया

नानीजी का सबसे बढ़िया दांव, कद्दूकस किया हुआ कच्चा आम और थोड़ा सा गुड़। आम की खटास और गुड़ की मिठास मिलते ही कड़ाही से एक "चटपटा गाना" निकलने लगा, छन्न छन्न छन्न...चटचटचट...!🎶

ये होता है असली Fusion, ना Continental, ना Chinese...ये होता है पहाड़ी Masala Mix!

पत्थर से कूटकर, बीज निकालकर और धोकर मसाले में डाले गए लसूड़े। जैसे ही वो मसाले में लिपटे, उनकी शक्ल भी बदल गई, चमक उठे जैसे हल्दी-गुड़ का नया कोट पहन लिया हो, धीमी आंच पर 15-20 मिनट पकाये गये। मसाला धीरे-धीरे गाढ़ा हो गया, कच्चे आम का खट्टापन, गुड़ की मिठास, सौंफ-मेथी की गरमाहट...और हींग का जादू। 😍

फिर जब मैंने पहला निवाला लिया। वो खट्टी-मीठी, गाढ़ी मसालेदार सब्ज़ी रोटी के साथ मिलकर जैसे दिल में उतर गई। मुँह में जायका तो था ही, पर आँखों में कुछ और था, यादें, मौसम, और नानीजी का प्यार। लसोड़ा खाने में छोटा दिखता है, लेकिन स्वाद में...पूरा पहाड़ समा जाए उस एक डिश में। 😋⛰️

अब सही सोचता हूँ कि शहरों में ऐसे स्वाद नहीं मिलते...क्योंकि वहाँ यादें नहीं पकाई जातीं, सिर्फ़ रेसिपी Follow की जाती है। 🤔

लसोड़ों की ये सब्ज़ी कोई Fancy Dish नहीं है। ये एक रिवायत है, एक यादों की थाली, एक ऐसा स्वाद परिवारजनों की कहानियों के साथ ही मिलता है।

तो जब अगली बार बाजार में लसोड़े दिखें, जो कि शहर में बहुत मुश्किल है, तो उन्हें नज़रअंदाज़ मत कीजिए। खरीदिए, घर ले जाईए, पकाइए और फिर देखिए कैसे हर निवाला कहता है कि "यही है असली देसी Luxury!" 😄🌿

आज दिल शायराना है! ✍️❤️

कभी-कभी दिल अपने ही जज़्बातों की ज़ुबान बन जाता है...आज कुछ वैसा ही दिन है। दिल के किसी कोने से आवाज़ उठती है, "कुछ अधूरा सा है, कोई खामोश सा एहसास है...", और तब समझ आता है...इश्क़ फिर से साँस ले रहा है 💞। 🌧️ वो शाम...जैसे क़ुदरत ने भी अपने रंग बदल लिए थे। बादलों की सरगोशियाँ, हवा की हल्की सी भीनी खुशबू...मानो हर झोंका किसी की याद में डूबा हो 😔🍃।

आसमान धुंधला था, पर दिल में कोई तस्वीर बिल्कुल साफ़ उभर रही थी, एक चेहरा...एक मुस्कान...एक नमी 😢❤️। उस पल ऐसा लगा जैसे हर बादल कह रहा हो "अब और नहीं...अब उसे ढूंढ लाओ, इस दिल के वीराने में कुछ तो रोशनी चाहिए"। दिल भी ज़िद पर अड़ा, "कहीं से उसकी आहट ले आओ...इन हवाओं में उसकी साँसों की खुशबू भर दो..." 🌬️💭। हर बूँद बारिश की नहीं लगी...कुछ बूँदें तो उसकी यादों की चुपचाप गिरती सिसकियाँ थीं 💧🥀।

एक खामोशी है, जो हर धड़कन के बीच बस गई है...ना वो शोर करती है, ना रुकती है□🔕। बस धीमे-धीमे उसकी याद में दिल के कोनों में

दस्तक देती है, जैसे कोई भूला हुआ नगमा, जो हवाओं में गूंजता है, और हर बार तुम्हारा नाम पुकारता है🎶🌫️। जब-जब आंखें बंद करता हूं, वो चेहरा नहीं...एक पूरा मौसम उतर आता है पलकों के नीचे, बस वही, वही जो चला गया, और फिर भी हर जगह मौजूद है।

“कह देना उससे...” दिल ने फिर धीमे से बुदबुदाया, “ये मौसम जवाँ हो चला है, लेकिन मेरी रूह अब भी ठंडी पड़ी है...” 💔😔। सावन, जो कभी राहत देता था, अब डराने लगा है, ये तन्हाई अब दिल की दीवारों को चीरने लगी है। कभी-कभी लगता है जैसे साँसें भी उस बिना अधूरी हैं 😶🌫️💭।

मैं चाहता हूँ, सूरज थम जाए, बादल बस उसकी ओट बन जाएँ 🌥️🌳, मैं ख़ुद उसकी परछाईं बन जाऊँ। हर दर्द, हर थकान उससे पहले खुद में समेट लूँ 🤗🌫️।

वो लम्हे...जो कभी साथ बिताए थे, अब वक़्त के पन्नों से गिरते हुए सूखे फूल बन चुके हैं📖🌸। पर अजीब बात ये है, हर बार जब उन्हें छूता हूँ, वो फिर महकने लगते हैं, जैसे उसकी हँसी अब भी कहीं गूंज रही हो...और मैं...हर बार उसी महक में उलझ जाता हूँ। अब तो हाल ऐसा है कि नींद से पहले नहीं, जागने के बाद भी बस उसी की कमी महसूस होती है🌙💤।

उसकी जुल्फ़ों की हर लहर में मेरी बेचैनी गूंजती है, “बस एक बार...एक बार लौट आओ...मैं अपनी पलकों से तेरे लिए एक दुनिया बुन लूँगा”

👁️💋🏡। ये वादियाँ अब तंग करने लगी हैं, ये हवाएं अब सुलगती लगती हैं, और रातें? वो तो जैसे स्याह ख़ामोशी का कफ़न ओढ़े रहती हैं 🌀🖤। हर तारा अब उसकी आँखों की चमक जैसा लगता है, पर अफ़सोस...वो आंखें अब बस यादों में ही मिलती हैं ✨😔।

🕯️ और जब रात अपने सबसे गहरे सन्नाटे में पहुँचती है...तब सपनों की एक महफिल सजती है, जहाँ वो भी है, मुस्कुराती हुई...चुपचाप...बिल्कुल पास...फिर भी दूर 🌠▯। दिल बस एक ही दुआ करता है हर रात, "या तो वो लौट आए, या फिर ये यादें कहीं बह जाएँ..."। क्योंकि अब इंतज़ार नहीं होता...अब तो उसकी परछाईं भी राहत लगती है 🕊️💘।

⏳ दिल ठहर गया है...वक्त भी थम गया है...और ये आँखें? अब भी उसके इंतज़ार में भीगी हुई हैं...बस उसके नाम की एक ख़ुशबू लिए, हर सांस उसी से मिलने को बेक़रार है...! 🌬️▯✨

🌸 ख़ुशबू (Fragrance) की कहानी 🌸

एक समय की बात है...पहाड़ों में किसी शांत और प्यारी सी जगह में फूलों से निकली खुशबू रहती थी। वो कोई बड़ी चीज़ नहीं थी, न कोई ध्वनि, न रंग, न कोई नाम। लेकिन उसका असर बहुत गहरा था। जहाँ से वो गुज़रती, वहाँ कुछ बदल जाता था। एक पेड़ की शाख हिल उठती, कोई

सूखा फूल फिर से मुस्कुरा देता, कोई पत्ता थोड़ी देर के लिए रुक जाता। वो खुशबू खुद बहुत हल्की थी, पर उसकी मौजूदगी हमेशा महसूस होती थी। ऐसा लगता था जैसे कह रही हो, "मैं रहूँ या न रहूँ, कोई बात नहीं...लेकिन जब कोई मुसाफिर यहां से गुज़रे, तो मुझे महसूस करे"।

वो खुशबू हमेशा अपने पीछे एक नर्म सी, मीठी सी हवा छोड़ जाती, जैसे किसी ने दिल से दुआ दी हो। उसका कोई मक़सद नहीं था शोहरत या नाम कमाने का। उसका काम सिर्फ़ ये था कि जब भी कोई उदास दिल आए, वो उसकी खुशबू से राहत महसूस करे। फिर चाहे मौसम जैसा भी हो, गर्मी की थकान, सर्दी की उदासी, या पतझड़ की ख़ामोशी, उन पहाड़ों में उसका असर हमेशा बना रहता। कभी वो फूल बनकर खिल जाती, कभी हवा बनकर बहती, कभी किसी पुराने पेड़ की परछाई में चुपचाप बैठ जाती।

लोग कहते, “ये जगह कुछ अलग है...यहाँ एक सुकून सा है” । और सच्चाई ये थी कि वो सुकून उसी खुशबू की देन थी। वो खुशबू चाहती थी कि उसकी याद किसी भारी बोझ की तरह न रहे। बल्कि एक मीठी मुस्कान की तरह हो, जैसे सुबह की पहली किरण हो, या चाय की खुशबू वाली वो पहली चुस्की। वो कहती थी, “मैं किसी की याद बनकर नहीं, किसी की राहत बनकर रहना चाहती हूँ” ।

उसे ये भी याद नहीं था कि वो कहाँ से आई थी। वो कहती, “मैं जबसे इन वादियों में आई हूँ, बस यहीं की हूँ” । उसे अब कुछ और याद नहीं था, न उसका नाम, न उसका घर, न उसका कोई अपना। बस, उन पहाड़ों

की ज़मीन, उन पहाड़ों की ठंडी हवा और वहाँ आने वाले मुसाफ़िरों की ख़ामोशियाँ ही उसका सब कुछ थीं। कभी-कभी, जब कोई बहुत थका हुआ या टूटा हुआ दिल वहाँ आता, तो वो उसके पास बैठ जाती, चुपचाप, बिना कुछ कहे। और कुछ पल बाद, वो इंसान थोड़ा हल्का महसूस करता, जैसे कोई Invisible दोस्त उसे गले लगा रहा हो।

वो अक्सर मुस्कुरा कर कहती, “कभी अगर मैं तुम्हें न दिखूँ...अगर मेरी आवाज़ तुम न सुन सको...तब भी जब तुम यहाँ चल रहे होगे, और कोई ठंडी सी हवा तुम्हारे गाल को छू जाएगी, समझ लेना, वो मैं हूँ” । “कभी जब रात गहरी हो और चाँदनी थोड़ी उदास लगे...और तुम्हारी आँखों में आँसू हों, तब भी तुम मेरी साँसों की गर्माहट को महसूस करोगे। मैं वहीं कहीं होऊँगी...तुम्हारे बहुत पास...बस नाम के बिना, चेहरे के बिना” ।

उसकी यही सबसे प्यारी बात थी, कि वो किसी भी रूप में रहे, लेकिन "महसूस" हमेशा की जाती थी। खुशबू की कोई Beginning नहीं थी, और कोई End नहीं। वो चाहती थी कि लोग उसे याद न करें, महसूस करें। और जब कभी कोई ठंडी हवा उसन पहाड़ों से होकर गुज़रेगी, और कोई खामोश दिल थोड़ी देर उस पत्थर पर बैठेगा, वहाँ वो अब भी होगी। कभी एक फूल की तरह, कभी एक हवा की तरह, लेकिन सबसे बढ़कर, एक वफ़ा की ख़ुशबू की तरह…जो रह भी न पाए, तो भी “महका करेगी...!” 🌺✨

"वो पंछी...और हम"! 🐦🧍🌍"

जब कभी डाल पर कुछ पंछी बैठे दिखते हैं🐦, तो यही विचार आते हैं मन में...वो पंछी नहीं जानते शहर क्या है। उन्हें मालूम नहीं कि ट्रैफिक जाम क्या होता है, ऑफिस टाइम क्या होता है, और मीटिंग में देर हो जाना कैसा लगता है। उनके लिए ज़िंदगी का मतलब सिर्फ़ खुला आसमान है, एक छोटी सी दुनिया जिसमें वो, उनके साथी और कुछ रिश्ते बसते हैं।

उनका जीवन बड़ा ही सरल है, लेकिन उसी सादगी में एक गहरी समझ छुपी है। उन्हें मालूम है कि पंख फैलाकर उड़ना क्या होता है✨, और ये भी जानते हैं कि कितनी दूर तक जाना है। अपनी सीमाओं को पहचानना और फिर भी पूरी शिद्दत से उड़ना, यह उन्हें आता है।

वे घोंसले बनाते हैं, अपने घर सजाते हैं और जैसे ही सूरज ढलता है, चैन से सो जाते हैं🌅। न किसी अपॉइंटमेंट का टेंशन, न किसी डेडलाइन की भागदौड़। सुबह होती है तो बिना अलार्म के उठते हैं और एक नई उड़ान भरने के लिए तैयार हो जाते हैं, यही उनकी आदत है और यही उनकी लक्ज़री🛫।

अब ज़रा खुद पर नज़र डालिए...हम हर समय भागते रहते हैं। ना हमें चैन आता है, ना गहरी नींद। कभी भूख का अहसास नहीं होता, तो कभी खाने में स्वाद महसूस नहीं होता🍽️। हम सिर्फ़ जी रहे हैं, लेकिन असल में 'जीना' भूल गए हैं।

कभी-कभी लगता है कि ये दौड़ किसलिए है? पैसा? शोहरत? स्टेटस? और इन सबसे भी ज़्यादा, दूसरों को दिखाने के लिए एक ज़िंदगी जीना, क्या वाकई यही ज़रूरी है?

जाओ...कभी इत्मीनान से जीना सीखो। उस अदरक और इलायची कूट कूट कर डाल के बनाई गई कड़क टपरी वाली चाय का स्वाद लो☕, जहाँ न वाई-फाई होता है, न महंगे कप, लेकिन होता है सुकून, जो शायद पाँच सितारा होटलों में भी ना मिले। उस एक कप में दोस्ती का स्वाद होता है, पुराने किस्सों की मिठास और जिंदगी की वो मासूमियत जो हमने कहीं खो दी है।

कभी पहाड़ों की वादियों में घूम आओ🏞️, जहाँ हर सांस ताज़ा लगती है और हर मोड़ पर ज़िंदगी एक नया रूप दिखाती है। वहाँ न कोई ट्रैफिक है, न कोई हॉर्न...बस झरनों की आवाज़, पत्तों की सरसराहट और मन की शांति। हर सुबह धुंध की चादर ओढ़े आती है, जैसे प्रकृति खुद ध्यान में बैठी हो। और हर शाम सूरज पहाड़ों के पीछे छुपते-छुपते भी एक कविता कह जाता है। 🌄🍃

हर पल को जी भर के जीओ❤️। क्योंकि ज़िंदगी Photos में नहीं, Instagram Reels में नहीं, बल्कि उन पलों में है जो आपको सुकून देते हैं। जैसे उन पंछियों को है...अपने छोटे से घोंसले में।

(*Content Credit: Mr. Lalit Sharma*)

🌧 इश्क़ की रुत आई है... ज़रा दिल से महसूस करना! ❤️🔥✨

कभी सोचा है तुमने? कि कुछ शामें सिर्फ़ शामें नहीं होतीं...वो एक अल्फ़ाज़ से परे एहसास होती हैं, जो सर्द हवाओं 🌬 के संग लिपटी, खामोश साज़ बनकर हमारे पास चली आती हैं। आज की रात कुछ ऐसी ही है...ना कोई शोर, ना कोई भीड़, बस हम, ये खामोशियाँ और वो आसमान जो हमारे जज़्बातों की गहराई में डूबा सा लगता है 🌌🌙।

⏳ ज़िंदगी जब थमती है, तो कुछ लम्हे खुद-ब-खुद अमर हो जाते हैं...वो लम्हे जो वक्त की धड़कनों में दर्ज नहीं होते, बल्कि हमारी रूह में बस जाते हैं ▯। आज का ये पल भी उन्हीं में से एक है, अनकहा, अनसुना, पर बेहद महसूस किया गया 🤍। कभी-कभी तो लगता है जैसे कायनात ने ख़ुद एक मन्नत कबूल की हो, तुम और मैं...इस पल में...एक साथ...जैसे कोई अधूरी दुआ पूरी हो गई हो 🌠🙏।

🍂 कितनी अजीब बात है ना...कुछ रिश्ते बस ख़ामोशियों में पलते हैं, कोई इकरार नहीं, कोई वादा नहीं...फिर भी दिल उन लम्हों से बाँध जाता है, जैसे रूह से कोई धागा जुड़ गया हो 🧵💞। आज जब तन्हाई मेरी साथी बनी है, तब एहसास होता है कि तेरी गैरमौजूदगी भी मेरे सबसे अपने लम्हों में शामिल है, जैसे हवा में तेरी खुशबू अब भी ज़िंदा है🌫👃।

🎁 ये कुछ पल...सिर्फ़ समय नहीं हैं, ये एक अनमोल सौगात हैं, शायद हमारी कहानी का सबसे ख़ूबसूरत अध्याय 📖❤️। आओ ना...ज़रा पास

आओ...इन साँसों की नर्मी को महसूस करो □, इस दिल की धड़कनों को सुना करो...क्योंकि कौन जाने, कल के सफ़र में ये एहसास फिर मिले या नहीं 🛤️💔।

🎶 बारिश की ये बूंदें, आज कुछ ज़्यादा ही जानती हैं, शायद हमारे जज़्बातों का राज़। इन आँखों में जो नमी है, वो मौसम की नहीं, बल्कि उस दिल की है, जो तुम्हें सोचकर हर बार पिघल जाता है 🥺🌧️। कहते हैं, कुछ रिश्ते वक्त से परे होते हैं...और कुछ मुलाक़ातें मुकम्मल होकर भी अधूरी रह जाती हैं 💭🌀। तो अगर आज तुम्हारे पास वो कोई है, जिसे तुम आंखों में भर लेना चाहते हो, तो भर लो...जिससे कुछ कहना चाहते हो, कह दो...जिसका हाथ थामना चाहते हो, थाम लो ✋❤️। क्योंकि ये पल फिर लौटकर नहीं आएंगे...और हम भी शायद नहीं... ⛰️🕊️।

📿 पलकों पर बिठाकर रखो इस रात को, क्योंकि ये बस एक रात नहीं, ये वो वादा है जो तारे कर रहे हैं, वो ख़्वाब है जो चाँद बुन रहा है 🌙🧵✨। और हाँ...अगर कहीं तुमसे फिर कभी मुलाक़ात न हो, तो इतना ज़रूर जान लेना...कि इस एक रात में, मैंने तुम्हें अपने हर ख़्वाब से भी ज़्यादा चाहा था ❤️🔥🌀।

अतिरिक्त & Extras

🚢 मेरी International Logistics Industry की कहानी 🌍

इस Write-up में मैं बताने जा रहा हूँ मेरी ज़िंदगी की एक ख़ास यात्रा, Professional Journey in International Logistics Industry, वो यात्रा जो शुरू हुई थी 5 नवंबर 1994 को, और एक यादगार मुकाम पर पहुँची 5 नवंबर 2024 को, जब मैंने International Logistics Industry में पूरे 30 साल पूरे कर लिए। सब कुछ आसान नहीं रहा, लेकिन इससे ज़्यादा Rewarding भी कुछ नहीं।

मैं जब 1994 में Allcargo Movers North Pvt. Ltd. (अब Allcargo Logistics Ltd.) में पहला Professional कदम रखता था, तो मेरे सामने थी कई चुनौतियाँ और सीखने की कई बातें। सबसे पहले मैं अपने First Employer & First Mentor Capt. Anil Mohindru को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे उस दिन पहला Job Offer दिया था। उन्होंने मुझ पर भरोसा किया, और इस विश्वास ने मेरे Career को Shape किया।

उसके बाद मेरी Growth में अहम भूमिका निभाई Mr. Shashi Kiran Shetty (Founder & Chairman, Allcargo Group)। उनके Mentorship के तहत मैंने सिखा कि Responsibility लेने पर Growth

मिलती है। Capt. Mohindru और Mr. Shetty ने जैसे ही मेरे अंदर का Potential देखा, उन्होंने मुझे काम सौंपा जो मेरे Comfort Zone से बाहर था, और आज वही Experiences मुझे और मजबूत बनाते हैं।

Capt. Mohindru और Mr. Shetty का मुझ पर विश्वास ही उस Journey की शुरुआत थी, जिसने मेरा पूरा Career और ज़िंदगी आकार दी। उनके दिए हुए मौके और Early Guidance ने एक ऐसी नींव रखी, जो आज भी मेरी Professional Life का आधार है। मैं तहेदिल से उनका धन्यवाद करता हूँ, उनके Mentorship, Support और Trust के लिए। और, मेरे साथ इस Journey में कदम से कदम मिलाकर चलने वाले एक और ख़ास इंसान, Mr. Kuldeep Sharma हैं, जो मेरे लिए सिर्फ़ Colleague नहीं, एक भाई और सच्चे दोस्त हैं। उनका साथ, उनके साथ की गई Teamwork, और उनका Support मेरे लिए Priceless है। हमारी Shared Goals को Achieve करने में उन्होंने जो योगदान दिया है, वो मैं कभी नहीं भूल सकता।

मेरे इस 30 साल की यात्रा में, मैं उन Amazing Colleagues और Subordinates को भी एक बार फिर से श्रेय देना चाहता हूँ, जिनके साथ Teamwork, Collaboration, और Mutual Support ने हमारे Goals को हासिल करने में अहम भूमिका निभाई।

जब मैं Logistics से दूर होता हूँ, तो मेरी Energy Recharge होती है हिमाचल के Mountains में Trekking और Meditating करके, खासकर Dhauladhar और Pir Panjal Ranges में। सड़क से दूर

Remote Villages की Simplicity, शांति, प्राकृतिक सौंदर्य, यह सब मेरे दिल और दिमाग को नया Perspective देता है। Trekking का Physical Challenge और Meditation का Mental Clarity Combination मुझे बेहद Refreshing लगता है।

मेरी इस Journey में शायद कोई कभी Perfect नहीं होता, लेकिन प्यार, Passion, Mentorship, Innovation, Teamwork और Nature से Recharge, इस यात्रा को ख़ास बनाते हैं।

मेरी यात्रा ने मुझे सिखाया कि जुल्फ़ों की ख़ुशबू की तरह रहो, अपनी पहचान चाहे नाम से न हो, न पता चले, लेकिन तुम्हारे Efforts, Sincerity और Values से हर कोई तुम्हें महसूस कर सके। एक Legacy बनाओ, न कि सिर्फ़ Success Story। मैं उम्मीद करता हूँ कि ये Write-up सबको Inspire करे, सीखने के लिए खुला रहो, दूसरों के साथ सहयोग करो, और अपनी Originality को कभी मत छोड़ो। क्योंकि जब भी हम कुछ नया सीखते हैं, कोई Challenge जीतते हैं, या अपने Inner Peace को Connect करते हैं, तब हम असली ज़िंदगी जीते हैं, Professionally & Personally।

यह सिर्फ़ 30 साल की एक Journey नहीं थी, यह एक Legacy है, जो आगे भी चलते रहने वाली है...उसी जोश और Passion के साथ, जो पहले दिन था।

☕ Costa Coffee की कहानी - एक देसी आत्मा की विदेशी ठोकरें 😂💸

एक बार की बात है...मैं अपने सपनों के दफ्तर (जो ज़्यादा बड़े सपने नहीं थे) में कुर्सी पे विराजमान था। घड़ी टिक-टिक कर रही थी, पर मेरा मन काम में नहीं, बल्कि छुट्टी में था😥। तभी📱फोन आया...दूसरी तरफ़ था मेरा बचपन का Friend, जिगरी यार, जो अचानक बोला, "भाई, तेरे दफ्तर के पास से गुजर रहा हूं, फुर्सत हो तो टपक जाऊं?"

अब बचपन वाला दोस्त हो और बोले मिलने आ रहा हूं, तो कौन मना करता है? मैंने तुरंत कहा, "आजा भाई, दिल से WELCOME है"❤️।

अब जनाब आ पहुंचे...मैंने भी पूरी "अतिथि देवो: भव:" की भावना से स्वागत किया, पानी, हालचाल पूछे...फिर आदतन पूछ लिया, "भाई चाय लेंगे या कोई ठंडा-वंडा"☕🥤?

अब बंदा बोला, "भाई चल, Costa Coffee चलते हैं, पास में ही है, वहां बैठ के तसल्ली से गप्पे मारते हैं"😎। मेरे चेहरे पे एकदम से Error 404: Expression Not Found टाइप लुक आ गया। क्योंकि सुनने में तो Costa Coffee का नाम कई बार आया था, पर जाना कभी नहीं हुआ था। मतलब हम तो टपरी वाली ₹10 की कड़क चाय के भक्त लोग हैं, ये Costa-Vosta तो अंग्रेज़ों की भौजाई लगती थी हमें😬।

ख़ैर, दोस्त का मान रखने को चल दिए। अंदर घुसे, माहौल ही अलग था। AC ऐसा की शिमला की यादें ताज़ा हो जाएं, और लोगों की शक्लें वैसी

जैसे LinkedIn की प्रोफाइल फोटो खींचवा के बैठे हों🤓👩‍💼। अब पहुंच गए काउंटर पे...मित्र बोला, "क्या लेगा?" मैंने तपाक से कहा, "भाई तू जो ले रहा है वही दो ले ले, मुझे तो ये Menu Card किसी शास्त्र जैसा लग रहा है, जिसे पढ़ने के लिए Google Translate + Oxford Dictionary + बाबा रामदेव तीनों चाहिए"📖🧐📚। भाई ने Order दिया, "Two Cappuccino with Vanilla Shot"😮! मैंने सोचा, वाह! कितना Fancy नाम है... ज़रूर स्वाद भी सात जनमों की मिठास जैसा होगा🍦☕✨।

अब जब पैसे देने की बारी आई, तो मित्र जेब में हाथ डालने लगा...मैंने तुरंत उसका हाथ पकड़ लिया, जैसे बच्चा चाकू उठाने लगे! बोला, "क्या कर रहा है यार, तू मेहमान है, हम मेज़बान हैं। पैसा देना तो हमारी देसी शान है"💪😌। निकाल लिया मैंने ₹1000 का पुराना गांधी वाला नोट (ये 2016 से पहले की बात है, ध्यान देना🐅)...काउंटर पे दिया...भाईसाहब ने बड़े प्रेम से ₹20 लौटाए😶! मैं तो इंतज़ार कर रहा था, ₹500 का नोट, या कम से कम एक फूल तो देगा। लेकिन उसने मुस्कुराते हुए कहा, "Ho Gaya Sir, Table pe le Aata Hoon"। 😵मेरे तो आंखों में अंधेरा छा गया! ₹980 की दो कॉफी!!!

अब मन में बवंडर चल रहा था, ₹490 की एक कॉफी?? मतलब ये तो वही बात हो गई, गाड़ी तो नहीं ली, पर EMI जैसी Feeling आ गई😑। मैंने तुरंत दिमाग में प्लानिंग शुरू कर दी, आज रात बीवी को बोल दूंगा की "लंच बहुत हेवी खा लिया था बेबी, डिनर स्किप कर रहा हूं"□।
थोड़ी देर में Table पे Coffee आ गई...और मेरा Reaction ऐसा था जैसे कोई WhatsApp पे वीडियो भेज दे और खुल जाए PornHub😳। लंबा

सा कांच का गिलास...उसमें नीचे काली कड़वी कॉफी के Just दो घूंट...ऊपर एक छोटा सा Ice Cream का स्कूप...मतलब अगर Thirsty Crow की कहानी का रीमिक्स बनाना हो, तो यही गिलास दे दो🐦□! मैं तो सोचने लगा, इसमें कंकड़ डाल के कॉफी ऊपर लाऊं या अपने आंसुओं से गिलास भरूं?

काफ़ी देर मैं गिलास निहारता रहा...समझ नहीं आ रहा था…खाऊं? पिऊं? चाटूं? चम्मच मारूं या गिलास तोड़ दूं🥴🤯? और तले तक तो वैसे भी नहीं जा सकते, संस्कारी इंग्लिश कल्चर में ऐसा करना Uncool होता है। भाई, जो कॉफी Already तले में बैठ गई हो, उसका क्या करें?? डूब मरे क्या😩? खैर...दिल पे पत्थर रख कर, और जेब पे बैंडेज चिपका कर, जैसे-तैसे वो Art Attack जैसी कॉफी खत्म की।

तभी मित्र ने पूछा, "How was that"? और मेरे मुंह से मजबूरी में निकला, "Fantastic Bro"😑👍! (दिल बोले, बवासीर हुआ है, पर बोलना पड़ेगा “बिलकुल बढ़िया!)

उस दिन के बाद...मैंने कसम खा ली, ना पीऊंगा ऐसी कॉफी, ना ले जाऊंगा किसी को Costa Coffee, ना ही Costa Coffee के सामने से निकलूंगा बिना “जय श्री राम” बोले😂! क्योंकि हम हैं टपरी के भक्त, ₹10 चाय का Cutting ही हमारा King Size Life है...और ₹490 की कॉफी??? भाई, इतने में तो राशन आ जाए🛍️□!

Moral of the Story - अगली बार जब कोई कहे "Costa Coffee चलें?", तो झट से बोलना, "ना भाई, तू Cost-A कर, मैं टपरी पे Happy Hour Enjoy करता हूं"😌☕!

THE END - पर्स का भी...आत्मा का भी...और कॉफी पीने की ख्वाहिश का भी😵💫💸😅!

(*Content Credit: Mr. Lalit Sharma*)

"अब ज़रूरत है खुद से भी उतना ही प्यार करने की, जितना औरों के लिए टूटे हैं"...! 💔➡️💖🧘✨

कई बार सोचता हूँ...क्या वाकई हम जी रहे हैं, या बस निभा रहे हैं? निभा रहे हैं रिश्ते, जिम्मेदारियाँ, अपेक्षाएं, और सबसे ज़्यादा, दूसरों के लिए तय की गई उस 'आदर्श' छवि को। हम अपनी सबसे साधारण सी खुशी को भी टाल देते हैं, यह सोचकर कि कहीं हमारे किसी 'अपने' को बुरा न लग जाए, कहीं उन्हें तकलीफ़ न हो।

हर बार दिल ने कुछ चाहा, तो हमने पहले अपने आसपास के लोगों के बारे में सोचा...

- "क्या वो सहमत होंगे?"
- "क्या उन्हें अच्छा लगेगा?"

- “क्या वो मेरे लिए उतना ही सोचते हैं जितना मैं उनके लिए?”

और जब दिल ने धीरे से फुसफुसाया कि शायद नहीं...तो हमने उस आवाज़ को भी चुप करा दिया।

लेकिन उम्र के साथ एक बात और गहराई से समझ में आने लगी है...कि यह जीवन स्थायी नहीं है, और सबसे ज़्यादा दुर्लभ चीज़ है भीतर की शांति और अपनी आत्मा से सच्चा संवाद।

अब जब थोड़ी समझदारी और थोड़ा धैर्य हमारे अनुभवों में जुड़ गया है, तो यह एहसास और भी पक्का होता जा रहा है कि हम दूसरों के लिए तब तक संपूर्ण नहीं हो सकते, जब तक हम खुद के लिए अधूरे हैं। हमने अपने लिए 'ठीक है, बाद में सोचूंगा', 'इसका मन रखने के लिए अभी छोड़ देता हूँ', 'इस बार फिर चुप रह जाता हूँ'...ऐसे अनगिनत समझौते किए।

लेकिन क्या वे जिनके लिए हम ये करते हैं, वे हमारे लिए कभी उतना रुकते हैं? क्या उन्होंने कभी हमारी नज़र में झांक कर यह पूछा है..."तुम खुश तो हो न?"

सच कहूँ तो बहुत बार ऐसा लगता है कि हम जिनके लिए सबसे ज़्यादा टूटे, वही हमें सबसे ज़्यादा नज़रअंदाज़ कर गए। न उनकी कोई हमारे प्रति सच्ची फिक्र रही, न कोई एहसास। हमारे त्याग, हमारी चिंताएं...सब जैसे उनके लिए स्वाभाविक थीं, जैसे उनका अधिकार हो हमारे रिश्ते के प्रति। जो रिश्तेदार हमारे रिश्तों को अहमियत न दें, उनके समक्ष अब

समय है खुद को प्राथमिकता देने का, मेरे को लगता है। अब समय है अपने मन की आवाज़ को फिर से सुनने और मान देने का।

क्योंकि जो लोग हमें हमारी थकावट में भी और थका दें, वो हमारे अपने नहीं, बस आदत बन चुके होते हैं🧠💔। और हर आदत अच्छी नहीं होती। अब ज़रूरत है उन रिश्तों को छांटने की, जो केवल हमारी ऊर्जा सोखते हैं। अपने भीतर की शांति को बचाना भी एक संघर्ष है, और यही संघर्ष सबसे जरूरी है 🌱🛡️। हमें वो लोगों को पकड़ कर रखने की ज़रूरत नहीं, जो खुद हर मोड़ पर हमें छोड़ने को तैयार बैठे हैं...🙅⛓️।

हम अपनों से प्रेम करते रहें, उनका सम्मान करें, उनका साथ निभाएं, पर इस शर्त पर नहीं कि उसमें हमारी आत्मा दम तोड़ दे। अब समय है संतुलन का, जहाँ हम अपने भीतर के बच्चे को भी फिर से जीने दें, जहाँ अपनी खुशी पर अपराधबोध नहीं हो, जहाँ अपने आँसुओं का बोझ भी हम खुद समझें और उनका सम्मान करें।

क्योंकि अंततः, हम अपने जीवन के भी ज़िम्मेदार हैं। और किसी के प्रति हमारा सच्चा प्रेम तभी पूर्ण होगा, जब हम खुद से बेइंतिहा प्रेम करना सीख जाएं।

💈"जहाँ बाल नहीं, किस्मत संवारी जाती थी" - मोहल्ले की नाई की दुकान ✂️▯

एक जमाना था साहब...बाल कटवाना सिर्फ़ ज़रूरत नहीं, संस्कार था। आज के स्टाइल सैलून में जहां बाल कटवाना एक 'इवेंट' बन गया है, वहीं पहले बाल कटवाना एक महान अनुभव हुआ करता था, ऐसा अनुभव जो मुफ़्त में कंधों का मसाज, गप्पों का ज्ञान और 2 घंटे की Socio-Political ट्रेनिंग भी दे जाता था😌💬📚।

🧴बीयर की बोतल में पिचकारी, और वो ठंडा पानी 😅💦

उस बीयर जैसी पुरानी बोतल को देख के कोई भी कह सकता था, "अबे ये क्या है?" लेकिन जब नाई साहब उसके नॉज़ल से एक झन्नाटेदार फव्वारा आपके सिर पर मारते थे…तो गर्मी में लगता था स्वर्ग की वर्षा हो गई ☁️💧, और सर्दियों में ऐसा झटका लगता था कि रजाई याद आ जाती थी 🥶😫। कभी वो पानी धीरे-धीरे आता था, कभी अचानक ऐसा कि दिमाग में अलार्म बज जाए🧠🔔। बाल कटवाना नहीं, जैसे आइस बकेट चैलेंज का ट्रेलर चल रहा हो😂।

▯वो एक कंघी...जो पूरी मोहल्ले को स्टाइलिश बनाती थी 👨‍👩‍👧

एक ही कंघी। हां, Original OG स्टाइलिंग टूल, नाई की जेब में से बार-बार निकलती थी और पूरी कॉलोनी की हेयरस्टाइल सेट कर देती थी। शुरुआत होती थी सवाल से, "छोटे करने हैं या नॉर्मल?" अब इसमें भी एक क्लास डिवीजन था, "छोटे" मतलब किफायती क्लास (45 दिन बाल न बढ़ें, सैलून की शरण में न आना पड़े😅), "नॉर्मल" मतलब

Fashionable Class, जिसमें हम जैसे लोग आते थे जो स्कूल की क्लास में पीछे बैठने के बावजूद हेयर क्लास में अव्वल रहना चाहते थे😎💇‍♂️, और फिर था 'कटोरा कट' , जो हर उस बच्चे की नियति बनता था जिसका स्कूल प्रिंसिपल आर्मी से रिटायर्ड होता था, जैसे हमारे KV JNU के कर्नल चौहान थे। "बाल कान से दिखने नहीं चाहिए" । अरे भाई, बाल हैं! कोई Bandit Signal थोड़ी है😭😂।

📖दुकान नहीं, लाइब्रेरी थी वो - देसी Netflix!

उन दुकानों का साइज चाहे 15'x10' का हो, पर वहां मौजूद ज्ञान और कहानियों का आकार Galaxy Size का था🌌। वेटिंग लिस्ट लंबी होती थी, पर टाइम पास के जुगाड़ भी थे। पुरानी फिल्मी मैगज़ीने (पढ़ते-पढ़ते धर्मेन्द्र और रेखा हमारे सपनों में आने लगते थे😍🎬), नवभारत टाइम्स, पंजाब केसरी, हिंदुस्तान जैसे अख़बार (राजनीति, अपराध, राशिफल सब एक साथ)📎🕵️ और साथ में चाय वाले चमन की दुकान से आई एक कटिंग चाय☕, 2 घंटे का इंतज़ार होता था…लेकिन निकलते थे प्रोफेसर बनकर। और अगर आपकी बारी आती ही नहीं थी, तो शंभू हलवाई से समोसा खाकर दिल को बहलाना होता था😋🧆।

🪒उस्तरे और टेलकम पाउडर वाला Ritual - No Fear, Only Flair 🔥

उस्तरे को चमड़े की पट्टी पर घिसना एक पारंपरिक युद्ध-घोषणा जैसा लगता था, जैसे नाई अब तैयार है, बालों के विद्रोह को खत्म करने के लिए😤🪒। एक ही उस्तरा, एक ही कंघी, एक ही कपड़ा…लेकिन कभी किसी को इंफेक्शन नहीं हुआ। HIV, बैक्टीरिया, वायरस, ये सब

ज्ञान का विषय नहीं थे···विश्वास का विषय थे🙏🧷। और फिर आता था टेलकम पाउडर का Masterstroke। झन्नाटेदार ढंग से गर्दन पर पटखनी दी जाती थी, इतना स्टाइलिश कि WWE वाले भी सीखें🤼😆 धप्प। गर्दन से पाउडर फूटता था जैसे इत्र की फाउंटेन😌🧴।

👴एक दुकान...तीन पीढ़ियों का हेयर हिस्ट्री सेंटर!

इस दुकान ने बाल नहीं काटे, वंशों की कहानी लिखी है। हाँ, वो लकड़ी का फट्टा, कुर्सी के दोनों हैंडल पर रखा जाता था, और उस पर मुन्ना ऐसे बिठाया जाता था जैसे उसे राजगद्दी मिल गई हो👑😂। जिस दिन मुन्ना फट्टे से नीचे उतरता था, उसे लगता था अब तो बंदा जवान हो गया है💪□।

💸और कीमत? इतनी कम कि शर्म आ जाए ATM कार्ड को 😅

₹5 में बाल, Style और समाज सेवा तीनों मिलते थे। अब? "Sorry Sir, आपको पहले Appointment लेना होगा।" , "कौन सा Cut चाहिए?", "Pre-Cut Discussion कब रखें?" "Stylist आपके हेयर फॉल पैटर्न को Alalyze करेगा।" By God! अब बाल कटवाने से पहले ऐसा लगता है जैसे MRI स्कैन करवाने जा रहे हैं🤯💻।

💼आज के 'सैलून' - जहाँ बाल नहीं, टाइम और पैसा कटता है ⏳💳

अब ₹2500+ देकर मिलता है, Pre-wash, Post-wash, Blow-dry, Scissor Therapy, और एक Head massage जो इतने धीमे से होता है कि नींद नहीं, खीझ आ जाती है😪😤। Ultra Violet Sterilization

Box में Instruments ऐसे रखे जाते हैं जैसे Coronavirus वहीं से निकल आया हो😓🧼, और ऊपर से, "आपका टाइम स्लॉट मिस हो गया है सर, आपको फिर से बुक करना होगा!" बाल कटवाने का नहीं, एयरलाइंस का टिकट मिस कर दिया क्या😩✈️?!

🧠**हम शहरियों ने "Class" के नाम पर Simple चीज़ों का ड्रामा बना डाला!**

बाल काटना एक कला थी, अब वो एक कॉर्पोरेट सेवा बन चुकी है😒। जबकि आज भी देश की 80% आबादी देहात में उसी पुराने नाई के पास जाती है, जहाँ न Appointment है, न Extra Charge, और न ही कोई Instagram Reel ज़रूरी है📵📷। बस 100 रुपए दो, 100% संतुष्टि लो💯✨।

😎**और मैं?**

मैं आज भी उसी तरह की पुरानी दुकान पर जाता हूं। वो सफेद कपड़ा, छोटे बच्चों के लिए वही फट्टा, वही टेलकम की थपकी, वही फव्वारा...और साथ में बाल कटवाने के बाद एक चाय, नाई से थोड़ी राजनीति, और थोड़ी दुनिया की खबरें☕📎 । ₹100 में बाल भी कट जाते हैं, और दुनिया का बोझ भी हल्का हो जाता है🌍🧠 ।

(*Content Credit: Mr. Lalit Sharma*)

तकनीकीकरण के निरन्तर विकास के कारण विलुप्त होती पुरानी जीवन शैली: घराट (पनचक्की) 🌊⚙️🏞️

कभी समय था जब पहाड़ी गांवों की पहचान घराट या पनचक्की (Water Mill) हुआ करती थी🏡⛰️। पहाड़ों से बहती नदियों या छोटी धाराओं के किनारे बने ये घराट न सिर्फ आटा पीसने का साधन थे, बल्कि एक सांस्कृतिक केन्द्र भी थे👵। वहां लोग सिर्फ अनाज पिसवाने नहीं, बल्कि बातचीत, मेल-जोल और एक सामाजिक बंधन की अनुभूति के लिए भी जाया करते थे🤝💬। यह ग्रामीण जीवन का एक अहम हिस्सा था, एक ऐसी तकनीक जो प्रकृति की शक्ति 'जल' का उपयोग कर भोजन की नींव तैयार करती थी। 💧⚙️🌾

घराट में पिसा हुआ आटा कुछ अलग ही होता था🌟। वहाँ पर कोई मशीनरी की गर्मी नहीं होती थी, जिससे अनाज के पोषक तत्व बरकरार रहते थे 🧬🍃। धीरे-धीरे घूमती घराट की चक्की अनाज को बिना ज़्यादा रगड़े पीसती थी, जिससे आटे का Texture मुलायम, खुशबूदार और एकदम Authentic होती था😍। जब उस आटे से बनी गेहूं की रोटी या मक्की की रोटी तवे पर सिंकती थी, तो जो सुगंध उठती थी, वो किसी Five Star Restaurant 🍽️ के खाने को भी मात दे देती थी। 🌽🔥□

आज जब हम मशीनी आटे का प्रयोग करते हैं, तो रोटी भले ही दिखने में सुंदर लगे, पर वो स्वाद, वो मिठास और वो सोंधापन नहीं होता जो घराट के आटे में था😕❌। मक्की की रोटी खासकर सर्दियों में जब घी

लगाकर सरसों के साग के साथ खाई जाती थी, तो शरीर में गर्मी भी देती थी और आत्मा तक को तृप्त कर देती थी। ❄️🧈🌿

तकनीकीकरण ने जहाँ हमें समय की बचत दी⏱️, वहीं उसने हमारी पारंपरिक जीवनशैली को धीरे-धीरे निगल भी लिया😔। बिजली से चलने वाले आटा चक्कियों और Packaged आटा Brands ने घराट को एक Relic बना दिया है। अब गांवों में भी मुश्किल से कोई घराट दिखाई देता है👀। लोग Convenience के पीछे दौड़ते हुए उस Natural Lifestyle से दूर होते जा रहे हैं जो कभी उनकी सेहत और संस्कृति दोनों की रक्षा करता था। 🏃🍂

ये सच है कि Machines ने हमारे काम को आसान बना दिया है, पर इसका नुकसान भी हमने झेला है, खासकर सेहत और सामाजिक जुड़ाव के स्तर पर😟💔। घराट सिर्फ आटा पीसने की जगह नहीं थी, वो एक Ecosystem था जहाँ लोग अपने जीवन के किस्से, दुःख-सुख बाँटते थे📚👵। Elderly लोगों के लिए वो एक Gathering Spot होता था, A Place of Stories, Connection and Tradition। 👨‍👩‍👦✨

मुझे आज भी याद है कि मेरे ननिहाल मुबारिकपुर में हमारे घर से 3.5 Kms. दूर एक दिन लगभग 25 Kgs. गेहूँ या मक्की घराट छोड़ने जाना पड़ता था, और अगले दिन पिसा आटा लेने जाना पड़ता था🚶, और, ये नियम महीने में दो बार होता था, एक बार गेहूं का आटा पिसवाने के लिए, और एक बार मक्की का आटा पिसवाने के लिए। इस काम की जिम्मेदारी

मेरी मम्मी के चाचाजी की होती थी👵। घराट का मालिक पिसाई के बदले 1.5 Kg. आटा ले लेता था।

घराट में अनाज पीसने की प्रक्रिया अपने आप में एक Mindful Experience थी🧘। अनाज🌾 🌽 को साफ करना, फिर उसे चक्की में डालना और फिर धीरे-धीरे उसका ताज़ा आटा पीसकर निकालना, ये सब कुछ इस तरह होता था मानो प्रकृति से सीधा उपहार मिल रहा हो🎁। उस आटे से चुल्हे पर बनी रोटी जब गाय के घी से चुपड़ी जाती थी या घर के बने मक्खन खाई जाती थी, तब सच्चे अर्थों में भोजन "प्रसाद" बन जाता था। □🙏

आज ज़रूरत है कि हम इस विलुप्त होती परंपरा को केवल यादों में सहेजकर न रखें, बल्कि उसमें से कुछ प्रेरणा लेकर अपनी दिनचर्या में वापस लाएँ🔁। अगर हम पूरी तरह से घराट वापस नहीं ला सकते, तो कम से कम Stone Ground Flour (Slow Grinding Method) को अपना सकते हैं🌾🌽□। Organic Living और Mindful Eating की बात करने वाले आज भी घराट के सिद्धांतों को Follow कर सकते हैं, Sustainability, Tradition और Nourishment की मिसाल के रूप में। 🌎♻️🍽️

घराट हमारे अतीत की एक शांत, सौम्य और सशक्त धरोहर है, जो हमें याद दिलाता है कि Slow Living Life कभी हमारी ताक़त थी, न कि कमजोरी। 🌿🕊️💪

ज़िंदगी काटना नहीं, ज़िंदगी जीनी आनी चाहिए! 😄
(ये Write-up मेरे नज़रिए से मैनें लिखा है, आपके ज़िंदगी जीने के नज़रिये के उपर प्रश्नचिन्ह लगाना मेरा बिलकुल भी मकसद नहीं है)

ज़िंदगी कोई बोझ नहीं है जिसे ढोना पड़े, ये तो एक Celebration है जिसे खुलकर जीना चाहिए। बहुत लोग सोचते हैं कि बस सुबह उठे, ऑफिस गए, खाने के वक्त खाना खाया और फिर सो गए, बस कट गया दिन। लेकिन भई, ये "दिन काटना" नहीं है, ये तो अपनी Life को Waste करना है। ज़िंदगी वो होनी चाहिए जिसे हम हर सुबह Excitement से शुरू करें और हर रात एक मुस्कान के साथ खत्म करें। 😇

हमारी ज़िंदगी में ऐसा बहुत कुछ होना चाहिए जो Memorable हो। वो बचपन की गलियों में दौड़ते हुए खेलना, भरपूर शरारतें करना, स्कूल में टिफ़िन चुराना, और दोस्तों के साथ वो बिना बात के घंटों हँसना, यही तो असली ज़िंदगी है। ये छोटी-छोटी बातें ही बाद में Golden Memories बनती हैं, जो बुढ़ापे में टपरी वाली चाय की चुस्कियों के साथ याद करके मुस्कुराया जा सके। ☕🙂

Life को Seriously लेना बहुत अच्छा है, लेकिन Over Serious बन जाना भी खतरे की घंटी है😅। थोड़ी मस्ती, थोड़ी बेवकूफियाँ और ढेर सारी हँसी, ये भी ज़रूरी है ज़िंदगी में। आखिरकार, ज़िंदगी में काम को Tata Bye Bye करने के बाद कौन याद रखना चाहता है कि उसने कितने Excel Sheets भरे थे, कितने Target Achieve किये थे😳? असली बात तो ये है कि कितनी बार हँसी आई, कितनी बार दोस्तों के साथ दिल

से बातें हुईं, और कितनी बार हम पूरी रात जाग कर Future के सपने बुनते रहे।

हर Stage of Life को, हर.छोटे से छोटे पल को खुलकर जीना चाहिए। स्कूल की दोस्ती, कॉलेज की मस्ती, और Job की जिम्मेदारियों में भी थोड़ा Fun ढूँढना आना चाहिए, मस्ती करनी आनी चाहिए। वरना क्या फायदा उस नौकरी का जो हमें Weekend का इंतज़ार करवाए और Monday को सिरदर्द बना दे😬? Life should be full of LOL moments, where we laugh till our stomach hurts😂! मैं "Good Sense of Humour" को किसी भी व्यक्ति की Best Quality मानता हूँ, बाकी की Qualities से पहले।

ज़िंदगी में ऐसे रिश्ते कमाने चाहिए जो वक्त के साथ और गहरे हों। न कि ऐसे लोग जो बस Social Media पे "HBD" लिखकर फर्ज निभा लें। वो रिश्ते जो हर Festival पे याद करें और खुशियों में बिना बुलाए चले आएँ, वही हमारे Earn किये हुए असली Assets होते हैं❤️ I School Friends, College के और Neighbourhood के यार और Office वाले चाय Partners, सबको संभालकर रखना चाहिए।

मेरा मानना है कि बुढ़ापा तब Beautiful लगता है, जब आपके पास बताने को हज़ारों कहानियाँ हों, बचपन की शरारतों से लेकर ऑफिस की Fun Moments तक। जब आप अपने पोते-पोतियों को कह सकें, "बेटा, हम भी कुछ कम नहीं थे"😉। और जब खुद अकेले बैठकर वो सब याद करें, तो चेहरा अपने आप खिल उठे, मधुमुस्कान आ जाए चेहरे पर।

कुल मिलाकर बोलें तो, ज़िंदगी को बस काटो मत, इसे दिल खोल के जियो, हर पल जियो, Live Life, King Size जैसे👑। मज़ा तभी है जब हर दिन एक नई कहानी लेकर आए, जब हर शाम को याद करने लायक बनाया जाए। क्योंकि आखिरकार, ज़िंदगी का मतलब है, जीना, हँसना, प्यार करना और यादों का खज़ाना बनाना👍🏻😊🙏🏻।

🤣 हँसो & Make Others Laugh! 🤣

😂 खुश रहो & Make Others Happy! 😂

👍🏻 ज़िंदगी जियो, King Size! 👍🏻

🔱 ॐ नमः शिवायः! Har Har Mahadev! 🔱

🇮🇳 जय भारत! Jai Hind! 🇮🇳

About the Author

तरुन Sharma, an Bonafide Himachali, the author of **"टपरी to Tranquility"** is not a professional writer by trade, but a passionate storyteller by heart, someone who has lived a life full of rich experiences, quiet observations, and soulful reflections. Born in an era when simplicity wasn't a choice but a way of life, he grew up in a socio-economically low yet humble & god-fearing family, amid the scent of wet earth, the warmth of close-knit families, the rhythm of radio tunes, and the ever-inviting charm of a humble **"टपरी"**, where every cup of **"चाय"** (Tea) told a story.

Educated at **Kendriya Vidyalaya, JNU, New Delhi**, his life journey has been deeply shaped by the values of honesty, hard work, relationships, and a relentless curiosity about the world around him. A seasoned professional with over **30 years of experience in the International Logistics Industry**, he is known among peers not just for his work ethic but for his ability to connect deeply with people, often through humour, empathy, or a story from the past.

Writing, for him, was never a goal, it was a calling that slowly took shape through memories, moments, and musings shared over the years. Encouraged by friends, customers, and loved ones who saw something special in his reflections, he decided to put pen to paper, not to impress, but to express.

This debut book is a tribute to the **madness of childhood**, the **magic of youth**, the **music of memory**, and the **meaning of mountains**. It is a walk-through time, with laughter, loss, learning, and light as companions.

A deeply **family & relationship oriented soul**, he draws strength and inspiration from his **parents, grandparents, wife, children, siblings, relatives, dear friends and employers**, who have been the emotional & professional compass of his life. He considers relationships & sense of humour to be the true wealth of life and cherishes them above all.

While he remains grounded in his professional commitments and personal responsibilities, his heart quite often wanders, to the mountains, to magical & musical water streams, to a quiet sunset, or to a ever active corner of his mind, where a story waits to be told. Whether or not he writes another book, this one will always remain a piece of his soul, shared with the world by none other than **Mr. Amit Kasaria**, his childhood buddy, a Producer and Director in the Bollywood film industry.

"टपरी to Tranquility" are not just his stories, they could be yours, too.